राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

दिव्य दिनकर

एक निडर सच का दर्पण

रांची और पटना से एक साथ प्रकाशित

8

वर्ष 12 अकं :203 रांची (झारखंड)सोमवार,05 मई 2025 पेज - 08 मूल्य: 2 RNI NO- JHAHIN/2013/54373

बदरीनाथ के कपाट खुलने पर प्रधानमंत्री मोदी के नाम से हुई पहली महाभिषेक पूजा

एजेंसी

बदरीनाथ। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने बदरीनाथ के कपाट खुलने पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नाम से पहली महाभिषेक पूजा कर देश और राज्य की सुख समृद्धि की कामना की। इस मौके पर मुख्यमंत्री ने धाम में तीर्थयात्रीयों और श्रद्धालुओं का अभिवादन किया और तीर्थयात्रियों से यात्रा व्यवस्थाओं का फीडबैक भी लिया। मांगलिक स्वर लहरियों के बीच बदरीनाथ मंदिर के कपाट रविवार सुबह छह बजे रवि पुष्य लग्न में श्रद्धालुओं के लिए खोल दिए गए। सुबह लगभग 10 बजे भगवान बदरी विशाल का अभिषेक पूजा शुरू हुई। बद्री केदार मंदिर समिति और उत्तराखंड सरकार की ओर से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नाम से भगवान बदरीविशाल का प्रथम महा अभिषेक पूजा सम्पन्न हुई। मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर मंदिर परिसर में स्थित लक्ष्मी मंदिर, गणेश मंदिर, आदि गुरु शंकराचार्य गद्दी सहित सभी मंदिरों में पूजा अर्चना की। बदरीनाथ के कपाट खुलने के अवसर पर देश और दुनिया के लगभग 15 हजार श्रद्धालु मौजूद रहे। उन्होंने कहा कि सकुशल चारधाम यात्रा और श्रद्धालुओं की सुविधाओं के दृष्टिगत बेहतर व्यवस्थाओं के लिए राज्य सरकार की ओर से हर स्तर पर प्रयास किया गया है। देवभूमि उत्तराखंड आने वाले सभी श्रद्धालुओं से अपील है कि वह हरित और स्वच्छ चारधाम यात्रा के

लिए राज्य को पूरा सहयोग दें। मुख्यमंत्री ने जिलाधिकारी चमोली संदीप तिवारी से बदरीनाथ धाम के मास्टर प्लान के कार्यों की विस्तृत जानकारी लेते हुए मंदिर के समीप हो रहे निर्माण कार्यों का जायजा भी लिया।

इस दौरान उन्होंने जिलाधिकारी को मास्टर प्लान के कार्यों को गुणवत्ता के साथ समय से पूर्ण करवाने के निर्देश दिए। साथ ही बदरीनाथ धाम में यात्रा व्यवस्थाओं पर संतोष व्यक्त करते हुए जिलाधिकारी व पुलिस अधीक्षक को यात्री सुविधा और सुरक्षा को लेकर पुख्ता इंतजाम करने को कहा मुख्यमंत्री ने जिलाधिकारी से श्रीहेमकुंड साहिब यात्रा तैयारियों की जानकारी लेते हुए यात्री सुविधाओं को शीघ्र व्यवस्थित करने के निर्देश दिए। उन्होंने गोविंदघाट में अलकनंदा नदी में निर्माणाधीन पुल के निर्माण कार्य की जानकारी ली। जिलाधिकारी को पुल के निर्माण कार्य का स्थलीय निरीक्षण कर यात्रा से पूर्व पुल का निर्माण गुणवत्ता के साथ पूर्ण करने के आदेश दिए। इस दौरान राज्य सभा सांसद और भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष महेंद्र भट्ट, ज्योतिषपीठ के शंकराचार्य अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती महाराज,विधायक लखपत बुट्टोला, बीकेटीसी के नवनियुक्त उपाध्यक्ष विजय कपरवाण व ऋषि प्रसाद सती, बीकेटीसी मुख्य कार्याधिकारी विजय थपलियाल, धर्माधिकारी राधाकृष्ण थपलियाल आदि मौजूद थे।

जमशेदपुर में मेडिकल कॉलेज का जर्जर छज्जा गिरने से तीन की मौत, प्रबंधन और सरकार पर उठे सवाल

एजेंसी

जमशेदपुर। जमशेदपुर स्थित महात्मा गांधी मेमोरियल मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल में मेडिसिन डिपार्टमेंट के कॉरिडोर का छज्जा गिरने से घायल तीन मरीजों की मौत हो गई, जबकि एक अन्य की हालत गंभीर बनी हुई है। यह हादसा शाम करीब चार बजे हुआ था। एनडीआरएफ की मदद से मलबे में दबे लोगों को निकालने का काम रात एक बजे तक चलता रहा। झारखंड सरकार ने हादसे की जांच के लिए तीन सदस्यीय कमेटी गठित की है। मृतकों के परिजनों को पांच-पांच लाख रुपए के मुआवजे और घायलों को 50-50 हजार की सहायता राशि देने का ऐलान किया गया है। हादसे में मरने वालों की पहचान साकची निवासी 73 वर्षीय डेविड जॉनसन, 61 वर्षीय लुकास साइमन तिर्की और सरायकेला निवासी 65 वर्षीय श्रीचंद तांती के रूप में हुई है। जिन दो लोगों का रेस्क्यू किया गया है, उनमें रेणुका देवी और सुनील कुमार शामिल हैं। इनमें रेणुका देवी की हालत गंभीर बताई जा रही है। बताया गया कि हॉस्पिटल के तीसरे तल्ले पर स्थित मेडिसिन वार्ड का जर्जर छज्जा अचानक ढह गया। तेज आवाज के साथ मलबा बिखरा तो वार्ड में कोहराम मच गया। वहां मौजूद लोग इधर-उधर भागने लगे। वार्ड के बरामदे में सोए पांच लोग मलबे में दब गए। करीब आधे घंटे बाद पुलिस और फायर ब्रिगेड की टीम पहुंचने के बाद मलबे में दबे लोगों को निकालने का काम शुरू हो पाया। दो लोगों के शव रात करीब नौ बजे निकाले गए, जबकि तीसरे मृतक का शव रात एक बजे एनडीआरएफ की मदद से निकाला जा सका।

जम्मू-कश्मीर में पाकिस्तान ने फिर किया संघर्ष विराम का उल्लंघन, सेना ने की जवाबी कार्रवाई

जम्मू। पाकिस्तानी सेना ने जम्मू-कश्मीर के विभिन्न हिस्सों में नियंत्रण रेखा (एलओसी) पर छोटे हथियारों से गोलीबारी कर संघर्ष विराम का उल्लंघन जारी रखा है। रक्षा प्रवक्ता ने रविवार को यहां कहा कि 3-4 मई की रात को पाकिस्तानी सेना की चौकियों ने जम्मू-कश्मीर के कुपवाड़ा, बारामूला, पुंछ, राजौरी, मेंढर, नौशेरा, सुंदरबनी और अखनूर के समीपवर्ती इलाकों में नियंत्रण रेखा के पार बिना उकसावे के छोटे हथियारों से गोलीबारी की। उन्होंने कहा कि भारतीय सेना ने त्वरित एवं उचित जवाब दिया।उल्लेखनीय है कि 22 अप्रैल अप्रैल को पहलगाम आतंकी हमले के बाद भारत और पाकिस्तान के बीच सीमा पर तनाव बढ़ गया।

मोदी से मिले एयर चीफ मार्शल ए पी सिंह

नई दिल्ली। पहलगाम आतंकवादी हमले के बाद भारत और पाकिस्तान की सीमाओं पर बढ़ते तनाव के बीच वायु सेना प्रमुख एयर चीफ मार्शल ए पी सिंह ने रविवार को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से मुलाकात की। नौसेना प्रमुख एडमिरल दिनेश त्रिपाठी की कल प्रधानमंत्री के साथ मुलाकात के बाद एयर चीफ मार्शल सिंह की श्री मोदी के साथ मुलाकात को महत्वपूर्ण माना जा रहा है। वायु सेना प्रमुख और प्रधानमंत्री की मुलाकात के दौरान क्या बातचीत हुई इस बारे में आधिकारिक रूप से कोई जानकारी नहीं दी गई है। हालांकि, यह माना जा रहा है कि एयर चीफ मार्शल ने प्रधानमंत्री को वायु सेना की तैयारी और रणनीति के बारे में जानकारी दी है।उल्लेखनीय है कि प्रधानमंत्री पहलगाम आतंकवादी के हमले के बाद से ही समूचे रक्षा तंत्र और सुरक्षा एजेंसियों तथा सरकार में अपने शीर्ष सहयोगियों के साथ निरंतर बैठक कर रहे हैं। श्री मोदी ने अंगोला के राष्ट्रपति के साथ मुलाकात के बाद कल एक बार फिर मीडिया के सामने दोहराया कि पहलगाम में आतंकवादी हमले को अंजाम देने वालों और उनका समर्थन करने वालों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी। बाइस अप्रैल को हुए इस आतंकवादी हमले में आतंकवादियों ने 26 लोगों की निर्ममता से हत्या कर दी थी।

तिरुपतिः कोडंडाराम स्वामी मंदिर में रंगारंग पुष्प यज्ञ का आयोजन

तिरुपति। आंध्र प्रदेश में श्री कोडंडाराम स्वामी मंदिर में पुष्पयाग महोत्सव का भव्य आयोजन किया गया। इस महोत्सव के तहत, दिन में पहले कोडंडाराम स्वामी के साथ श्री सीता देवी और लक्ष्मण स्वामी का स्नेपना तिरुमंजनम किया गया। बाद में शाम 4 बजे से 6 बजे तक मंदिर के उनजल मंडपम में पुजारियों द्वारा वैदिक मंत्रोच्चार के बीच पुष्पयाग का आयोजन किया गया। उत्सव देवताओं को कुल 3 टन फूल चढ़ाए गए, जिनमें 12 प्रकार के फूल और छह प्रकार के पत्ते शामिल थे। आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु और कर्नाटक राज्यों के दानदाताओं ने ये पारंपरिक और सजावटी फूल दान किए।इस पुष्प महोत्सव की भव्यता को देखकर श्रद्धालु मंत्रमुग्ध हो गए। पुष्पयागम को आमतौर पर पाप-मुक्त अनुष्ठान के रूप में मनाया जाता है।

पद्मश्री योग गुरु शिवानंद बाबा के निधन से दुखी, उनका जाना अपूरणीय क्षति : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी

योग के क्षेत्र में अप्रतिम योगदान देने वाले काशी के प्रख्यात योग गुरु 'पद्म श्री' स्वामी शिवानंद जी का निधन अत्यंत दुखद है: योगी

एजेंसी

वाराणसी। पद्मश्री से सम्मानित और योग साधना के प्रतीक शिवानंद बाबा ने रात लगभग 9 बजे बीएचयू अस्पताल में अंतिम सांस ली। उनके निधन पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी समेत कई अन्य नेताओं ने श्रद्धांजलि दी।

प्रधानमंत्री मोदी ने शिवानंद बाबा को श्रद्धांजलि देते हुए सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर (उनके साथ खींची गई एक तस्वीर के साथ) लिखा, योग साधक और काशी निवासी शिवानंद बाबा जी के निधन से अत्यंत दुख हुआ है। योग और साधना को समर्पित उनका जीवन देश की हर पीढ़ी को प्रेरित करता रहेगा। योग के जरिए समाज की सेवा के लिए उन्हें पद्मश्री से सम्मानित भी किया गया था। शिवानंद बाबा का शिवलोक प्रयाण हम सब काशीवासियों और उनसे प्रेरणा लेने वाले करोड़ों लोगों के लिए अपूरणीय क्षति है। मैं इस दुख की घड़ी में उन्हें श्रद्धांजलि देता हूं। सीएम योगी आदित्यनाथ ने शिवानंद बाबा को श्रद्धांजलि देते हुए एक्स पर लिखा, योग के क्षेत्र में अप्रतिम योगदान देने वाले काशी के प्रख्यात योग गुरु 'पद्म श्री' स्वामी शिवानंद जी का निधन अत्यंत दुखद है। उन्हें

विनम्र श्रद्धांजलि! आपकी साधना एवं योगमय जीवन संपूर्ण समाज के लिए महान प्रेरणा है। आपने अपना पूरा जीवन योग के विस्तार में समर्पित कर दिया। बाबा विश्वनाथ से प्रार्थना है कि दिवंगत पुण्यात्मा को सद्गति एवं उनके शोकाकुल अनुयायियों को यह अथाह दुख सहन करने की शक्ति प्रदान करें। ? शांति! भाजपा सांसद संबित पात्रा ने एक्स पर लिखा, योग साधक 'पद्मश्री' शिवानंद बाबा जी के निधन का समाचार अत्यंत दुखद है। योग और साधना को समर्पित उनका संपूर्ण जीवन हम सभी के लिए प्रेरणादायक है। बाबा विश्वनाथ से प्रार्थना है कि दिवंगत पुण्यात्मा को सद्गति एवं उनके शोकाकुल अनुयायियों को यह अथाह दुख सहन करने की शक्ति प्रदान करें। ? शांति! यूपी सरकार में मंत्री दयाशंकर मिश्र दयालु ने लिखा, काशी नगरी ने आज अपना एक अनमोल रत्न खो दिया। 129 वर्षीय योग गुरु, पद्मश्री सम्मानित स्वामी शिवानंद जी के निधन की खबर अत्यंत दुखद और भावुक कर देने वाली है। उनका जाना केवल एक संत का जाना नहीं है, बल्कि योग, संयम, सेवा और सादगी की एक जीवित परंपरा का अवसान है। बाबा शिवानंद जी का जीवन स्वयं में एक प्रेरणा था। उन्होंने बिना रोग के, बिना विलासिता के, और बिना किसी दिखावे के 129 वर्षों का संतुलित जीवन जिया। वे प्रतिदिन योग, प्राणायाम और ध्यान करते थे। उनका भोजन सात्विक, जीवन संयमित और विचार अत्यंत निर्मल थे।

मनोज तिवारी का राहुल गांधी पर निशाना, कहा- बताना पड़ेगा वह किस जाति से हैं

एजेंसी

नई दिल्ली। जाति-जनगणना को लेकर भाजपा सांसद मनोज तिवारी ने कांग्रेस सांसद राहुल गांधी पर जोरदार निशाना साधा। बुराड़ी में रविवार को उन्होंने कहा कि जाति-जनगणना होने दीजिए, राहुल गांधी को भी अपनी जाति के बारे में बताना होगा। इसके बाद सारा भेद ही खुल जाएगा। दिल्ली के साथ पूरी दुनिया को पता चल जाएगा कि वो किस जाति से हैं। न्यूज एजेंसी से बातचीत के दौरान मनोज तिवारी ने कहा कि राहुल गांधी सनातन और हिंदू विरोधी हैं, इसलिए वह हिन्दुओं के विरोध में बयान देते हैं। उनकी सनातन में आस्था नहीं है, वह सिर्फ ढोंग करते हैं। इतना ही नहीं, अब तो जातिगत जनगणना भी होनी है और राहुल गांधी की जाति भी सामने आ जाएगी कि वह कौन सी जाति से हैं। अमेरिका की ब्राउन यूनिवर्सिटी में राहुल गांधी की ओर से श्रीराम को काल्पनिक कहने पर मनोज तिवारी ने कहा कि राहुल गांधी को उनकी हिन्दू विरोधी सोच मुबारक। वह सनातन

विरोधी हैं और उन्हें हिन्दुओं से जलन होती है। हम जिस रास्ते पर चले हैं, उस रास्ते पर हम घर-घर तक रामचरितमानस पहुंचाएंगे। मनोज तिवारी ने कहा कि हम लोग बुराड़ी क्षेत्र में मानव सेवा शिक्षा संस्थान की ओर से हस्तिनापुर शिव महापुराण कथा कर रहे हैं। शिव और राम की भावना घर-घर पहुंचे, हर घर तक रामचरितमानस पहुंचाने का संकल्प लिया है। उन्होंने आगे कहा कि हम लोगों से अपील कर रहे हैं कि 21 मई से 27 मई तक बुराड़ी आएं और शिव महापुराण कार्यक्रम में शामिल होकर धन्य हो जाएं। बता दें कि जाति-जनगणना को लेकर हाल ही में केंद्र सरकार ने फैसला लिया कि देश में जाति-जनगणना कराई जाएगी। केंद्र सरकार के इस फैसले से देशभर में खुशी की लहर है। लेकिन, इंडी अलायंस में शामिल कांग्रेस-समाजवादी पार्टी सहित अन्य क्षेत्रीय पार्टियां इसे अपनी जीत बता रही हैं। क्रेडिट लेने की होड़ के बीच भाजपा के नेताओं का कहना है कि जब कांग्रेस का शासन देश में था, तब उन्हें जाति-जनगणना कराने की याद क्यों नहीं आई। जब विपक्ष में रहते हैं, तो जाति-जनगणना की बात करते हैं।

एनडीए घटक मानेंगे प्रधानमंत्री की बात, बिहार में फिर से बनेगी एनडीए सरकार : बीएल वर्मा

कांग्रेस नेता पाकिस्तान को रास आने वाले बयान देते है

एजेंसी

पटना। बिहार दौरे पर आये केंद्रीय राज्य मंत्री बीएल वर्मा ने मुख्यमंत्री फेस और नेतृत्व को लेकर बड़ा दावा किया है ।केंद्रीय उपभोक्ता, खाद्य एवं सार्वजनिक मामलों के राज्य मंत्री बीएल वर्मा ने रविवार को पटना में पत्रकारों से बात करते हुए आगामी विधानसभा चुनावों को लेकर बिहार में फिर से एनडीए सरकार बनने का दावा किया। इसके साथ ही उन्होंने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के फिर से सीएम बनने पर सीधा जवाब दिया। अपने बिहार दौरे में बीएल वर्मा मुजफ्फरपुर के सकरा में आंबेडकर सम्मान अभियान विचार गोष्ठी को संबोधित करेंगे। पटना एयरपोर्ट पर उन्होंने कांग्रेस, राजद नेता तेजस्वी यादव और महागठबंधन घटक दलों की होने वाली बैठक पर कहा कि इंडिया गठबंधन चाहे जितनी बैठक कर ले मोदी के नेतृत्व में बिहार में एनडीए

का परचम लहराएगा, जिस तरह से पूरे देश में प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में देश विकास की रफ्तार पर आगे बढ़ रहा है बिहार भी उसी रफ्तार पर आगे बढ़ेगा। एनडीए के घटक दलों में चिराग पासवान और जीतन राम मांझी की पार्टी के सीटों के डिमांड पर कहा कि चिराग पासवान तो प्रधानमंत्री मोदी का बहुत सम्मान करते हैं। मुझे लगता है पीएम मोदी के नेतृत्व में एनडीए में जो भी फैसला होगा वह स्वीकार करेंगे। समय आने पर सब ठीक हो जाएगा। एनडीए गठबंधन मजबूती के साथ चुनाव में उतरेगी और जीत हासिल करेगी। साथ ही नीतीश कुमार के फिर से मुख्यमंत्री बनने के सवाल पर कहा कि प्रधानमंत्री ने जो कहा सबको मानना चाहिए। पहलगाम आतंकी हमले पर राज्य मंत्री ने कांग्रेस को जमकर लताड़ा और कहा कि कांग्रेस के नेता मुझे लगता है इस प्रकार के बयान देते हैं जो पाकिस्तान कोरास आते हैं. हमारी सेना के हौसलों को यह कमजोर करने का प्रयास करते हैं लेकिन हमारे बहादुर सेना उसके हौसले कमजोर होने वाला नहीं है। समय आने पर पाकिस्तान को जवाब दिया जाएगा। इसके लिए भारत तैयार है।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने लगाया जनता दरबार, सुनी लोगों की समस्याऐं

मुख्यमंत्री ने जनता दर्शन में मौजूद अधिकारियों को शिकायतों का प्रार्थना पत्र सौंपते हुए इसके समय से निस्तारण के निर्देश दिए।

एजेंसी

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने रविवार को 'जनता दर्शन' किया। इस दौरान 60 से अधिक फरियादी आए। मुख्यमंत्री ने एक-एक करके सभी से मुलाकात की, फिर कुशलक्षेम पूछा। इसके बाद हर पीड़ित तक पहुंचे, शिकायतें सुनीं और अधिकारियों को निस्तारण के निर्देश दिए। सीएम योगी ने कहा प्रदेश के हर नागरिक के चेहरे पर खुशहाली लाना ही सरकार की प्राथमिकता है और सरकार इसके लिए पहले दिन से ही कार्य कर रही है। जनता दरबार में पुलिस, राजस्व, चिकित्सा सहायता, वृद्धावस्था पेंशन, सड़क निर्माण समेत अनेक मामले आए, जिस पर प्रार्थना पत्र लेकर

मुख्यमंत्री ने संबंधित अधिकारियों को तत्काल कार्रवाई का निर्देश दिया। मुख्यमंत्री ने जनता दर्शन में मौजूद अधिकारियों को शिकायतों का प्रार्थना पत्र सौंपते हुए इसके समय से निस्तारण के निर्देश दिए। प्रतापगढ़ के कुंडा में विगत दिनों हुई घटना का संज्ञान लेते हुए मुख्यमंत्री ने कार्रवाई के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि इस घटना के आरोपियों को बख्शेंगे नहीं। वहीं दो महिलाओं ने पुलिस से संबंधित शिकायत की, जिसे मुख्यमंत्री ने गंभीरता से सुना और कार्रवाई के लिए निर्देशित किया। जनता दर्शन में मड़ियांव थाना के रहने वाले एक राजमिस्त्री वृद्धावस्था पेंशन की फरियाद लेकर आए थे। जिस पर सीएम योगी ने नियमसंगत कार्रवाई को लेकर आश्वस्त किया। आरटीई, खेत की पैमाइश, आवास, चकरोड, खेतों में कब्जा, बिजली कनेक्शन समेत अन्य फरियाद लेकर पीड़ित पहुंचे, जिसके समाधान का मुख्यमंत्री ने आश्वासन दिया। जनता दर्शन में कई पीड़ित परिवार के साथ आए थे। मुख्यमंत्री ने इस दौरान बच्चों को दुलारा, उनकी शिक्षा के बारे में जानकारी ली और चॉकलेट भी दी। सीएम योगी ने बच्चों को खूब पढ़ने और उज्ज्वल भविष्य का भी आशीर्वाद दिया।

कांग्रेस ने पूछा- कब होगी जातिगत जनगणना, क्यों बदला सरकार ने अपना रुख

एजेंसी

नई दिल्ली। जातिगत जनगणना को लेकर कांग्रेस ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से तीन सवाल पूछते हुए कहा है कि सरकार को स्पष्ट बताना चाहिए कि जातिगत जनगणना कब और कैसे की जाएगी। कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने सोशल मीडिया पोस्ट में कहा कि अगर मोदी सरकार ने जातिगत जनगणना पर अपने पुराने रुख से हटकर अब नई नीति अपनाई है, तो उसे यह बात ईमानदारी से स्वीकार करनी चाहिए। उन्होंने कहा है कि अब सरकार को स्पष्ट रूप से यह बताना चाहिए कि जातिगत जनगणना कब और कैसे की जाएगी। जयराम रमेश ने कहा कि

जातिगत जनगणना जैसे महत्वपूर्ण सामाजिक मुद्दे पर चुप्पी अब नहीं चलेगी। उन्होंने मांग की कि प्रधानमंत्री जनता को साफ-साफ जवाब दें।

चुनाव आयोग जल्द लॉन्च करेगा 'ईसीआईनेट', 40 ऐप्स होंगे समाहित

एजेंसी

नई दिल्ली। चुनाव आयोग (ईसीआई) एक नई डिजिटल पहल के तहत 'ईसीआईनेट' नामक एक सिंगल-पॉइंट प्लेटफ़ॉर्म लॉन्च करने की तैयारी में है, जो 40 से अधिक मौजूदा वेब और मोबाइल आधारित आईटी ऐप्स को समाहित करेगा। इसमें सीविज़िल ऐप, वोटर हेल्पलाइन ऐप, वोटर टर्नआउट ऐप जैसी ऐप्स शामिल हैं। इस कदम का उद्देश्य नागरिकों, चुनाव अधिकारियों, राजनीतिक दलों और नागरिक समाज के लिए एक सुगम, एकीकृत और उपयोगकर्ता-अनुकूल अनुभव प्रदान करना है। संभावना है कि इसे आने वाले बिहार चुनाव के पहले ही लॉन्च कर दिया जाएगा। ईसीआईनेट को चुनाव संबंधी सभी सेवाओं के लिए एकमात्र सहयोगी के रूप में विकसित किया जा रहा है। इससे उपयोगकर्ताओं को कई ऐप डाउनलोड करने और विभिन्न लॉगिन याद रखने की आवश्यकता नहीं होगी। चुनाव आयोग

का कहना है कि प्लेटफ़ॉर्म मुख्य निर्वाचन आयुक्त ज्ञानेश कुमार की परिकल्पना है। उन्होंने इसे मार्च 2025 में आयोजित मुख्य निर्वाचन अधिकारियों (सीईओज़) के सम्मेलन में प्रस्तुत किया गया था। चुनाव आयुक्त डॉ. सुखबीर सिंह संधू और डॉ. विवेक जोशी भी इस अवसर पर उपस्थित थे। ईसीआईनेट के माध्यम से नागरिक अपने स्मार्टफ़ोन या डेस्कटॉप से चुनावी जानकारी तक सरलता से पहुंच सकेंगे। डेटा केवल अधिकृत ईसीआई अधिकारियों द्वारा दर्ज किया जाएगा, जिससे इसकी प्रामाणिकता सुनिश्चित होगी। किसी विवाद की स्थिति में विधिक फ़ॉर्मों में दर्ज प्राथमिक डेटा ही मान्य माना जाएगा। यह प्लेटफ़ॉर्म 100 करोड़ से अधिक मतदाताओं और 10.5 लाख से अधिक बीएलओ, 15 लाख बीएलए, 45 लाख पोलिंग ऑफ़िशियल्स, 15,597 एईआरओ, 4,123 ईआरओ और 767 डीईओ को लाभ पहुंचाएगा।

संक्षिप्त समाचार

दिन रविवार को मांडर पल्ली में भिखारियेट संत जोसेफ का पर्व धूमधाम से मना

दिव्य दिनकर संवाददाता

मांडर - संत अलोईस कैथोलिक चर्च मांडर में रविवार को भिखरियेट स्तर पर संत जोसेफ का पर्व (बाबा दिवस) धूमधाम से मनाया गया. कार्यक्रम में मांडर भिखारियेट के नौ पल्ली खलारी, चान्हो, मकुन्दा. नवाटाड़, मांडर, ब्राम्बे, सिदरौल, मखमंदरो से बड़ी संख्या में लोग शामिल थे. इस अवसर पर विशेष मिस्सा पूजा के ब्राम्बे पल्ली के डॉ फादर प्रदीप मिंज ने संपन्न कराया. कार्यक्रम में फादर वाल्टर कंडुलना, प्यारे लाल, एवं फादर जेम्स डूंगडुंग ने आदिवासियों की सामाजिक व्यवस्था परंपरा और संस्कृति पर अपने विचार व्यक्त किये. और आदिवासियों के धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक व्यवस्था पर आसन्न को खतरे पर चिंता जताई. इस अवसर पर मांडर पल्ली के यूथ द्वारा वंदना नाच, सोसई गांव की ओर से आदिवासी नाच, एवं ब्राम्बे गांव की ओर नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत किया गया. मौके पर मांडर पल्ली के पुरोहित फादर बिपिन कंडुलना, फादर हुबर्ट बेक, फादर अल्बर्ट लकड़ा, फादर जेम्स डूंगडुंग,फादर चोन्हास तिग्गा, फादर समीर, फादर हेलारियुस, बिपिन बिलुंग, नवीन टोप्पो,एवं अन्य पुरोहित सहित बड़ी संख्या में मसीही विश्वासी उपस्थित थे !

मांडर, सड़क दुर्घटना में बाइक सवार की मौत

दिव्य दिनकर संवाददाता

मांडर - बंझिला मोड़ के निकट शनिवार की शाम को सड़क दुर्घटना में बाइक सवार हीरो उरांव 38 वर्ष की मौत हो गयी वह महुआजाड़ी गांव का रहने वाला था. घटना शाम करीब साढ़े छह बजे की है. बताया गया की हीरो उरांव पिता स्व बिगलु उरांव दिन में किसी काम से मांडर के मसमानो गांव गया था और वहीं से वापस अपने घर जा रहा था. इसी क्रम में खुखरा सेल के निकट किसी वाहन ने उसे धक्का मार दिया. वाहन के धक्के से हीरो उरांव घायल होकर सड़क किनारे स्थित गड्ढे में जा गिरा था. जिससे मौके पर ही उसकी मौत हो गयी. सूचना मिलने पर घटनास्थल पर पहुंची मांडर पुलिस ने उसके शव को कब्जे में ले लिया है. जानकारी के अनुसार खेती बारी कर जीवन यापन करने वाले हीरो उरांव के तीन बच्चे हैं !

गोरियाडीह जंगल में पुलिस पर पथराव करने वाले दो आरोपी गिरफ्तार

कोडरमा। विजय यादव

गोरियाडीह जंगल में ग्रीन स्टोन की अवैध तस्करी की जांच करने गई पुलिस टीम पर 29 मार्च की रात पथराव करने वाले दो आरोपियों को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। इस घटना के बाद ढाब थाना में कांड संख्या 02/25 दर्ज कर मामले की जांच शुरू की गई थी। पुलिस अधीक्षक कोडरमा को मिली गुप्त सूचना के आधार पर आरोपियों ओम प्रकाश मेहता उर्फ ऋषि मेहता और रवि यादव को क्रमशः डोमचांच और झुमरी तिलैया से गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में भेजा गया। गिरफ्तारी के दौरान पुलिस ने दो बोरा अवैध ब्लू स्टोन (करीब 35 किलोग्राम), दो मोबाइल फोन और उ्ठउ्ठ एक्सप्रेस की दो रसीदें भी जब्त की हैं। कार्रवाई ढाब थाना प्रभारी रवि कुमार पंडित के नेतृत्व में की गई।

निर्मल गंगा जल अभियान के तहत मिर्जाचौकी गायत्री परिवार की महिलाओं ने नदी पोखर में चलाया गया स्वच्छता अभियान

मंडरो :मंडरो प्रखंड के मिजाचौकी दूर्गा मंदिर पोखर का गंगा सप्तमी के अवसर पर शांतिकुंज हरिद्वार के तत्वावधान में निर्मला गंगा जल अभियान के तहत रविवार को गायत्री परिवार की प्रखंड समन्वयक सुप्रिया वर्णवाल के नेतृत्व में दर्जनों गायत्री परिवार की महिलाओं ने सफाई अभियान चलाया गया ।इस संबंध में सुप्रिया वर्णवाल ने बताईं कि इस पावन अवसर पर साहिबगंज गंगा घाट की सफाई एवं पूजन गायत्री परिवार के परिजनों द्वारा किया गया साथ ही मिजाचौकी पोखर का निर्मल गंगाजल अभियान चला कर पोखर की सफाई किया गई ।यह भी बताई की सर्वेभवन्तु सुखिन,सर्वे भवन्तु निरामया, विश्व का कल्याण हो,भारत देश की गरिमामई माता गंगा जल पावन एवं पवित्र है,शिव की जटा से निकली गंगा अगम्य प्राण दायिनी है,ये हमेशा विशुद्ध व निर्मल है,इसे हमेशा साफ सफाई एवं निर्मल रखना हम भारत वासियों का परम धर्म व कर्तव्य है, इस पावन अवसर पर निर्मल गंगाजल अभियान चलाया गया ।मोके पर गायत्री परिवार के परिजनों मे, राधिका देवी,रेखा देवी, रेशमी भगत,सुषमा सिंह,रीना देवी,बीमा देवी,नमिता पंडित पिंकी देवी, पुतुल देवी,उषा देवी,सुनीता वर्णवाल,प्रियंका देवी,मालती देवी, ललिता देवी सहित दर्जनों गायत्री परिवार की महिलाओं ने सफाई अभियान में शामिल थीं।

ईलाज कराने आए झाझा निवासी एम्स के बाहर एक बुजुर्ग की हुई मौत

देवघर से दिव्य दिनकर संवाददाता प्रेम रंजन झा

देवीपुर थाना क्षेत्र अंतर्गत एम्स के बाहर स्टैंड के समीप एक 55 वर्षीय बुजुर्ग की मौत हो गई। जानकारी हो कि झाझा निवासी संतोष कुमार अपना इलाज कराने एम्स आया हुआ था। जहां उसने शनिवार को इलाज कराया और एम्स के बाहर स्थित एक अस्थाई दुकान में रात्रि को वहीं रुक गया। उसके बाद सुबह उक्त व्यक्ति मारने की जानकारी लोगों को हुई। उसके पास से एम्स ओपीडी का बुकलेट एवं आधार कार्ड, मोबाइल नंबर मिला। जिसके बाद उसके घर पर फोन कर परिजनों को जानकारी दिया। जानकारी के पश्चात परिजन आए और अपने परिजन का शव लेकर चले गए। परिजनों के द्वारा किसी प्रकार का कोई किसी को दोष नहीं देते हुए किसी तरह का कानूनी कार्रवाई नहीं करने के लिए पुलिस को से आग्रह किया। खबर सुनकर पुलिस मौके पर पहुंची थी। परिजनों को आने तक और लाश सुरक्षित ले जाने तक पुलिस मौजूद रही। परिजनों ने बताया कि पहले से यह बीमार रहा करता था और पेट दर्द का शिकायत को लेकर एम्स आया हुआ था। यह घटना में किसी का कोई दोष नहीं है। परिजन ने लाश को वापस झाझा स्थित घर ले गए।

शांतिपूर्ण व कदाचारमुक्त वातावरण में नीट परीक्षा को लेकर उपायुक्त व पुलिस अधीक्षक ने विभिन्न परीक्षा केंद्रों का किया निरीक्षण

जिले के 05 परीक्षा केन्द्रों पर विधि-व्यवस्था व सुरक्षा व्यवस्था को लेकर वरीय अधिकारी कर रहे हैं लगातार निगरानी

देवघर से दिव्य दिनकर संवाददाता प्रेम रंजन झा

जिले में आयोजित राष्ट्रीय पात्रता सह प्रवेश परीक्षा (नीट) को लेकर उपायुक्त सह जिला दंडाधिकारी विशाल सागर व पुलिस अधीक्षक अजीत पीटर डुंगडुंग द्वारा सयुंक्त रूप से आज दिनांक-04.05.2025 को विभिन्न परीक्षा केंद्रों का निरीक्षण किया गया। इस दौरान ए.एस कॉलेज, देवघर कॉलेज व पीएम जवाहर नवोदय विद्यालय रिखीया में बनाये गये परीक्षा केन्द्रों पर शांतिपूर्ण एवं कदाचार मुक्त वातावरण में परीक्षा सम्पन्न कराने को लेकर एन0टी0ए0 द्वारा जारी दिशा निर्देश का शत प्रतिशत अनुपालन सुनिश्चित करने का निदेश संबंधित अधिकारियों व केन्द्राधीक्षकों को दिया। इस-के अलावा निरीक्षण के क्रम में उपायुक्त विशाल सागर ने शांतिपूर्ण, नकल विहीन, पारदर्शिता से परीक्षा को लेकर सुरक्षा के सभी इंतजाम के अलावा परीक्षा केंद्रों पर मूलभूत सुविधाओं की स्थिति के साथ अभ्यर्थियों के बॉयोमेट्रिक उपस्थिति, पेयजल, सीसीटीवी, शौचालय व बिजली

व्यवस्था की वस्तुस्थिति से अवगत हुए। आगे उपायुक्त ने निरीक्षण के दौरान केंद्र प्रभारियों एवं संबंधित अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिया कि परीक्षा के दौरान किसी भी प्रकार की गड़बड़ी, अव्यवस्था या नकल की घटना न हो, इसका विशेष रूप से ध्यान रखें।

कदाचारमुक्त परीक्षा को लेकर सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम

परीक्षा के दौरान किसी भी प्रकार की गड़बड़ी से बचने के लिए सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए गए हैं। इसको लेकर प्रत्येक परीक्षा केंद्र पर पर्याप्त पुलिस बल तैनात किया गया है। साथ ही धारा 144 के अंतर्गत परीक्षा केंद्रों के 200 मीटर के दायरे में बाहरी व्यक्तियों का प्रवेश पूर्णतः वर्जित रहेगा। प्रत्येक केंद्र पर एक मजिस्ट्रेट की तैनाती भी की गयी है। इसके अलावे जिले के 05 परीक्षा केन्द्रों पर विधि-व्यवस्था व सुरक्षा व्यवस्था को लेकर अनुमंडल पदाधिकारी देवघर, वरीय अधिकारियों एवं पुलिस पदाधिकारियों द्वारा लगातार निगरानी की जा रही है।

भाजपा महिला मोर्चा की प्रदेश मंत्री सूचिता सिंह ने शिव मंदिर में पूजा अर्चना कर मंदिर में डस्टबीन डोनेट की

दिव्य दिनकर संवाददाता

रांची - छात्र क्लब पर्यावरण मंच की वरीय संरक्षक सह भाजपा की प्रदेश मंत्री सुचिता सिंह ने अपने 17 वीं शादी की सालगिरह धूम धाम से मनाई। कार्यक्रम के पहले चरण मे रातु रोड देवी मंडप रोड हेसल स्थित सर्वेश्वर महादेव मंदिर मे पूजा अर्चना कर डस्टबीन डोनट की ताकि मंदिर के आस पास स्वच्छता कायम रहे।दूसरे चरण मे मधुकम,खादगड़ा एवं धुर्वा मे मिट्टी के घड़े,सुराही वितरण एवं प्याऊ का उद्घाटन साथ ही बच्चों के बीच जूस,बिस्किट्स आदि वितरण की एवं तीसरे चरण मे भजन कीर्तन आयोजन कर घर परिवार एवं देश में सुख शांति एवं खुशयाली के लिए ईश्वर से प्रार्थना की। मौके पर भाजपा महिला मोर्चा की प्रदेश अध्यक्ष आरती सिंह,प्रदेश उपाध्यक्ष बबीता झा,महामंत्री रेणु सिंह,मंत्री नीलम चौधरी,छात्र क्लब ग्रुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष शिव किशोर शर्मा,संरक्षक शैलेश कुमार सिंह,विजय पाठक,लक्की एजुकेशनल एंड

चैरिटेबल ट्रस्ट के ट्रस्टी दीपक कुमार साहू, लायंस क्लब ऑफ रांची हरकनक ग्रेटर के अध्यक्ष एम.जे.एफ.लायन राजेश केडिया,झारखंड रत्न डॉक्टर आर.के. हाजरा(वर्ल्ड क्लास एक्यूपंक्चर स्पाईन स्पेशलिस्ट),चंद्रावती सह कांति कृष्ण फाउंडेशन के निदेशक ऋषिकेश लाल ने सुचिता सिंह को शादी के सालगिरह पर बधाई देते हुए लंबी उम्र,स्वास्थ्य लाभ एवं सुखमय जीवन की कामना की वहीं छात्र क्लब ग्रुप ने अपने वरीय संरक्षक सुचिता सिंह के शादी के सालगिरह पर घोषणा किया रांची के विभिन्न जरूरतमंद जगह पर दो दो घड़े की आठ प्याऊ लगाई जाएगी। आज के कार्यक्रम को सफल बनाने में मुख्यरूप से पी.एन. मिश्रा,कुमारी अनिता,अंजना प्रियदर्शनी,पिया बर्मन, गूंजा देवी,प्रतिभा कुमारी,सुबोध कुमार शर्मा,शोभा देवी,शकुंतला देवी,ऋषिका कुमारी एवं मंदिर के पुजारी प्रशांत तिवारी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

निर्मला ठाकुर को मदर ऑफ द ईयर सम्मान देने का निर्णय

देवघर से दिव्य दिनकर संवाददाता प्रेम रंजन झा

प्रफुल्ल-कनकलता सिकदार स्मृति न्यास एवं विवेकानंद शैक्षणिक, सांस्कृतिक एवं क्रीड़ा संस्थान के युग्म बैनर तले मातृ दिवस के अवसर पर इस माह के ग्यारह को, श्याम सुंदर शिक्षा सदन की संस्थापिका निर्मला ठाकुर को सिकदार ट्रस्ट के सचिव काजल कांति सिकदार एवं वेक्सो इंडिया के केंद्रीय अध्यक्ष डॉ. प्रदीप कुमार सिंह देव के करकमलों से ₹मदर ऑफ द ईयर₹ सम्मान देने का निर्णय लिया गया है। ज्ञात हो निर्मला ठाकुर गीता देवी पब्लिक स्कूल में सेवा देने के पश्चात चालीस वर्षों से श्याम सुंदर में विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करती आ रही है। शिक्षा के साथ साथ वे सामाजिक क्रिया कलापों में बढ़ चढ़ कर अपनी भागीदारी निभाती हैं। मातृ दिवस के संबंध में डॉ. प्रदीप ने कहा- मातृ दिवस मनाने का शुरूआत सर्वप्रथम ग्रीस देश में हुई थी, जहां देवताओं की मां को पूजने का चलन शुरू हुआ था। इसके

बाद इसे त्योहार की तरह मनाया जाने लगा। हर मां अपने बच्चों के प्रति जीवन भर समर्पित होती है। मां के त्याग की गहराई को मापना भी संभव नहीं है और ना ही उनके एहसानों को चुका पाना। लेकिन उनके प्रति सम्मान और कृतज्ञता को प्रकट करना हमारा कर्तव्य है। मां के प्रति इन्हीं भावों को व्यक्त करने के उद्देश्य से मातृ दिवस मनाया जाता है। यह दिन विशेष रूप से मां के लिए समर्पित है। इस दिन को दुनिया भर में लोग अपने तरीके से मनाते हैं। कहीं पर मां के लिए पार्टी का आयोजन होता है तो कहीं उन्हें उपहार और शुभकामनाएं दी जाती है। कहीं पर पूजा अर्चना तो कुछ लोग मां के प्रति अपनी भावनाएं लिखकर जताते हैं। इस दिन करे मनाने का तरीका कोई भी हो, लेकिन बच्चों में मां के प्रति प्रेम और इस दिन के प्रति उत्साह चरम पर होता है। काजल सिकदार ने कहा-धरती पर मौजूद प्रत्येक इंसान का अस्तित्व, मां के कारण ही है। मां के जन्म देने पर ही मनुष्य धरती पर आता है और मां के स्नेह दुलार और संस्कारों में मानवता का गुण सीखता है। हमारे हर विचार और भाव के पीछे मां द्वारा रोपित किए गए संस्कार के बीज हैं, जिनकी बदौलत हम एक अच्छे इंसान की श्रेणी में आते हैं। इसीलिए मातृ दिवस को मनाना और भी आवश्यक हो जाता है। हम अपने व्यस्त जीवन में यदि हर दिन न सही तो कम से कम साल में एक बार मां के प्रति पूर्ण समर्पित होकर इस दिन को उत्सव की तरह मना सकते हैं।

देवघर के दीपक का भारतीय टीम में चयन

देवघर से दिव्य दिनकर संवाददाता प्रेम रंजन झा

एशियाई हैंडबॉल महासंघ के नेतृत्व में आयोजित 10वीं एशियन बीच हैंडबॉल प्रतियोगिता जो कि 6 मई से 15 मई तक ओमान देश के राजधानी मस्कट में होने वाली है। इस प्रतियोगिता के लिए भारतीय हैंडबॉल टीम में देवघर जिला के दीपक कुमार का चयन बतौर गोलकीपर किया गया है। दीपक कुमार मूल रुप से गोड्डा जिला का रहने वाला है, पिछले दो वर्षों से दीपक देवघर के बिरसा हैंडबॉल अकादमी में निरंतर रूप से अपना अभ्यास राष्ट्रीय कोच सह जिला सचिव राजेश रंजन के नेतृत्व में कर रहे हैं। बता दें कि दीपक पहले भी यूथ भारतीय हैंडबॉल टीम के तरफ से साल 2022 में बहरीन देश के मानामा में आयोजित 9वां एशियन यूथ

हैंडबॉल प्रतियोगिता खेल चुके है । दीपक आज तक झारखंड हैंडबॉल टीम से बतौर गोलकीपर के 3 सीनियर राष्ट्रीय एवं 2 जूनियर राष्ट्रीय हैंडबॉल प्रतियोगिता में झारखंड टीम का प्रतिनिधित्व कर चुके है। दीपक ने अपनी तैयारी देवघर के बिरसा हैंडबॉल अकादमी में रहते हुए अपने राष्ट्रीय कोच राजेश रंजन से की है । दीपक ने बताया कि वो अपने इस उपलब्धि का पहला श्रेय देवघर जिला ओलंपिक संघ के अध्यक्ष डॉ सुनील खवाड़े ,जिला खेल प्राधिकरण के सचिव आशीष झा,अपने कोच सह जिला हैंडबॉल संघ के सचिव राजेश रंजन,संघ के अध्यक्ष नवीन शर्मा,रामकृष्ण विवेकानंद विद्या मंदिर के निदेशक सौगाता कर, संघ के मुख्य संरक्षक डॉ जयचंद राज, चेयरमैन संजय मालवीय, उपाध्यक्ष रवि केसरी, सुनील कुमार, रीता चौरसिया के साथ झारखंड हैंडबॉल संघ के सचिव इमरान मसूद खान एंव झारखंड हैंडबॉल संघ के पूरे परिवार को दिया। दीपक के पिता जगदीश मिस्त्री एंव माता ने कहा कि ये काफी गौरव की बात हैं कि उनका बेटा एक बार फिर भारतीय टीम का प्रतिनिधित्व करेगा। इसी मौके पर अकादमी के राष्ट्रीय खिलाड़ी अभिनव कुमार, साक्षी भारद्वाज, त्रुषा कुमारी, आयुषी कुमारी,सहित संघ के उपाध्यक्ष योगी तिवारी, संयुक्त सचिव प्रियम भारद्वाज ,रितेश केसरी,ने दीपक को ढेर सारी शुभकामनाएं दीं।

करमडीह पंचमुखी हनुमान प्रतिष्ठात्मक निमित्त सूर्य कुंड पर की गयी जलभरी

रिपोर्ट - प्रमोद कुमार सिंह

औरंगाबाद :- जिले में श्री बालाजी सेवा समिति ट्रस्ट द्वारा देव प्रखंड के करमडीह ग्राम में श्री श्री पंचमुमुखी हनुमान प्रतिष्ठात्मक महायज्ञ का आयोजन 2 मई से 8 मई तक का आयोजन किया जा रहा है ' इस निमित्त आज करमडीह ग्राम से हजारों की संख्या में देव सूर्यकुण्ड से जलभरी कर कलश शोभा यात्रा का आयोजन किया गया ' समाजसेवी चन्दन सिंह एवं मुन्ना पाठक जी के द्वारा कलश शोभायात्रा को भव्य बनाने के लिए राधा कृष्ण, शंकर, पार्वती, श्री गणेश, हनुमान जी एवं काली जी की शोभायात्रा का आयोजन किया गया ' झांकी की आकर्षक नृत्य से देव की धरती भक्तिमय हो गया ' ट्रस्ट के विद्वान सदस्यों नें बताया की पंचमुखी हनुमान जी की स्थापना के लाभ बतायें और कहें की यह घर को नकारात्मक ऊर्जा से बचाता है.यह वास्तु दोष को दूर करता है. यह घर में सुख, शांति और समृद्धि लाता है.यह सभी प्रकार के डर और बाधाओं से छुटकारा दिलाता है. यज्ञ निमित्त प्रत्येक दिन भक्तिमय कार्यक्रम किया जायेगा जिसमे यज्ञ कर्ता के रूप में पीठाधिश्वर कृष्ण आध्यात्म आश्रम स्वामी कृष्ण मोहनानंद, प्रवचन कर्ता पूज्य रौशनी शास्त्री,सांस्कृतिक कार्यक्रम में राकेश मिश्रा,निशा उपाध्याय,शिवानी सिंह,भोजपुरी गायिका देवी जी,खुशी कक्कड़,आर्यन बाबू,ईश्वरत जहाँ,धनंजय शर्मा अपना योगदान देंगे ' श्री बालाजी सेवा ट्रस्ट के आयोजन कर्ता चन्दन सिंह नें सभी सदस्यों को सलाह दी की साधना करते समय ब्रह्मचर्य का पालन करें। हनुमान जी बहुत ही उग्र एवं त्वरित फल देने वाले देवता हैं इसलिए इनकी साधना में विशेष सावधानी की आवश्यकता होती है।

छापेमारी में 15 लीटर महुआ शराब बरामद, आरोपी फरार

रिपोर्ट - अमरेन्द्र कुमार सिंह

गोह(औरंगाबाद) बंदेया थाना क्षेत्र के चपरा गांव में पुलिस ने गुप्त सूचना के आधार पर छापेमारी कर सूरत दास के घर से 15 लीटर महुआ शराब बरामद की है। पुलिस के पहुंचते ही आरोपी सूरत दास मौके से फरार हो गया। थानाध्यक्ष सूरज कुमार ने बताया कि मामले में प्राथमिकी दर्ज कर ली गई है तथा आरोपी की गिरफ्तारी के लिए लगातार छापेमारी की जा रही है।

क्रमटोला व मिर्जाचौकी स्टेशन के बीच ट्रेन में एक महिला ने शिशु को दिया जन्म

मंडरो: शनिवार के बीते रात अप बरौनी पैसेंजर ट्रेन में करमटोला व मिर्जाचौकी स्टेशन के बीच ट्रेन में एक महिला ने शिशु को जन्म दिया । सूचना मिलने पर मिर्जाचौकी आरपीएफ जवानों ने महिला को ट्रेन से उतार कर मिजाचौकी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचाया,आशा रीना देवी को बुलाकर आरपीएफ रणवीर कुमार यादव एवं पी एन उपाध्याय ने आशा महिला से प्रार्थमिक उपचार के लिए कहा वहीं मिजाचौकी चिकित्सा पदाधिकारी डॉ पंकज कुमार ने एनएम से उपचार कराया एवं भोजन की व्यवस्था की। महिला हावड़ा से जमालपुर अपने घर जा रही थी , ट्रेन में ही महिला को प्रशव की पीड़ा होता देख महिला यात्री ने पुरुष यात्री को वहां से हटाया और साड़ी से पर्दा बनाकर प्रसव करवाया गया । वहीं जच्चा बच्चा स्वस्थ बताया गया। रविवार को उसके परिजन ने मिजाचौकी से घर लेकर चले गए।इधर इस तरह की कार्य पर आरपीएफ जवान को मिजाचौकी की महिला पुरुष ने सराहना की।

यातायात नियमों के प्रति लोगों को किया गया जागरूक

साहिबगंज: रेलवे सुरक्षा बल साहिबगंज के उप निरीक्षक सरोज कुमार ,सहायक उप निरीक्षक रवींद्र तिवारी एवं आरक्षी अमित कुमार के द्वारा महादेवगंज कादिर नगर साहेबगंज में जागरूकता अभियान किलोमीटर स ख्या 235/03 के पास में चलाया गया ।जिसमें लोगों /जनता से ट्रेन पर पत्थर नहीं मारने,रेलवे लाइन में यातायात नहीं करने, रेलवे लाइन पर पत्थर नहीं रखने, रेल लाइन के किनारे जानवर नहीं चराने एवं यातायात नहीं करने, चलती ट्रेन पर नहीं चढ़े और ना ही उतरे रेलवे टोल फ्री नंबर 139 सहित अन्य महत्वपूर्ण बातों से अवगत कराया गया।

स्विमिंग शार्क एकेडमी के सदस्यों द्वारा चलाया गया सफाई अभियान किया नंदन पहाड़ लेक का सफाई

देवघर से दिव्य दिनकर संवाददाता प्रेम रंजन झा

नन्दन पहाड़ लेक जहां बच्चों को निःशुल्क स्विमिंग सिखाया जाता है और यहीं से स्विमिंग सीख के बच्चे राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में मेडल लाते है राष्ट्रीय स्तर पे भाग लेते हैं ।वहां आए दिन देखा जाता है गाड़ियों का सफाई होता है कपड़े धोते है कर्म कांड होता है घर का पूजा पाठ का सामान, और उसका कचरा,शराब की बोतल वहीं फेक दिया जाता जिससे गंदगी का भंडार लग गया था,और पानी से दुर्गंध भी आने लगा था,पानी अत्यधिक होने की वजह से सफाई बहुत महीने से नहीं हुआ था लेकिन इधर पानी का स्तर कुछ घटा और पानी कम होने की वजह से स्विमिंग शार्क एकेडमी के सदस्यों द्वारा रविवार दिनांक 4 मई को किया गया नंदन पहाड़ लेक का सफाई अभियान स्विमिंग शार्क एकेडमी के सुधाकर चौधरी और मुन्ना पासवान जी नेतृत्व में चलाया गया और लगभग बोटिंग घाट तक कचरे को निकाल के बाहर किया और कुछ दूरी पे जाके जहां कचरा रखा जाता है वहां रखा गया।।जिससे पूर्व की स्थिति और वर्तमान की स्थिति देखते बन रही थी।।इस अभियान में स्विमिंग शार्क एकेडमी के नवीन शर्मा,कृष्ण कुमार,लाल मोहन कुमार,विद्यानंद राय ,रोहित रंजन,, सोनू कुमार राय, शुभम कुमार, अनुराग कुमार, वंश कुमार, कुंदन कुमार सिंह, मनीष कुमार, सुमंत कुमार झा, संदीप मिश्रा, विकास कुमार वाजपेई, मनीष मिश्रा, सौरभ केशरी, पाखी कुमारी,अर्पित कुमार,मानव कुमार,मानवी कुमारी,सहित और भी कई लोग मौजूद थे।

संक्षिप्त समाचार

बीआरबीसीएल क्रिकेट प्रीमियर लीग फाइनल में टीम 'Super Giant ने मारी बाजी।

रिपोर्ट - प्रमोद कुमार सिंह

औरंगाबाद :- बीआरबीसीएल द्वारा आयोजित क्रिकेट प्रीमियर लीग का फाइनल मुकाबला 3 मई को नेताजी सुभाष चंद्र बोस स्टेडियम में उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री दीपक रंजन देहुरी (मुख्य कार्यकारी अधिकारी, BRBCL), श्री बी.के. साहा (महाप्रबंधक, प्रचालन एवं अनुरक्षण) और सांगीनी लेडीज क्लब की उपाध्यक्षा श्रीमती रूना साहा की गरिमामयी उपस्थिति रही। सामूहिक प्रयास के बल पर टीम 'BRBCL Super Giant ने फाइनल में उत्कृष्ट खेल दिखाकर विजेता बनने का सम्मान प्राप्त किया। दूसरी ओर, 'BRBCL Super Giant की टीम ने पूरे टूर्नामेंट में अपने खेल से दर्शकों का दिल जीता। मुख्य अतिथियों ने विजेता एवं उपविजेता टीमों को ट्रॉफी और पुरस्कार प्रदान किए तथा खिलाड़ियों को प्रेरक शब्दों से उत्साहित किया। आयोजन को सफल बनाने में योगदान देने वाले सभी अधिकारियों, कर्मचारियों, आयोजन समिति और दर्शकों का BRBCL प्रबंधन ने आभार व्यक्त किया।

पृथ्वीराज ट्रस्ट पहुंचे बिहार सरकार के मंत्री नीरज कुमार बब्लू को किया गया भव्य स्वागत

रिपोर्ट- प्रमोद कुमार सिंह

औरंगाबाद :- जिला मुख्यालय की महत्वपूर्ण सामाजिक संस्था पृथ्वीराज चौहान चैरिटेबल ट्रस्ट पृथ्वीराज चौक ब्लॉक मोड के प्रांगण में बिहार सरकार के लोक स्वास्थ्य अभियंत्रण विभाग के माननीय मंत्री नीरज कुमार बबलू जी का आगमन हुआ।पृथ्वीराज चौहान ट्रस्ट के अध्यक्ष राघवेंद्र प्रताप नारायण सिंह,उपाध्यक्ष डॉ ज्ञानेश्वर प्रसाद सिंह, वरीय सदस्य प्रोफेसर विजय कुमार सिंह,रामप्रवेश सिंह चंद्रप्रकाश विकास,पूर्व मुखिया सत्येंद्र नारायण सिंह, माध्यमिक शिक्षक संघ के नेता रामभजन सिंह, सरपंच संघ के प्रांतीय नेता रविंद्र कुमार सिंह, संजय कुमार सिंह, रंजीत कुमार सिंह,कोषाध्यक्ष विकास कुमार सिंह,मीडिया प्रभारी सुरेश विद्यार्थी सहित अन्य सदस्यों द्वारा पुष्पहार एवं अंग वस्त्र देकर भव्य स्वागत किया गया। पृथ्वीराज चौहान स्मृति स्थल पहुंचने पर माननीय मंत्री द्वारा पृथ्वीराज चौहान एवं चंद्रवरदाई जी के प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की गई।प्रोफेसर विजय कुमार सिंह ने मंत्री जी को बताया कि औरंगाबाद भारत का पहला जिला है जहां पृथ्वीराज चौहान के प्रतिमा के साथ-साथ चंद्रवरदाई जी की भी प्रतिमा लगी हुई है।स्मृति स्थल पहुंचने पर मंत्री जी काफी हर्षित दिखे एवं उन्होंने आगामी महाराणा प्रताप जयंती पटना में होने वाले भव्य एवं दिव्य समारोह में सभी लोगों को आमंत्रित किया।मौके पर जिला परिषद के पूर्व अध्यक्ष पंकज पासवान,रविंद्र कुमार रवि,राम सुरेश सिंह धनीबार के जितेंद्र कुमार सिंह,जयराम सिंह सहित अन्य उपस्थित थे।

दिव्यांग बच्चों के लिए आयोजन होगा चिकित्सा जांच शिविर

रिपोर्ट - प्रमोद कुमार सिंह

औरंगाबाद :- जिले के बारुण प्रखंड के समावेशी शिक्षा के बीआरपी लाल बहादुर ने बताया कि 5 मई को दिन सोमवार को प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र बारूण में बारुण प्रखंड के 03 वर्ष से लेकर 18 वर्ष के दिव्यांग बच्चों का जांच शिविर का आयोजन किया जाएगा साथ में यू डी आईडी कार्ड (यूनिक डिसएबलिटी आइडेंटिटी कार्ड) भी बनेगा अतः बारुण प्रखंड के सभी विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों एवं सहायक शिक्षकों, बारुण प्रखंड के विकास मित्रों, टोला सेवकों को सूचित किया जाता है कि अधिक से अधिक बच्चों को इस जाँच शिविर का लाभ दिलवाना सुनिश्चित करें इस कैंप में आने हेतु निम्नलिखित प्रमाण पत्र की आवश्यकता है , आधार कार्ड की छाया प्रति 2. पासपोर्ट साइज फोटो।जिन बच्चों का दिव्यांगता प्रमाण पत्र बन चुका है उनका यूडीआईडी कार्ड बनेगा अतः यूडीआईडी कार्ड हेतु निम्नलिखित डॉक्यूमेंट की आवश्यकता है ,दिव्यांगता प्रमाण पत्र, आधार कार्ड कि छाया प्रति 3 पासपोर्ट साइज फोटो , प्रमाण पत्र आधार को पत्र की छाया प्रति दो पासपोर्ट साइज फोटो

बभाइन गांव में अपराधियों का कहर, नीतीश को मारी दो गोली

प्रियंका कुमारी

बखरी, बेगूसराय। बखरी थाना क्षेत्र के बभाइन गांव में शनिवार की देर शाम उस वक्त सनसनी फैल गई, जब अपराधियों ने एक युवक को घर से बुलाकर अंधाधुंध गोलीबारी कर दी। हमले में युवक नीतीश कुमार पासवान गंभीर रूप से घायल हो गया। उन्हें इलाज के लिए बेगूसराय के एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया है, जहां उनकी हालत नाजुक बनी हुई है।प्राप्त जानकारी के अनुसार, हमलावर तीन मोटरसाइकिलों पर सवार होकर गांव पहुंचे थे और उनकी संख्या लगभग छह थी। उन्होंने किसी माध्यम से नीतीश को घर से बाहर बुलवाया और पास में ही अचानक फायरिंग शुरू कर दी। इस हमले में नीतीश को दो गोलियां एक सिर में और दूसरी जांघ में लगी।घायल युवक की पहचान बभाइन गांव निवासी ब्रह्मदेव पासवान के पौत्र और राजो पासवान के पुत्र 28 वर्षीय नीतीश कुमार पासवान के रूप में हुई है। परिजनों ने उन्हें तत्काल इलाज के लिए अस्पताल पहुंचाया।घटना की सूचना मिलते ही बखरी पुलिस मौके पर पहुंची और जांच शुरू की। थानाध्यक्ष फैसल अहमद अंसारी ने बताया कि पीड़ित परिजनों द्वारा दिए गए आवेदन के आधार पर छह नामजद आरोपियों के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की गई है। जल्द ही आरोपियों की गिरफ्तारी की जाएगी। घटना के बाद गांव में भय और तनाव का माहौल है। पीड़ित परिवार से मिलने और ढांढस बंधाने के लिए भाकपा नेता जितेन्द्र जीतू, रटन पंचायत के सरपंच प्रतिनिधि बाला पासवान, वार्ड 12 के पंच प्रतिनिधि प्रवीण चक्रवर्ती और वार्ड 8 के सदस्य प्रतिनिधि रामविनय पासवान पहुंचे।जनप्रतिनिधियों ने घटना की निंदा करते हुए प्रशासन से अपराधियों की शीघ्र गिरफ्तारी और कड़ी कार्रवाई की मांग की है। साथ ही उन्होंने प्रशासन से पीड़ित परिवार और गांव के लोगों को सुरक्षा प्रदान करने की भी अपील की।

ओबरा महोत्सव की रुपरेखा तय करने हेतु बृहद बैठक बुलाने का लिया गया निर्णय

रिपोर्ट - प्रमोद कुमार सिंह

औरंगाबाद :-ःजिले के ओबरा प्रखंड में होने वाले ओबरा महोत्सव को दिव्य एवं भव्य रुप से आयोजित किया जायेगा। ओबरा महोत्सव की रुपरेखा तय करने हेतु बृहद बैठक बुलाने का लिया गया निर्णय। उक्त निर्णय जिला महोत्सव परिवार कीओबरा प्रखंड में हुई एक बैठक में लिया गया। आयोजित बैठक में मुख्य अतिथि के रूप में वरिष्ठ अधिवक्ता सिद्धेश्वर विद्यार्थी एवं भ्रष्टाचार निरोधक जांच ब्यूरो के राष्ट्रीय सचिव आदित्य श्रीवास्तव, मुखिया प्रतिनिधि गोविंद अग्रवाल शामिल हुए बैठक की अध्यक्षता पूर्व मुखिया रामसेवक प्रसाद ने की। वही सबकी सहमति से ओबरा महोत्सव की नई कमेटी की गठन हुई जिसमें अध्यक्ष की जिम्मेवारी रामसेवक प्रसाद को दी गई और कार्यकारिणी अध्यक्ष की जिम्मेवारी श्री कृष्णा कांत कुमार को दी गई, सचिव की जिम्मेवारी कौशिक दुबे हाथों में दी गई, कोषा अध्यक्ष अतुल आनंद को मनाया गया शह कोषा अध्यक्ष सुनील सिन्हा, उपाध्यक्ष कमलेश कुमार विकल, प्रमोद भगत, विनोद प्रसाद नाग, शंभू प्रसाद, शिवनारायण प्रसाद को शामिल किया गया। उप सचिव में विद्याधर तिवारी, पप्पू अग्रवाल

संजय कुमार मालाकार को रखा गया। सभी लोगों ने संयुक्त रूप से निर्णय लिया है कि इस बार ओबरा महोत्सव आयोजन दो दिवसीय 6 सितंबर से 7 सितंबर तक आयोजित होगा। महोत्सव में स्थानीय कलाकारों के साथ बड़े कलाकारों को भी आमंत्रित किया जाएगा। बैठक संबोधन करते हुए सिद्धेश्वर विद्यार्थी ने कहा कि बैठक का मूल उद्देश्य है ओबरा में प्राचीन स्थित देवी मां मंदिर , ऐतिहासिक महत्व के स्थल मनोरा एवं स्वतंत्रता सेनानी जगतपति कुमार को देश दुनिया में प्रचारित और प्रसारित करना है ।साथ ही स्थानीय कलाकारों, छात्र छात्राओं को मंच दिलाने और स्थानीय उत्पाद महत्व देना ताकि उसकी अच्छाई देश दुनिया स्तर पर पहुंच सके। इसी उद्देश्य महोत्सव को शुरूआत करने की पहल की जा रही है।। और यह तभी संभव है जब ओबरा के सभी लोगों की इसके प्रति सहयोग मिले। आदित्य श्रीवास्तव ने बताया कि महोत्सव की निरंतरता बनी रहेगी तब महोत्सव को राजकीय दर्जा मिल सकता है , जिस ओबरा सभी क्षेत्रों में विकास की गति को छू सके।बैठक मे कमल किशोर पांडे प्रदीप साव रवि शंकर दुबे अजय कुमार मेहता सुनील कुमार अजय कुमार शर्मा दूधेश्वर साहू आनंद पांडे अशोक सिंह शैलेश कुमार संजय कुमार उपस्थित थे।

सारण जिलान्तर्गत अप्रैल माह में चलाये गये विशेष अभियान में 1350 अभियुक्तों को किया गया गिरफ्तार

सारण पुलिस की सक्रियता की वजह से 7064 ली0 शराब जप्त

पटना , । सारण के वरीय पुलिस अधीक्षक, सारण द्वारा दिये गये निर्देश के आलोक में असमाजिक तत्वों / अपराधकर्मियों की गिरफ्तारी एवं शराब के सेवन / बिक्री/भण्डारण / निर्माण / परिवहन आदि पर पूर्ण रूप से पाबंदी लगाने तथा देशी शराब भट्टी ध्वस्त करने हेतु कार्रवाई को दृष्टिगत रखते हुए माह-मार्च में विशेष अभियान चलाकर कुल 1350 (तेरह सौ पचास) अभियुक्तों को गिरफ्तार किया गया, जिसमें हत्या के कांड में 10, हत्या के प्रयास में-94, दहेज हत्या के कांड में-07. लूट के कांड में-14, डकैती कांड में-01, आर्म्स अधि० के कांड में-18, अपहरण के कांड में-21, पॉक्सो के कांड में-03, बलात्कार के कांड में-01, एस०सी० एक्ट के कांड में-14, पुलिस पर हमला के कांड में-26. सामप्रदायिक कांड में-01, दहेज प्रथा अधिनियम में-01, आई०टी०एक्ट० अधि०-03, अन्य विशेष प्रतिवेदित कांड में 121,

चोरी में-06, छिनतई में-01, खनन के कांड में-05, मद्यनिषेध में-598, वारंट में-389 तथा अन्य कांडों में 16 अभियुक्त शामिल हैं। इस अवधि में लंबित वारंट के निष्पादन को दृष्टिगत रखते हुए वारंट-1306 एवं कुर्की-105 का निष्पादन किया गया। पूरे माह के दौरान चलाये गये इस विशेष अभियान में देशी/विदेशी / स्ट्रीट शराब-7064 ली०, देशी कट्टा/देशी पिस्टल-15, कारतूस-52, मोबाईल-53, लैपटॉप-07, चाकू-07, साईकिल-01, पिलेट-01, कटर मशीन-01, पोटाश-15 कि0ग्रा0, अपहता-35, बैट्री-04, रिक्सा-01, मवेशी-06, तास-01, पाइप-226 पीस, डीजल-20 ली०, तार 30 मीटर, लैम्प-01, हेल्मेट-01, गैस सिलेंडर-01, प्रिंटर-01, मॉनिटर-01, सी०पी०यू०-01, शावल-01. मोटरसाईकिल / स्कूटी/स्कूटर-56, तीन/चार पहिया वाहन-14, बालु लदा ट्रक-15, खोखा / मैगजीन-04, देशी रायफल-01, एवं नगद राशि 137750 रूपया जप्त / बरामद किया गया। जिलें में अपराध नियंत्रण एवं यातायात सुरक्षा के दृष्टिकोण से 7677500 रूपया जुमार्ना राशि वसूली गई। साथ ही देशी शराब की 64 भठ्ठीयो को ध्वस्त कर लगभग 46,000 लीटर अर्धनिर्मित शराब / पास विनष्ट किया गया। सारण पुलिस, आपकी सेवा में सदैव तत्पर रहेगा ।

रक्तदान जागरूकता एवं सेवा के लिए औरंगाबाद के बमेंद्र,विजेता एवं अनीश को किया गया सम्मानित

`रिपोर्ट - प्रमोद कुमार सिंह

औरंगाबाद :- रक्तदान क्षेत्र में सेवा दे रहे औरंगाबाद क्षत्रिय नगर निवासी पथ प्रदर्शक संस्था के संस्थापक सह सचिव रक्तसेवक बमेन्द्र कुमार सिंह एवं जिला स्तरीय रक्त योद्धा कमिटी हसपुरा के सचिव अनीश केसरी एवं संरक्षक विजेता पटेल को उत्तर प्रदेश के दुद्धिनगर में अंतरराष्ट्रीय रक्तक्रांतिवीर सम्मान से सम्मानित किया ।रक्तदान के क्षेत्र में जागरूकता एवं क्रांति लाने एवं रक्तदान शिविर आयोजित करने के लिए बमेन्द्र को एवं ग्रामीण क्षेत्र हसपुरा में रक्तदान का अलख जगाने,युवाओं को जागरूक कर रक्तदान कराने के लिए विजेता एवं अनीश को मैडल,प्रशस्ति पत्र एवं मोमेंटो देकर सम्मानित किया गया। उत्तर प्रदेश के सोनभद्र जिलांतर्गत दुद्धीनगर की संस्था प्रगति फाउंडेशन द्वारा द्वितीय अंतरराष्ट्रीय रक्तक्रांतिवीर सम्मान समारोह का आयोजन किया गया था।इस कार्यक्रम में भारत एवं नेपाल के अलग-अलग प्रांतों से आए रक्तसेवा में योगदान एवं सेवा के लिए 100 रक्तसेवकों एवं रक्त सेविकाओं को सम्मानित किया गया।आयोजित कार्यक्रम में बिहार, झारखंड,पश्चिम बंगाल,उड़ीसा,तेलंगाना, उत्तर प्रदेश,मध्य प्रदेश,गुजरात,महाराष्ट्र सहित अठारह राज्यों एवं पड़ोसी देश नेपाल के रक्त सेवक एवं सेविकाओं ने भाग लिया।कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि स्थानीय विधायक ने कहा की हौसला अफजाई के लिए देश एवं विदेश के रक्त सेवक एवं सेविकाओं को सम्मानित

किया गया। कहा आपलोग समाज के धरोहर एवं युवाओं के लिए प्रेरणा हैं।आपलोगों के द्वारा किया जा रहा जीवन रक्षक कार्य काफी सराहनीय है।रक्तसेवक बमेंद्र ने बताया कि रक्तदान ही एक ऐसी सेवा है जो निस्वार्थ रूप से किया जाता है। इस सम्मान का श्रेय पथ प्रदर्शक के सभी रक्तदाताओं को जाता है जिनके सहयोग से समय-समय पर रक्तदान शिविर का आयोजन किया जाता है एवं जरूरतमंदों को रक्त उपलब्ध कराया जाता है। औरंगाबाद की चर्चित स्वयंसेवी संस्था पथ प्रदर्शक के सचिव बमेंद्र कुमार सिंह लगातार रक्तदान के प्रति युवाओं को जागरुक कर उनसे रक्तदान कराते हैं।इस अवसर पर स्थानीय रक्तदाता सहित भारत और नेपाल के सैकड़ों रक्तसेवक एवं संस्था के परिवार उपस्थित थे।

जिला विधिक सेवा प्राधिकार के तहत मजदूर दिवस के आलोक में जागरुकता कार्यक्रम आयोजित किया गया

रिपोर्ट - प्रमोद कुमार सिंह

औरंगाबाद :- जिला विधिक सेवा प्राधिकार के तहत मजदूर दिवस के आलोक में जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया।

जिसके तहत जिले के ग्राम धर्मपुर और कर्मा भगवान में कार्यक्रम आयोजित किया गया ' कार्यक्रम में वक्ताओं ने कहा कि देश के निर्माण में मजदूर और श्रमिकों का सबसे ज्यादा योगदान होता है ' अगर देश आद्यौगिक रूप से विकाश करता है तो उसमें श्रमिकों का योगदान है वहीं देश में कृषि उत्पादों में आत्म निर्भर बनाना है तो किसान के रूप में कार्य करने वाले श्रमिक का योगदान होता है ' देश के विकास में श्रमिकों के योगदान को देखते हुए कई कानूनों का निर्माण किया गया है जिससे कि श्रमिकों के अधिकारों का कोई हनन नहीं कर सके ' जिसमें फैक्ट्री अधिनियम, न्यूनतम मजदूरी अधिनियम, जैसे कई कानून बने हैं

इसके अतिरिक्त श्रमिकों के अधिकार के हनन कोई नहीं करे और श्रमिकों के हितों की रक्षा हो इसके लिए श्रम न्यायालय की स्थापना की गई है और यह लगभग प्रत्येक जिले में कार्यरत रहता है ' इसके अतिरिक्त अगर श्रमिकों को कोई भी समस्या हो तो जिला विधिक सेवा प्राधिकार उन्हें उनके समस्याओं के निराकरण कराने में हर संभव विधिक सहायता उपलब्ध कराता है ' इसके साथ साथ प्राकृतिक आपदाओं से बचने और उसके प्रति जागरूक रहने पर लोगों को जागरूक किया गया 'इसके अतिरिक्त कार्यक्रम में उपस्थित लोगों को उनके कई अधिकार देश के प्रति कर्तव्य को लेकर जागरूक किया गया ' कार्यक्रम में जिला विधिक सेवा प्राधिकार के द्वारा उपलब्ध कराई जाने वाली सुविधाओं जैसे मुफ्त विधिक जानकारी, योग्य व्यक्तियों को मुफ्त अधिवक्ता के माध्यम से उनके वाद में बचाव, आगामी 10 मई को आयोजित होने वाली लोक अदालत के संबंध में विस्तृत जानकारी ताकि वे अपने वाद को समाप्त कर सकें. जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर लोगों को जानकारी उपलब्ध कराया गया ' जहां धर्मपुर में मुख्य कानूनी बचाव अधिवक्ता युगेश किशोर पाण्डेय, उप मुख्य कानूनी बचाव अधिवक्ता अभिनन्दन कुमार, के साथ साथ अधिवक्ता रौशन कुमार , अधिवक्ता मृत्युंजय कुमार के साथ अर्द्ध विधिक स्वयं सेवक विनय कुमार ने भाग लिया वही कर्मा भगवान में उप मुख्य कानूनी बचाव अधिवक्ता मुकेश कुमार सहायक कानूनी बचाव अधिवक्ता चन्दन कुमार के साथ साथ अर्द्ध विधिक स्वयं सेवक नरेंद्र कुमार ने भाग लिया '

पीएनबी गोह शाखा से स्थानांतरित तीन अधिकारियों को दी गई भावभीनी विदाई

रिपोर्ट - अमरेन्द्र कुमार सिंह

गोह (औरंगाबाद)पंजाब नेशनल बैंक, गोह शाखा से स्थानांतरित तीन अधिकारियों पुष्पा कुमारी, मुकेश कुमार सिंह और गौरव कुमार झ को विदाई देने हेतु एक भावभीन समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर बैंक के ग्राहकों, ग्रामीण क्षेत्रों के सीएसपी संचालकों और गणमान्य नागरिकों ने मिलकर इन अधिकारियों के उज्जवल भविष्य की कामना की। समारोह के दौरान तीनों अधिकारियों को शॉल ओढ़ाकर व स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया। विदाई समारोह में मौजूद सभी लोगों ने यह साझा किया कि ये तीनों अधिकारी सदैव ग्राहकों की समस्याओं का त्वरित समाधान करते थे और बैंकिंग अनुभव को सहज बनाते थे। शाखा प्रबंधक श्री मनीष कुमार ने अपने वक्तव्य में कहा कि इन अधिकारियों की कमी निश्चित रूप से ग्राहक सेवा को प्रभावित करेगी, लेकिन उनकी कार्यशैली और व्यवहार हमेशा प्रेरणा का स्रोत बने रहेंगे।

इस अवसर पर कृषि अधिकारी श्री रविभूषण कुमार सहित अनेक विशिष्ट अतिथि उपस्थित थे, जिनमें कृष्णा कुमार, तौसीफ आलम, दीपक कुमार, राजेश कुमार, नितेश नंदन, विंध्याचल कुमार, सीएसपी संचालक इंदल कुमार, सुजीत कुमार, मोहन कुमार, अफजल हुसैन, रवि कुमार, दीपक पासवान, अजय कुमार, टिंकू कुमार एवं जीविका दीदी अनीता कुमारी शामिल रहीं। समारोह का माहौल भावनात्मक एवं आत्मीयता से परिपूर्ण रहा, जहाँ सभी ने अपने प्रिय अधिकारियों को भविष्य की शुभकामनाएँ दीं।

पूर्व सांसद वीरेन्द्र कुमार सिंह का नबीनगर विधानसभा क्षेत्र में लगातार जारी है ग्राम जन संपर्क यात्रा

रिपोर्ट - प्रमोद कुमार सिंह

औरंगाबाद। बिहार की विकास योजनाओं और कार्यक्रमों का अनुसरण आज पूरा देश कर रहा है। बेटियों को साइकिल, पोशाक और छात्रवृत्ति, महिलाओं को नौकरी में 33 फीसदी आरक्षण, हर घर जल का नल, हर घर को बिजली सहित अन्य क्षेत्रों में किये गये विकास कार्यों को केंद्र व दूसरे राज्यों की सरकारें अपना रही हैं। बिहार में वर्ष 2006 से पहले स्वयं सहायता समूहों की स्थिति काफी खराब थी। आज जीविका दीदियां कहां से कहां पहुंच गई हैं। खुद रोजगार से जुड़कर अन्य लोगों के लिए रोजगार का अवसर प्रदान कर रही हैं। बिहार की तर्ज पर ही केंद्र ने आजीविका शुरू की है। बिहार की तकदीर बदलने में जीविका दीदियों का काफी हाथ है। आज बिहार खुशहाल बन रहा है। अगला लक्ष्य बिहार को विकसित राज्य बनाने का है। केंद्र की सरकार भी बिहार को विकसित

राज्य बनाने में मदद कर रही है। केंद्र ने हाल ही में जो बजट पेश किया है, उससे बिहार को विकास में मदद मिलेगी। यह बातें औरंगाबाद के पूर्व सांसद सह नबीनगर के पूर्व विधायक वीरेन्द्र कुमार सिंह ने रविवार को ग्राम जन संपर्क यात्रा के दौरान कही। नबीनगर के प्रखंड अध्यक्ष सह बीस सूत्री अध्यक्ष कमलेश कुमार सिंह ने बताया कि पूर्व सांसद नबीनगर विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत बेलाई पंचायत में ग्राम जन संपर्क यात्रा किए। उन्होंने देवराज बीघा, चिरैली, बाना बीघा, पोखराहां, फेसरा, बड़वान, पोखराही, पांती, मोगलानी कर्मा, बनराही, बेलाई, अमौना, खिरी दयाल, भटवा भगली, बसडीहा, दानी बिगहा, कुशा पाण्डेय बीघा, ईटवा एवं दुखन बीघा, नोनिया बीघा गांव में ग्राम जन संपर्क यात्रा किया। इस दौरान पूर्व सांसद ने वहां के ग्रामीणों से बातचीत की और उनकी समस्याओं को सुना। साथ ही समस्या का समाधान करने का भी आश्वासन दिया। वहीं जगहझजगह ग्रामीणों ने भी पूर्व सांसद का माला पहना कर स्वागत किया। यात्रा में जिला उपाध्यक्ष सह प्रखंड बीस सूत्री सदस्य सूर्यवंश सिंह, पूर्व विधायक प्रतिनिधि रामेश्वर सिंह, जिला उपाध्यक्ष सह बीस सूत्री सदस्य सुरेंद्र कुमार सिंह, सरपंच संघ के अध्यक्ष राकेश कुमार सिंह, जदयू युवा नेता रंजीत सिंह, पंचायत अध्यक्ष अनिल कुमार सिंह, प्रखंड बीस सूत्री सदस्य महावीर कुशवाहा, उप सरपंच प्रमोद सिंह, ओम प्रकाश सिंह, बिगु सिंह, ललन सिंह, अमेरिका साव, रामजन्म सिंह, रविंद्र सिंह, जालंधर सिंह, फेकन राम, गुड्डू राम, सुनील सिंह, विजय सिंह आदि उपस्थित रहे। पूर्व सांसद की ग्राम जन संपर्क यात्रा को लेकर ग्रामीणों में खासा उत्साह देखा जा रहा है।

शराब के साथ युवक गिरफ्तार, 84 लीटर महुआ बरामद

रिपोर्ट - अमरेन्द्र कुमार सिंह

गोह(औरंगाबाद) बंदेया थाना क्षेत्र अंतर्गत ग्राम झीकटिया में पुलिस को एक बड़ी सफलता मिली है। शराब तस्करी में संलिप्त एक युवक को भारी मात्रा में अवैध शराब के साथ गिरफ्तार किया गया है। गिरफ्तार युवक की पहचान श्रीनिवास कुमार एक स्प्लेंडर मोटरसाइकिल पर 84 लीटर महुआ शराब लेकर जा रहा था, जिसे पुलिस ने गुप्त सूचना के आधार पर रोका और तलाशी के दौरान शराब बरामद की। आरोपी के खिलाफ संबंधित धाराओं में मामला दर्ज कर आगे की कार्रवाई की जा रही है।

दिल्ली काव्य पाठ कर लौटे कवि को किया गया सम्मानित

नन्दकिशोर दास

बेगूसराय ब्यूरो। काव्य पाठ के बाद दिल्ली से बेगूसराय लौटे कवि मिन्टू कुमार झा का सम्मान समारोह आयोजित कर उन्हें सम्मानित किया गया। इस समारोह में कवि मिन्टू कुमार झा को साहित्यिक योगदान के लिए सम्मानित किया गया। बताते चलें कि जिले के वीर रस के युवा कवि मिन्टू कुमार झा को बेगूसराय आगमन पर जेपी सेनानी व शहीद सुखदेव सिंह समन्वय समिति की ओर से सभागार में भव्य स्वागत किया गया। सम्मानित करने वालों में जेपी सेनानी के प्रदेश अध्यक्ष अमरेंद्र कुमार सिंह ने कहा कि यह सम्मान बेगूसराय जिलेवासियों के लिए गौरव का सम्मान है। युवा कवि मिन्टू दिनकर साहित्य सम्मान से सम्मानित होकर सम्पूर्ण जिले को गौरवान्वित किया है। मिन्टू कुमार झा ने कहा कि हर घर में दिनकर है, उन्हें प्रोत्साहन की जरूरत है। दिनकर साहित्य सम्मान का श्रेय मिन्टू ने अपने पिता स्व. चंद्रदेव झा को दिया। बधाई देने वालों में जिलाध्यक्ष राजेंद्र महतो, महिला सेल का सचिव सुनीता देवी, डॉ. महेश चंद्र चौरसिया, राजा कुमार आदि शामिल हैं।

क्या सुप्रीम कोर्ट 'वक्फ संशोधन अधिनियम - 2025' को अवैध घोषित कर सकता है ?

>> विचार

“ हम सबों को यह जानना चाहिए कि इसी देश में शाहबानो प्रकरण में जब सुप्रीम कोर्ट ने शाहबानो को तलाक की अवधि में भी उनके शौहर द्वारा मासिक भत्ता दिए जाने का फैसला सुनाया था । इस फैसले के विरोध में संपूर्ण देश भर में जोरदार आंदोलन हुआ था। आंदोलन को देखते हुए तत्कालीन राजीव गांधी की सरकार को सुप्रीम कोर्ट के उक्त आदेश के विरुद्ध एक नया संशोधित बिल लोकसभा और राज्यसभा में लाना पड़ा था। लोकसभा और राज्यसभा से यह संशोधित बिल पारित होने के बाद राष्ट्रपति द्वारा उक्त कानून को मंजूरी मिली थी । तब सुप्रीम कोर्ट द्वारा दिया गया वह फैसला निरस्त हुआ था। और देश में चल रहे आंदोलन समाप्त हो पाया था।

विजय केसरी

वक्फ संशोधन अधिनियम - 2025 के विरोध में सुप्रीम कोर्ट में 70 से अधिक याचिकाएं दाखिल की गई ,जिसे सुप्रीम कोर्ट ने स्वीकार भी कर लिया। याचिका कर्ताओं की दलीलें सुनने के बाद सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र सरकार को निर्देश दिया कि फिलहाल केंद्रीय वक्फ परिषद और राज्य वक्फ बोर्डों में कोई नई नियुक्ति न की जाए। यह आदेश वक्फ संशोधन अधिनियम 2025 को चुनौती देने वाली याचिकाओं पर सुनवाई के दौरान सुप्रीम कोर्ट ने दिया। सुप्रीम कोर्ट के उक्त आदेश का निहितार्थ यह है कि वक्फ संशोधन अधिनियम - 2025 एक तरह से एक अवैध अधिनियम है। इसलिए इस पर रोक लगाई गई है। अब सवाल यह उठता है कि क्या सुप्रीम कोर्ट को देश की सबसे बड़ी पंचायत लोकसभा और राज्यसभा द्वारा पारित तथा राष्ट्रपति की मंजूरी के बाद किसी कानून को अवैध घोषित करने का अधिकार है? सुप्रीम कोर्ट के उक्त निर्देश से विधायिका और न्यायपालिका पूरी तरह आमने सामने आ गए हैं ।यह किसी भी सूरत में उचित नहीं है। विधायिका और न्यायपालिका की टकराहट से देश में एक असमंजस की स्थिति बन गई है ।देश भर में यह भी सवाल उठ रहे हैं कि लोकसभा और राज्यसभा तथा राष्ट्रपति की मंजूरी के बाद क्या सुप्रीम कोर्ट को उक्त कानून के विरोध में याचिकाओं को स्वीकार करने का अधिकार है ? अगर देश में सुप्रीम कोर्ट द्वारा ऐसा किया गया है, तब सवाल यह उठता है कि क्या यह अधिकार उसे भारत का संविधान ने दिया है? भारत के संविधान के अनुसार विधायिका व न्यायपालिका दोनों एक संवैधानिक संस्था हैं ,जो संविधान के अनुसार अपने-अपने कानून सम्मत कर्तव्यों का निर्वहन से बंधे हुए हैं ।न्यायपालिका और विधायिका दोनों के संबंध में भारत के संविधान में उन दोनों के अधिकार और कर्तव्यों पर बहुत ही सारगर्भित ढंग उल्लेख है। अब सवाल यह उठता है कि देश की सबसे बड़ी पंचायत लोकसभा और राज्यसभा ने जिस कानून को बहुमत के आधार पर पारित कर दिया तथा राष्ट्रपति की मंजूरी के बाद वक्फ संशोधन अधिनियम 2025 के

अधिकारों पर रोक लगाकर सुप्रीम कोर्ट ने किस संवैधानिक कर्तव्य का निर्वहन किया है? इसकी चर्चा आज संपूर्ण देश भर में हो रही है। संभवत यह देश का पहला ऐसा मामला है, जिस पर सुप्रीम कोर्ट ने लोकसभा और राज्यसभा द्वारा पारित कानून पर रोक लगाई है। हम सबों को यह जानना चाहिए कि इसी देश में शाहबानो प्रकरण में जब सुप्रीम कोर्ट ने शाहबानो को तलाक की अवधि में भी उनके शौहर द्वारा मासिक भत्ता दिए जाने का फैसला सुनाया था । इस फैसले के विरोध में संपूर्ण देश भर में जोरदार आंदोलन हुआ था। आंदोलन को देखते हुए तत्कालीन राजीव गांधी की सरकार को सुप्रीम कोर्ट के उक्त आदेश के विरुद्ध एक नया संशोधित बिल लोकसभा और राज्यसभा में लाना पड़ा था। लोकसभा और राज्यसभा से यह संशोधित बिल पारित होने के बाद राष्ट्रपति द्वारा उक्त कानून को मंजूरी मिली थी । तब सुप्रीम कोर्ट द्वारा दिया गया वह फैसला निरस्त हुआ था। और देश में चल रहे आंदोलन समाप्त हो पाया था। यह सब करने का अधिकार भारत का संविधान ने विधायिका को प्रदान किया था। अगर भारत का संविधान लोकसभा और राज्यसभा को यह अधिकार नहीं दिया होता, तब सुप्रीम कोर्ट द्वारा शाहबानो प्रकरण में दिए गए फैसले के बाद जो देश भर में अराजकता की स्थिति उत्पन्न हो गई थी, उससे निजात मिल पाती । भारत के संविधान के अनुसार न्यायपालिका को विधायिका द्वारा निर्मित कानून को चुनौती अथवा अवैध घोषित करने का अधिकार नहीं है। सुप्रीम कोर्ट लोकसभा - राज्यसभा और राष्ट्रपति की मंजूरी के बाद जो कानून अस्तित्व में आते हैं, उसका पालन करना है न कि उसे अस्वीकार करना है।जैसा कि शाहबानो प्रकरण में हुआ था। भारत एक जनतांत्रिक और धर्मनिरपेक्ष देश है। जनता द्वारा चुने गए प्रतिनिधि ही देश का संचालन करते हैं ।अर्थात देश का संचालन विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका के हाथों संपन्न होता है। भारत जैसे विशाल जनतांत्रिक देश के लिए विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका सबसे बड़ी संस्था है।इसके साथ ही हम सबों को यह समझना होगा कि जनता द्वारा चुनी गई विधायिका देश की सबसे बड़ी संस्था होती है। जिस तरह सुप्रीम कोर्ट ने वक्फ संशोधन अधिनियम 2025 के विरोध में याचिकाओं को स्वीकार किया है, इससे प्रतीत होता है कि सुप्रीम कोर्ट विधायिका द्वारा निर्मित कानून को मानने से इनकार कर रहा है ? यह बड़ा अहम सवाल है। इस विषय पर देश के तमाम कानूनविदों को गंभीरता पूर्वक विचार करने की जरूरत है। सुप्रीम कोर्ट में वक्फ संशोधन अधिनियम 2025 पर सुनवाई के दौरान सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने अदालत से केंद्र की ओर से प्रारंभिक जवाब दाखिल करने के लिए एक सप्ताह का समय मांगा।? जिसे सुप्रीम कोर्ट ने स्वीकार भी कर लिया। 5 मई को भारत सरकार को सुप्रीम कोर्ट में वक्फ संशोधन अधिनियम 2025 के औचित्य के पक्ष में अपनी बातों को रखना है। सुप्रीम कोर्ट के उक्त निर्देश पर केंद्र सरकार ने वक्फ संशोधन अधिनियम 2025 को चुनौती देने वाली याचिकाओं पर सुप्रीम कोर्ट में जवाब दाखिल किया और कहा कि पिछले सौ वर्षों से उपयोगकर्ता द्वारा वक्फ को केवल पंजीकरण के बाद ही मान्यता दी जाती है, मौखिक रूप से नहीं। इसलिए, संशोधन जरूरी था। केंद्र सरकार ने कहा कि वक्फ परिषद और वक्फ बोर्ड में 22 सदस्यों में से अधिकतम दो गैर-मुस्लिम होंगे, यह एक ऐसा उपाय है, जो समावेशिता का प्रतिनिधित्व करता है । वक्फ के प्रशासन में हस्तक्षेप नहीं करता है। केंद्र ने कहा कि जानबूझकर यह गलत तरीके से वक्फ संपत्तियों के रूप में उल्लिखित सरकारी भूमि की पहचान राजस्व रिकॉर्ड को सही करने के लिए है।यह संशोधित अधिनियम सरकारी भूमि को किसी भी धार्मिक समुदाय से संबंधित भूमि नहीं माना जा सकता है। वहीं दूसरी ओर केंद्र सरकार ने सुप्रीम कोर्ट में दाखिल जवाब के जरिए वक्फ कानून को चुनौती देने वाली याचिकाओं को खारिज करने की मांग की है। केंद्र सरकार ने अपने जवाब में कहा है कि सुप्रीम कोर्ट किसी भी कानून के प्रावधान पर आंशिक रूप से अंतरिम रोक नहीं लगा सकती है। न्यायिक समीक्षा करते हुए पूरे कानून पर रोक लगानी होती है। इसके अलावा ये भी माना जाता है कि संसद ने जो कानून ज्वाइंट पार्लियामेंट्री कमेटी के सुझावों पर बनाया है, वह सोच समझकर बनाया होगा। वक्फ मुसलमानों की कोई धार्मिक संस्था नहीं है। आगे केंद्र सरकार ने सुप्रीम कोर्ट में कहा कि वक्फ संशोधन कानून के मुताबिक मुतवल्ली का काम धर्म निरपेक्ष होता है न कि धार्मिक। ये कानून निर्वाचित जन प्रतिनिधियों की भावनाओं को परिलक्षित करता है।इसे बहुमत से इसे पारित किया गया है।इस बिल को पारित करने से पहले संयुक्त संसदीय समिति की 36 बैठकें हुईं और 97 लाख से ज्यादा हितधारकों ने सुझाव और ज्ञापन दिए। समिति ने देश के दस बड़े शहरों का दौरा किया और जनता के बीच जाकर उनके विचार लिए गए। तब जाकर वक्फ संशोधन अधिनियम 2025 का ड्राफ्ट तैयार हुआ।

आज 5 मई को देश की सबसे बड़ी अदालत सुप्रीम कोर्ट को वक्फ संशोधन अधिनियम 2025 के औचित्य पर फैसला लेना है ।भारत सरकार ने अपनी ओर से सुप्रीम कोर्ट में जवाब दाखिल कर दिया है।वक्फ संशोधन अधिनियम 2025 के विरुद्ध में याचिका कर्ताओं ने भी अपनी ओर से सारी बातों को अपने अपने दस्तावेजों के जरिए सुप्रीम कोर्ट के सुपुर्द कर दिया है । सुप्रीम कोर्ट को वक्फ संशोधन अधिनियम 2025 पर फैसला करना एक अग्नि परीक्षा के समान होगा । सुप्रीम कोर्ट के सामने वक्फ संशोधन अधिनियम 2025 के विरोध में याचिका कर्ताओं के दस्तावेज है तो दूसरी ओर जॉइंट पार्लियामेंट द्वारा पारित वक्फ संशोधन कानून 2025 है, दोनों को ध्यान में रखकर फैसला लेना है ।?अब देशवासियों को देखना यह है कि सुप्रीम कोर्ट वक्फ संशोधन अधिनियम 2025 को अवैध घोषित करती है अथवा याचिकाकर्ताओं के दस्तावेजों को खारिज करती है

संपादकीय

गुस्सा सही लेकिन निशाना गलत

पहलगाम आतंकी हमले और उसमें जान गंवाने वालों के परिजनों का दुख समूचा देश महसूस कर रहा है और आतंकियों के खिलाफ सबमें आक्रोश है। सभी यही चाहते हैं कि आतंकवादियों और उन्हें संरक्षण देने वालों के विरुद्ध सख्त से सख्त कार्रवाई हो। मगर व्यापक स्तर पर ऐसी भावनाएं अगर अनियंत्रित होने लगें और उसकी मार ऐसे लोगों पर पड़ने लगे, जिनका आतंकवाद से कोई लेना-देना न हो, तो वाजिब दुख और आक्रोश की दिशा भटक जाना स्वाभाविक है। पहलगाम आतंकी हमले के बाद आक्रोश के नतीजे में एक अफसोसनाक प्रतिक्रिया यह देखी गई कि कई जगहों पर बिना किसी वजह के मुसलिम पहचान वाले लोगों को उनका नाम पूछ कर निशाना बनाया गया, उनके साथ मार-पीट गई या उनके व्यवसाय को नुकसान पहुंचाया गया। यह न केवल भावुकता के दिशाहीन हो जाने का सबूत, बल्कि देश की कानून-व्यवस्था के सामने एक गंभीर चुनौती भी है। सवाल है कि क्या इस तरह की प्रतिक्रिया देश की लोकतांत्रिक परंपरा के सामने चुनौती नहीं खड़ी कर रही है। पहलगाम हमले में जान गंवाने वाले लेफ्टिनेंट विनय नरवाल की पत्नी ने अपने पति के लिए न्याय और आतंकियों के लिए सजा सुनिश्चित करने की मांग जरूर की है, लेकिन उन्होंने सिर्फ आक्रोश की वजह से निदोष लोगों को निशाना बनाने और नफरत भरे बयान देने की प्रवृत्ति पर अपनी आपत्ति जाहिर की। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में लोगों से सांप्रदायिक सौहार्द बनाए रखने और मुसलमानों या कश्मीरियों को निशाना न बनाने तथा सिर्फ शांति की अपील की। अपने ऊपर दुख का पहाड़ टूटने के बावजूद उन्होंने जिस तरह अपनी संवेदना और अपने धैर्य को संतुलित बनाए रखा, वह मानवीय मूल्यों के प्रति उनकी आस्था को दर्शाती है। जम्मू-कश्मीर में पिछले कई दशक से आतंकवादियों ने जो किया है, उसका मुकम्मल और ठोस हल निकालने की जरूरत है, चाहे इसके लिए कानूनी दायरे में हर स्तर पर सख्ती बरतनी पड़े। मगर आतंकियों की हरकतों की प्रतिक्रिया में अगर आम लोग उत्तेजना में निदोष नागरिकों के खिलाफ अराजक होने लगें, तो यह न केवल मानवीय संवेदनाओं और मूल्यों के विपरीत होगा, बल्कि देश के लोकतांत्रिक, धर्मनिरपेक्ष और सौहार्द की परंपरा को भी नुकसान पहुंचाएगा।

वैश्विक शांति में आतंकवाद एक बड़ा अवरोध

संजीव

समग्र रूप से वैश्विक स्तर पर देखें तो आतंकवाद कई देशों के लिए बड़ा नासूर बन चुका है। भारत में पहलगाम घटना को लिया जाए तो निदीष 27 भारतीय पर्यटकों की निर्मम हत्या इसका एक बड़ा उदाहरण है वैश्विक परिपेक्ष में देखें तो वैश्विक शांति के लिए आतंकवाद बहुत बड़ा अवरोध और बड़ी रुकावट है इसका स्थाई समाधान निकाला जाना चाहिए अन्यथा मानवता कराहने लगेगी और ऐसे ही निदीष मासूम नागरिकों की हत्या होती रहेगी इनके विरुद्ध कडे से कड़ा कदम उठाकर इनकी जड़े ही खत्म कर देनी चाहिए और आतंकवादियों को चुन चुन कर मारा जाना चाहिए।इसराइल हमास युद्ध किसकी एक बड़ी कड़ी है और अब भारत सरकार भी पाकिस्तान में बैठे आतंकवादियों के साथ उनके पालनहारों को भी खत्म करने में लगी हुई है। आतंकवाद एक मानसिक विकृति की विचारधारा है, जिसके द्वारा हिंसक कार्यों और गतिविधियों से जनमानस अशांति और भय की स्थापना करके अपने लक्ष्य की प्राप्ति का प्रयास करना होता है। जिससे किसी भी क्षेत्र में आधिपत्य का अधिकार प्राप्त करने के लिए हिंसा और आतंक का सहारा लेकर जनमानस में अशांति का वातावरण निर्मित करने अपने मंसूबे पूरे कर आर्थिक सामाजिक और राजनैतिक विध्वंस का तांडव मचाना होता है। कुछ व्यक्तियों के समूह द्वारा संचालित मानव विरोधी गतिविधियां ही हैं जो कि समाज के विरुद्ध लूट, अपहरण, बम विस्फोट,हत्या जैसे जघन्य अपराधों को जन्म देती है। आतंकवाद मूलतः धार्मिक, राजनीतिक, सामाजिक परिवेश लिए हुए होता है। भारत में आतंकवाद धार्मिक और राजनीतिक ज्यादा परिलक्षित हुआ है। भारत में कश्मीर, लद्दाख, असम मैं विभिन्न अलगाववादी समूह द्वारा हिंसक अपराधिक कृत्य कर लोगों को भयभीत तथा पलायन करने पर

मजबूर करने का कृत्य राजनीतिक आतंकवाद ही है। अलकायदा, लश्कर-ए-तैयबा ,जैश-ए-मोहम्मद जैसे संगठन धार्मिक कट्टरता की भावना से अपराध को अंजाम देते हैं। देश में नक्सलवाद ने छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, मध्य प्रदेश, झारखंड ,बिहार और पश्चिम बंगाल में अपना मौत का परचम फेहरा के रखा है। नक्सलवाद मूलतः सामाजिक क्रांतिकारी समूह द्वारा सरकार के विरोध में आमजन तथा आदिवासियों के मध्य अपनी समानांतर सरकार चलाने हेतु हिंसक घटनाएं की हैं। यह आतंकवादी ग्रुप हिंसा के द्वारा अलग अलग तरीके से आतंकवाद फैलाने का प्रयास करते हैं ,यह ज्यादातर भीड़भाड़ वाले इलाकों में जैसे रेलवे स्टेशन बस स्टैंड रेल रेल पटरियों वायुयानो का अपहरण निदोष लोगों को बंदी बनाना बैंक में डकैतियां कर समाज में अराजकता तथा वैमनस्यता फैलाने का काम करते हैं। भारत में नक्सलवाद तो मूल रूप से पश्चिम बंगाल के नक्सल वाली क्षेत्र से पनपा है, जो पूरे भारत में धीरे-धीरे फैल कर हिंसक रूप अपनाए हुए हैं। आतंकवाद केवल भारत में न होकर उसका साम्राज्य वैश्विक स्तर पर भी दुर्भाग्यपूर्ण तरीके से फैला हुआ है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आतंकवाद ने अनेक घटनाओं को जन्म देकर विश्व शांति सद्भावना की मूल कल्पना को छिन्न-भिन्न करने का प्रयास किया है। दुनिया के प्रत्येक देश में आतंकवाद किसी न किसी रूप में आज मौजूद है। आतंकवाद कहीं रंगभेद, कहीं भाषा विभेद, कहीं राजनीतिक विचारधाराओं में विरोध और कहीं रंगभेद के कारण ,नस्ली समस्या आतंकवाद का कारण बनी है। यह समस्याएं हथियारों से सुलझाने के प्रयास में अत्यंत हिंसक बन गई हैं। आतंकवाद को वृहद रूप देने में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी ने भी बड़ा साथ दिया है, आतंकवादियों, नक्सलवादियों और नस्ल वादियों के लिए रसायनिक, नाभिकीय, जैविक मानव बम जैसे आधुनिक हथियार उपलब्ध होने से यह आतंकवादी गतिविधियां और भी खतरनाक हो गई है। इसके अलावा मीडिया में इंटरनेट उपलब्धता से यह सारी सरकारी गतिविधियों की जानकारी प्राप्त हो जाती है इससे आतंकवादी और ज्यादा खतरनाक साबित हो रहे हैं। विश्व में वर्ल्ड ट्रेड सेंटर 11 सितंबर 2001 आतंकवादी हमला मानव इतिहास की सबसे क्रूर तम हमला माना जाता है। पाकिस्तान के पेशावर जिले में आर्मी स्कूल में 150 मासूम बच्चों की निर्मम हत्या भी एक क्रूर आतंकवादी घटना है' भारत में 1993 में मार्च में श्रृंखलाबद्ध बम विस्फोट इसी तरह दिसंबर 2001 में संसद भवन पर हमलावाराणसी बम विस्फोट, अहमदाबाद में बम विस्फोट, 2008 में मुंबई ताज होटल पर हमला,2016 में पठानकोट एयरबेस हमला, 2017 में अमरनाथ तीर्थयात्रियों हमला, 2019 में पुलवामा हमला आतंकवादी घटनाएं हैं जिससे मानवीय संवेदनाएं, शांति स्थापना की मूल धारणा की धज्जियां उड़ जाती है' भारत में तो नक्सलवाद भी आतंकवाद का एक वृहद रूप ले चुका है' आतंकवाद का सबसे भयानक रूप यह है की कोई भी देश यह नहीं जानता कि आतंकवाद का अगला निशाना कौन सा देश और कौन सी इमारत, रेलवे स्टेशन, वायुयान और कौन सा धार्मिक स्थल होगा' वैश्विक स्तर पर आतंकवाद के खिलाफ असुरक्षा की भावना पूरी तरह व्याप्त हो चुकी है' आतंकवाद का सबसे विस्तृत और भयानक रूप अफगानिस्तान में सरकार का तख्तापलट का ही है' वहां तालिबानी आतंकवादियों द्वारा सरकार को गिरा कर अफगानिस्तान देश पर जाकर वहां शासन स्थापित कर लिया था, और पूरी दुनिया तमाशबीन बनी रही। रूस यूक्रेन युद्ध मैं भी लाखों लोगों की आक्रमण कर हिंसक हत्या तानाशाही तथा मानसिक आतंकवाद का ही एक भयानक रूप है। पूरे विश्व में आतंकवाद के खिलाफ भारत सहित अनेक कानून बनाए गए एवं उन पर अमल भी किया जा रहा है। पर आतंकवाद को समूल नष्ट करने के लिए आतंकवादी विचारधारा को ही समूल रूप से नष्ट करना होगा, क्योंकि आतंकवाद कोई तात्कालिक कारणों से पैदा नहीं होता,यह एक घिनौनी, हिंसक आतंक पैदा करने वाली विचारधारा है। अशांति की इस विचारधारा में जन समुदाय में रोश तथा खौफ पैदा कर दिया है और यह मानवता के लिए अभिशाप की तरह व्याप्त हो गया है। जिससे विश्वव्यापी वैश्विक शांति की अवधारणा को नष्ट कर दिया है। वैसे तो पूरे विश्व में आतंकवाद के खिलाफ प्रयास किए जा रहे हैं पर हर देश के हर नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि इस विचारधारा और इनकी गतिविधियों पर नजर रख इसे समूल नष्ट करने का प्रयास किया जाना चाहिए।

(संजीव स्तंभकार, चिंतक लेखक, रायपुर)

डॉक्टरों को जेनेरिक दवाएं लिखना जरूरी हो

अरुण कुमार

सुप्रीम कोर्ट ने हाल ही एक टिप्पणी में कहा कि यदि डॉक्टरों को जेनेरिक दवाएं लिखने के लिए कानूनी रूप से बाध्य किया जाए, तो दवा कंपनियों द्वारा डॉक्टरों को महंगी और ब्रांडेड दवाएं लिखने के लिए रिश्वत देने की समस्या काफी हद तक समाप्त हो सकती है। कोर्ट ने दवा कंपनियों की अनैतिक मार्केटिंग पर तत्काल रोक लगाने के लिए दिशा-निर्देश जारी करने की आवश्यकता पर बल दिया। कोर्ट की यह टिप्पणी स्वास्थ्य क्षेत्र की दिशा में एक अहम कदम हो सकता है। यहीं नहीं, आम जनता को सस्ती और सुलभ दवाओं का भी मार्ग प्रशस्त हो सकता है। भारत में दवा उद्योग एक विशाल और जटिल क्षेत्र है, जहां दवा कंपनियां अक्सर अपने मुनाफे को बढ़ाने के लिए अनैतिक तरीकों का सहारा लेती हैं। ये कंपनियां डॉक्टरों को मुफ्त उपहार, विदेश यात्राएं, महंगे रात्रिभोज और अन्य प्रलोभन देकर अपनी ब्रांडेड दवाओं को प्रचारित करने के लिए प्रेरित करती हैं। नतीजतन, डॉक्टर कई बार मरीजों को ऐसी दवाएं लिखते हैं, जो न केवल महंगी होती हैं, बल्कि कई बार अनावश्यक भी होती हैं। इसका सीधा असर मरीजों की जेब और स्वास्थ्य पर पड़ता है। सुप्रीम कोर्ट ने इस गंभीर मुद्दे को संज्ञान में लेते हुए एक याचिका की सुनवाई के दौरान यह टिप्पणी की, जिसमें दवा कंपनियों की अनैतिक प्रथाओं को नियंत्रित करने के लिए

यूनिफॉर्म कोड ऑफ फार्मास्युटिकल मार्केटिंग प्रैक्टिसेज को कानूनी रूप देने की मांग की गई थी। जेनेरिक दवाएं, जो ब्रांडेड दवाओं का सस्ता विकल्प होती हैं, वही सक्रिय तत्व (एक्टिव इंग्रेडिएंट) रखती हैं और उतनी ही प्रभावी होती हैं। फिर भी, इनका उपयोग भारत में अपेक्षाकृत कम है, क्योंकि डॉक्टरों पर कोई बाध्यकारी कानून नहीं है। हालांकि, भारतीय मेडिकल काउंसिल ने डॉक्टरों को जेनेरिक दवाएं लिखने के लिए दिशा-निर्देश जारी किए हैं, लेकिन ये बाध्यकारी नहीं, एक स्वैच्छिक संहिता है, जिसका पालन दवा कंपनियां अपनी मर्जी से करती हैं। केंद्र सरकार ने इस मुद्दे पर एक उच्च स्तरीय समिति गठित की है, लेकिन इसकी अनुशंसाएं अभी तक सार्वजनिक नहीं की गई हैं। दवा कंपनियों की अनैतिक प्रथाएं केवल आर्थिक शोषण तक सीमित नहीं हैं, ये मरीजों के स्वास्थ्य और जान को भी खतरे में डालती हैं। महंगी दवाओं के प्रचार के कारण कई बार गरीब मरीज इलाज से वंचित रह जाते हैं। यदि जेनेरिक दवाओं को अनिवार्य किया जाए, तो न केवल दवाओं की कीमतें कम होंगी, बल्कि स्वास्थ्य सेवाएं भी अधिक समावेशी और सुलभ बनेंगी। इसके अलावा, यह कदम दवा कंपनियों और डॉक्टरों के बीच अनैतिक गठजोड़ को तोड़ने में भी मदद करेगा। सुप्रीम कोर्ट की यह टिप्पणी सरकार और नीति निर्माताओं के लिए एक स्पष्ट संदेश है कि स्वास्थ्य क्षेत्र में सुधार अब और टाला नहीं जा सकता। यह न केवल आम जनता के हित में होगा, बल्कि लाखों लोगों की जिंदगी बचाने में भी योगदान देगा।

स्वामित्वाधिकारी, मुद्रक , प्रकाशक व संपादक सरोज चौधरी द्वारा न्यू लोक भारती प्रेस, वार्ड 10 कोकर औद्योगिक क्षेत्र कोकर रांची से मुद्रित तथा ई -37, अशोक विहार रांची से प्रकाशित, संस्थापक संपादक :स्व. राधाकृष्ण चौधरी
प्रबंध संपादक : अरूण कुमार चौधरी, फोन: 9471170557/08084674042, ई-मेल : Divyadinkarranchi @ gmail.com,RNI Regd. No. : JHAHIN/2013/54373Postal Registration No. : RN-11/2012)

संक्षिप्त समाचार

223 बच्चों को पिलाई गई स्वर्ण प्राशन दवा की खुराक

नन्दकिशोर दास

बेगूसराय ब्यूरो। राजकीय अयोध्या शिव कुमारी आयुर्वेद महाविद्यालय बेगूसराय में रविवार को स्वर्ण प्राशन अभियान के तहत कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें 223 बच्चों को स्वर्ण प्राशन के दवा की खुराक पिलाई गई।प्राचार्य डॉक्टर श्रीनिवास त्रिपाठी के निर्देशन में चल रहे इस प्रोग्राम के लिए रविवार को भी महाविद्यालय खोला गया। प्राचार्य डॉक्टर श्रीनिवास त्रिपाठी ने बताया कि स्वर्ण प्राशन अभियान के तहत पुष्य नक्षत्र के दिन बच्चों को पिलाई जाती है। इसीलिए रविवार को भी महाविद्यालय खोलकर रखा गया। उन्होंने इसे महत्वाकांक्षी अभियान बताते हुए कहा कि महाविद्यालय में स्वर्ण प्राशन के तहत पिलाई जाने वाली दवा के लिए बच्चों को जुटने वाली भारी भीड़ ही इसकी सफलता की कहानी कहती है। उन्होंने कहा कि यहां दवा की खुराक से बच्चे स्वस्थ रहते हैं। स्वर्ण प्राशन अभियान की डॉक्टर किश्वर सुल्ताना के नेतृत्व में बच्चों को दवा पिलाई गई। संपूर्ण कार्यक्रम का संयोजन स्वर्ण प्राशन प्रभारी डॉक्टर दिलीप कुमार वर्मा ने किया। इस अवसर पर दवा पिलाने में रेनू सिंहा, डेजी कुमारी, डाली सिन्हा, काजल कुमारी, रंजना कुमारी, अनिशा कुमारी, मोहम्मद जहीर आलम, पंकज कुमार सिंह आदि ने इस स्वर्णप्रशन अभियान के संचालन में मदद की।

मॉर्निंग वॉक के दौरान 25 फीट गहरे गड्ढे में गिरी महिला

प्रियंका कुमारी

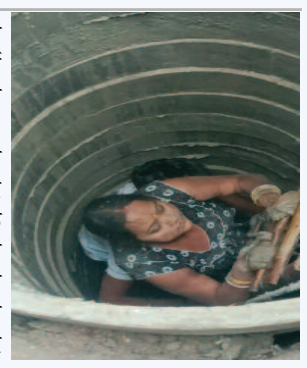

बखरी, बेगूसराय। परिहारा थाना क्षेत्र के परिहारा गांव वार्ड नंबर-7 में रविवार को सुबह मॉर्निंग वॉक के दौरान एक महिला 25 फीट गहरे गड्ढे में गिर गई। घायल महिला की पहचान संतोष पोद्दार की 35 वर्षीया पत्नी सोनी देवी के रूप में हुई है। जिन्हें गंभीर हालत में बखरी पीएचसी में भर्ती कराया गया है।परिजनों के अनुसार, सोनी देवी सुबह टहलने निकली थी और घर से थोड़ी दूर जाने पर अंधेरा होने के कारण शौचालय निर्माण के लिए खोदे गए गड्ढे में गिर गई। महिला के शोर मचाने पर गांव के लोग मौके पर पहुंचे। लेकिन गड्ढे में उतरने की हिम्मत कोई नहीं कर रहा था। इस दौरान गांव के मनीष कुमार ने साहस का परिचय देते हुए सीढ़ी के सहारे गड्ढे में उतरकर महिला को रस्सी की मदद से बाहर निकाला।स्थानीय लोगों ने बताया कि शनिवार को गड्ढे में सीमेंट का पाट लगाया गया था और रविवार को मिस्त्री आकर उसे ढंकने वाला था। लेकिन उससे पहले ही यह हादसा हो गया। घटना की सूचना एसडीएम सन्नी कुमार सौरव को दी गई है।

गन्ना की खेती में लागत कम और मुनाफा अधिक कमाने की किसानों को दी गई जानकारी

शकील बेग

नावकोठी, बेगूसराय। गन्ना उत्पादक किसानों की बैठक पहसारा में रविवार को आयोजित की गयी। इसकी अध्यक्षता गन्ना विकास अधिकारी रामनाथ सिंह ने की। इंजीनियरिंग हेड टीकम सिंह ने गन्ना उत्पादक किसानों को गन्ना की खेती में लागत कम तथा अधिक उत्पादन लेने की तरकीब को बताया। उन्होंने कहा कि पहले गन्ना की खेती मजदूरों के द्वारा की जाती थी, जिससे इसमें लागत अधिक तथा मुनाफा कम होता था। इसकी खेती के लिए आधुनिक यंत्र आ गया है। इसके द्वारा रोपनी, कटाई, खूटी प्रबंधन काफी कम लागत पर आसानी से हो जाती है। इस यंत्र के खरीद करने के लिए किसानों को सबसिडी भी दी जाती है। उसने बताया कि गन्ना का खेत तैयार करने में पांच हजार रुपए प्रति एकड़, हरित खाद लगाने तथा इसे खेतों में दबाने में 5 हजार रुपए प्रति एकड़, गन्ना बीजों की कटाई तथा रोपाई में 45 हजार रुपए प्रति एकड़ लागत आती है। इसके साथ यदि खीरा की खेती की जाती है तो इसके उत्पाद से होने वाले लाभांश से लागत मूल्य में कटौती हो जाती है। किसानों ने नये प्रभेद के संबंध में जानकारी चाही जो 0238 के समान उत्पादन दे, आलू के साथ गन्ना की खेती को बढ़ावा देने, कोराजन पर अनुदान देने, कैलेंडरिंग में सुधार करने, तौल सेतु का साइज बढाने का सुझाव दिया। किसानों ने ट्रैक्टर चालित यंत्र को देखा तथा इसके द्वारा किये जाने वाले कार्य के संबंध में जानकारी ली। इन पदाधिकारियों ने क्षेत्र भ्रमण कर गन्ना के खेत का मुआयना कर आवश्यक सुझाव दिया। मौके पर प्रबंधक अमित कुमार, किसानों में यशवंत कुमार, महेन्द्र यादव, नीरज कुमार, मो ताहिर, अरविंद कुमार सहित कई अन्य मौजूद थे।

महिला श्रद्धालुओं ने की बैशाखी छठ महापर्व की पूजा-अर्चना

शकील बेग

नावकोठी, बेगूसराय। प्रखंड के विभिन्न गांव में बैशाखी का पर्व धूमधाम से मनाया गया।महिलाओं ने सात्विक वस्त्र पहनकर सूर्य भगवान को जल चढ़ाते हुए प्रसाद का भोग अर्पण किया। बैशाखी छठ माह के पिछले पक्ष में पहले या दूसरे रविवार को मनाया जाता है। इस पर्व को इसलिए मनाया जाता है क्योंकि नई फसल का आगमन होता है। बैशाखी का पर्व देश के विभिन्न राज्यों में धूमधाम से मनाया जाता है। इस पर्व को मुख्य रूप से उत्तर भारत में मनाया जाता है। पंजाब और हरियाणा में इस पर्व का विशेष महत्व है। बैशाखी को कृषि उत्सव के साथ-साथ एक धार्मिक पर्व के रूप में भी देखा जाता है। सिख धर्म के लोग सिख नववर्ष के रूप में भी मनाते हैं। वहीं हिंदू धर्म के लोग भी बैशाखी पर्व को बैशाखी छठ के रूप में सदियों से मनाते आ रहे हैं। छठवर्ती महिलाओं ने रविवार के दिन नदी घाट पर जाकर फल और प्रसाद चढ़ाकर चढते सूर्य को अर्घ्य अर्पण किया। परिवार के सुख, शांति व निरोग काया की कामना की।

सारण क्रिकेट प्रीमियर लीग: युवा खिलाड़ियों को मिलेगा सुनहरा मंच

सारण सांसद रूडी की प्रेरणा से पहली बार सारण क्रिकेट प्रीमियर लीग का आयोजन

आईपीएल की तर्ज पर सारण जिला के 10 विधानसभा क्षेत्रों की 10 टीमें लेंगी भाग

छपरा वारियर्स, गरखा राइडर्स, मढ़ौरा ईगल्स, परसा लायंस, सोनपुर किंग्स, अमनौर टाइगर्स जैसी टीमें होंगी आमने-सामने

13 वर्ष या उससे ऊपर के खिलाड़ी लीग की वेबसाइट https://www.sclt20.in/ पर करा सकते हैं ऑनलाइन पंजीकरण

सितम्बर माह में राजेन्द्र स्टेडियम, छपरा में होगा टूर्नामेंट

वैभव सूर्यवंशी जैसे उभरते सितारे बन सकते हैं आने वाले कल के क्रिकेट चैंपियन

पटना , ।बिहार की धरती आज केवल राजनीति, संस्कृति और बौद्धिक समृद्धि तक सीमित नहीं रही, बल्कि अब वह खेल के क्षेत्र में भी अपनी नई पहचान गढ़ रही है। बिहार के पटना, राजगीर, बेगूसराय, भागलपुर के साथ साथ दिल्ली में भी खेलो इंडिया के बिहार संभाग का आयोजन हो रहा है। बिहार के विभिन्न जिलों में खेल की अलख जल रही है। इसी कड़ी में अब सारण जिला एक ऐतिहासिक और अभूतपूर्व आयोजन की दहलीज पर खड़ा है जिसका नाम है सारण क्रिकेट प्रीमियर लीग। सारण क्रिकेट प्रीमियर लीग टूर्नामेंट का बीजारोपण किया है सारण सांसद एवं पूर्व केंद्रीय मंत्री राजीव प्रताप रूडी ने, जिनकी दूरदृष्टि और प्रेरणा से इस प्रतियोगिता का स्वरूप आकार ले रहा है। उनका यह प्रयास सारण के उभरते युवाओं को एक सुनहरा मंच प्रदान करने की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम है, जहाँ प्रतिभा का चयन नहीं, उसका उत्सव होगा। इसमें छपरा वारियर्स, गरखा राइडर्स, मढ़ौरा ईगल्स, परसा लायंस, सोनपुर किंग्स, अमनौर टाइगर्स जैसी टीमें आमने-सामने होंगी। इस टूर्नामेंट में सारण जिले की दसों विधानसभा क्षेत्रों के नाम पर दस टीमें मैदान में उतरेंगी, जो क्रिकेट कौशल, टीम भावना और जीत के जज्बे से परिपूर्ण मुकाबले पेश करेंगी। यह आयोजन न केवल एक खेल प्रतियोगिता है, बल्कि यह सारण के युवाओं के आत्मविश्वास का उत्सव है। 13 वर्ष या उससे अधिक आयु के खिलाड़ी ऑनलाइन माध्यम से पंजीयन कर इस महायज्ञ का हिस्सा बन सकते हैं। टूर्नामेंट सितंबर माह में छपरा स्थित राजेन्द्र स्टेडियम में खेला जाएगा, जहाँ मैदान गूंजेगा छक्कों और चौकों की गूंज से, और दर्शक झूमेंगे क्रिकेट रोमांच की लय पर। इस पहल की सबसे प्रेरणादायक झलक है वैभव सूर्यवंशी जैसे युवा खिलाड़ी, जिन्होंने ग्रामीण पृष्ठभूमि से उठकर क्रिकेट की बारीकियों में महारत हासिल की है और आज इस टूर्नामेंट के माध्यम से आने वाले युवाओं के लिए प्रेरणा का प्रतीक बन रहे हैं। सारण क्रिकेट प्रीमियर लीग केवल एक प्रतियोगिता नहीं, बल्कि एक क्रांति है झ्र प्रतिभा की, परिश्रम की और पहचान की। यह आयोजन साबित करेगा कि अब बिहार का युवा न केवल देख रहा है सपने, बल्कि उन्हें साकार करने का माद्दा भी रखता है।

भैया बहनों के सर्वांगीण विकास के लिए आचार्यों को प्रशिक्षण के माध्यम से कराया जाता है ज्ञानार्जन

विभागीय बैठक में 38 शिशु विद्या मंदिर के प्रधानाचार्य ने लिया हिस्सा

जमालपुर। प्रेमानंद तिवारी सरस्वती शिशु विद्या मंदिर केशोपुर में रविवार को एकदिवसीय विभाग स्तरीय प्रधानाचार्य बैठक का आयोजन किया गया। विभागीय बैठक में मुंगेर विभाग अंतर्गत सरस्वती शिशु मंदिर तथा सरस्वती विद्या मंदिर के संचालित हो रहे कुल 38 विद्यालयों के प्रधानाचार्य ने हिस्सा लिया। बैठक का उद्घाटन जिला निरीक्षक सतीश कुमार सिंह, सचिव हरिओम मंडल, कोषाध्यक्ष लाला उमेश नारायण वर्मा, सरस्वती विद्या मंदिर के प्रधानाचार्य संजय कुमार सिंह तथा शिशु मंदिर केशोपुर के प्रधानाचार्य प्रभाष कुमार द्वारा पुष्पार्चन तथा दीप प्रज्वलन कर किया गया। विद्यालय के भैया बहनों में शामिल हंसराज, अंकिता कुमारी, माधवी कुमारी, आद्या कुमारी, श्रुति कुमारी ने गायत्री मंत्र, शांति पाठ और महामृत्युंजय मंत्र का पाठ किया। आगंतुक अतिथियों के स्वागत में अभिनन्दन गीत प्रस्तुत किया। बैठक

को संबोधित करते हुए जिला निरीक्षक सतीश कुमार सिंह ने कहा कि देश का भविष्य भैया बहनों पर निर्भर करता है। देश के भविष्य के ली भैया बहनों का सर्वांगीण विकास होना अति आवश्यक हैं। भैया बहनों के सर्वांगीण विकास के लिए विभिन्न स्तर के विद्यालय स्तरीय, संकुल स्तरीय, विभाग स्तरीय, प्रांत स्तरीय योजना बनाना और कार्यक्रम का होना अत्यंत आवश्यक हैं। बैठक में आचार्य स्थायित्व वर्ग, आचार्य कल्याण कोष तथा विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण तथा प्रतियोगिता के बारे में चर्चा वार्ता हुई। विभागीय बैठक के दूसरे सत्र के दौरान सभी 38 सरस्वती शिशु विद्या मंदिर के प्रधानाचार्य को अंग वस्त्र देकर सम्मानित किया गया। इस सत्र में संकुल सह विभिन्न संकुल के संकुल प्रमुख द्वारा अलग अलग बैठक की गई। जिसमें संकुल स्तरीय विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम और प्रतियोगिताओं की चार्चा हुई। संबोधन के क्रम में सतीश कुमार सिंह ने पाठ्यक्रम, ग्रेच्युटी, ग्रीष्मावकाश पुस्तिका, पंचपदी शिक्षण पद्धति पर चर्चा किया। उन्होंने सलाह दिया कि नवयुवक आचार्य को विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षणों में भेजा जाना चाहिए। ताकि वे अधिक से अधिक ज्ञानार्जन कर सके और भैया बहनों भी उनसे लाभान्वित हो सकें। दैनिक पाठ्योजन के बारे में बताया गया। मौके पर राकेश कुमार अम्बष्ट, जयंत चौधरी, दिनेश कुमार, ऋचा कुमारी, विमल कुमार सिंह, संगीता कुमारी, परमानंद कुमार, संजय कुमार सिंह, सुरेश कुमार वर्मा, संतोष कुमार सिंह, संतोष आनन्द, सुनीला कुमारी, इंदुला कुमारी, नूतन कुमारी, अनिल कुमार सिंह, आशुतोष कुमार सिंह, संतोष झा, साकेत कुमार सहित अन्य मौजूद थे।

स्वस्थ और सुंदर के लिए योग करने की है जरूरत: सर्वेश कुमार

नन्दकिशोर दास

बेगूसराय ब्यूरो। रविवार को सर्वोदय नगर स्थित योग संस्थान में योग शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें विधान पार्षद सर्वेश कुमार मुख्य अतिथि के रूप में भाग लिये। इस अवसर पर जेपी सेनानी व संपूर्ण क्रांति मोर्चा बिहार के अध्यक्ष व शिक्षक नेता अमरेंद्र कुमार सिंह ने कहा कि स्वास्थ्य रहने के लिए योग आवश्यक है। उन्होंने कहा कि महीने में 1 से 5 तक हर महीने में शिविर का आयोजन सुबह 7 बजे से लेकर 9 बजे तक होता है। मुख्य अतिथि विधान पार्षद सर्वेश कुमार ने कहा कि योग करने से जितना दूर रोग भागता है, उतना ही लोग सुंदर देखने में लगते हैं। क्योंकि योग से शरीर का रक्त संचार होता है। जिसके कारण लोग स्वस्थ और सुंदर लगते हैं। डॉ एके रॉय ने कहा कि महिलाओं को योग में बढ़ चढ़कर भाग लेना चाहिए। जिससे उनको स्वस्थ जीवन जीने में मदद मिलेगी। इस कार्यक्रम में पिंकी देवी, डॉ शशि भूषण सिंह शिशु विशेषज्ञ, प्रो डीपी चौधरी समाजसेवी, विश्वनाथ सिंह, राजीव सिंह, धर्मेंद्र सिंह सहित करीब 50 लोगों ने शिविर में भाग लिया।

बिहार से गुजरात के लिए श्रमिकों के लिए स्पेशल ट्रेन खोलने की तैयारी में है मोदी सरकार : कुंवर चंद्रेश

बिहार से पलायन को बढ़ावा गुजरात को विकसित बनाने के लिए पीएम मोदी ने गुजरात जाने वाली ट्रेनों पर दे रहे विशेष ध्यान

जन सुराज की सरकार आने पर बिहारी को गुजरात या अन्य राज्य में पलायन नहीं करना पड़ेगा

मुंगेर। बिहार से पलायन रोकने को लेकर लगातार अभियान चला रही जन सुराज पार्टी ने एक बार फिर पलायन के मुद्दे पर केंद्र की एनडीए सरकार और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर हमला बोला है। जन सुराज पार्टी के पूरबसराय स्थित मुंगेर जिला कार्यालय में एक प्रेस वार्ता के दौरान पार्टी के नेताओं ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के द्वारा विगत दिनों मधुबनी में बिहार के मजदूरों पर किए गए टिप्पणी को लेकर नाराजगी व्यक्त की है। पार्टी के नेता कुंवर चंद्रेश ने कहा है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी बिहार के विकास को लेकर ना तो अब तक विशेष राज्य का दर्जा दिया है और ना ही बिहार से पलायन को रोकने की दिशा में कोई ठोस योजना पर कार्य किया है। बिहार में एनडीए की सरकार हर मोर्चे पर भी फल साबित हो रही है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मधुबनी में बिहार के मजदूरों और श्रमिकों के लिए गुजरात जाने के लिए स्पेशल ट्रेनों के परिचालन को लेकर घोषणा कर यह साबित कर दिया है कि केंद्र की एनडीए सरकार और बिहार की डबल इंजन की सरकार बिहार में पलायन को बढ़ावा देना चाहती है। उन्होंने कहा कि बिहार से पलायन को बढ़ावा गुजरात को विकसित बनाने के लिए पीएम मोदी ने गुजरात जाने वाली ट्रेनों पर विशेष ध्यान दे रहे हैं। जन सुराज विचार मंच के मुंगेर जिला अध्यक्ष संतोष सहाय ने कहा कि केंद्र की मोदी सरकार द्वारा बिहार विधानसभा चुनाव से ठीक पहले जातीय जनगणना का घोषणा किया जाना पूरी तरह से चुनावी राजनीति का हिस्सा है। 2025 विधानसभा चुनाव से पहले जातीय जनगणना शुरू नहीं किया जा सकता है। जातीय जनगणना को लेकर सभी प्रक्रियाएं पूरी होने में दो से तीन सार्थक का वक्त लगेगा। चुनाव से चंद महीने पहले जातीय जनगणना का ऐलान बिहार चुनाव को जातीय रंग में रंगने की एक कोरी कल्पना है। बिहार की जनता इस जुमलेबाज सरकार के जुमले में फंसने वाली नहीं है। जन सुराज संगठन के युवा जिला अध्यक्ष ऋतुराज बसंत ने कहा कि बिहार में शराबबंदी कानून महज एक छलावा है। बिहार में शराब की दुकान बंद है लेकिन होम डिलीवरी सेवा में प्रत्येक प्रखंड में हजारों युवा डिलीवरी बॉय के रूप में काम कर रहे हैं। सरकार की इस गलत नीति के कारण बिहार के युवा शराब के अवैध कारोबार से जुड़कर अपने भविष्य को अंधकार में धकेल रहे हैं। आज शराब के अवैध कारोबार से जुड़े युवा अपराध जगत की ओर तेजी से बढ़ रहे हैं। बिना सटीक नीति के लागू शराबबंदी कानून बिहार के लिए एक काला अध्याय साबित होगा।

फुलका स्थित मुरघट पुल बना बालू और पत्थर का अवैध विक्रय केंद्र

विद्यालय से सटे पुल पर ट्रक और जेसीबी मशीन अवैध रूप से की जाती है पार्किंग

रेलवे विभाग, स्थानीय प्रशासन तथा पुलिस की मिलीभगत से नवनिर्मित पुल बना बालू और पत्थर का अवैध स्टॉक प्वाइंट

जमालपुर। एक तरफ जहां बिहार में लगातार पुल गिरने का सिलसिला जारी है तो वहीं दूसरी ओर स्थानीय प्रशासन, रेलवे विभाग तथा पुलिस की मिलीभगत से नवनिर्मित पुल को बालू और पत्थर का अवैध बिक्री केंद्र बना दिया जाता है, जिसकी सुध लेने वाला तक कोई नहीं है। मामला जमालपुर-धरहरा मुख्य मार्ग पर मुरघट नदी पर नवनिर्मित पुल से जुड़ा है जो इन दिनों बालू और पत्थर का स्टॉक प्वाइंट बना हुआ है। जमालपुर प्रखंड और धरहरा प्रखंड को जोड़ने वाली यह मुरघट पुल जमालपुर से धरहरा की ओर जाने वाली एकमात्र मुख्य सड़क के रूप में इस्तेमाल होती है। इस पुल से ठीक सटे ज्योति युगल सरस्वती शिशु मंदिर फुलका का वाटिका सेक्शन संचालित होता है।

जिसमें 5 साल तक के उम्र के बच्चे पढ़ाई करते हैं। मुरघट पुल से महज 25 मीटर की दूरी पर मध्य विद्यालय फुलका तथा उच्चतर माध्यमिक विद्यालय फुलका अवस्थित है। मध्य विद्यालय फुलका में कक्षा प्रथम से लेकर कक्षा अष्टम के छात्र-छात्राएं अध्यनरत है तो वहीं उच्चतर माध्यमिक विद्यालय फुलका में कक्षा नवम से 12वीं तक के छात्र-छात्राएं अध्यनरत हैं। बावजूद, मुरघट पुल पर बालू और पत्थर के अवैध बिक्री से जुड़े रेलवे संवेदक बच्चों के सुरक्षा को ताक पर रखकर पुल को ही अवैध रूप से कब्जा कर उसे अपना स्टॉक प्वाइंट बना लिया है।

आए दिन सड़क हादसे का शिकार होते हैं आम राहगीर व वाहन चालक

फुलका मुरघट नदी के ऊपर बने पुल पर बालू-गिट्टी माफिया द्वारा अवैध रूप से अतिक्रमण किए जाने के कारण पुल का महज एक चौथाई हिस्सा ही आम राहगीरों तथा वाहन चालकों के आवागमन के लिए उपलब्ध होता है। पुल का लगभग आधे से अधिक हिस्सा अतिक्रमण कर लिया गया है। लगभग आधे किलोमीटर तक बालू माफिया का कब्ज होने के कारण सड़क पर भी चारों ओर बालू अक्सर फैला हुआ होता है। जिससे आए दिन आम राहगीर व वाहन चालक सड़क हादसे के शिकार होते रहता है।

क्या कहना है स्थानीय सामाजिक कार्यकताओं का

सामाजिक कार्यकर्ता सह जन सुराज पार्टी के युवा जिलाध्यक्ष राकेश गोप ने कहा कि करीब एक साल से अधिक समय से सड़क को अतिक्रमण किया गया है। पुल के पास में विद्यालय होने के बावजूद अतिक्रमणकारी सभी नियम व कानून को ताक पर रखकर हादसों को दावत दे रही है।

नीतीश कुमार के विजन के आधार पर केंद्र सरकार ने जातीय जनगणना का लिया निर्णय : मुनिलाल

नीतीश कुमार की वर्षों पुरानी मांग को आखिरकार मिला सम्मान : जदयू

जमालपुर। केंद्र की मोदी सरकार द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर जातीय जनगणना कराई जाने को लेकर किए गए ऐलान के बाद एनडीए गठबंधन के नेता लगातार इसे एनडीए की बड़ी उपलब्धि बताने में जुटे हैं। जनता दल यूनाइटेड के जमालपुर प्रखंड अध्यक्ष सह प्रखंड बीस सूत्री अध्यक्ष मुनीलाल मंडल ने एक प्रेस वार्ता कर बताया कि बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के विजन को राष्ट्रीय स्तर पर लागू करने की दिशा में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अगुवाई वाली एनडीए सरकार ने एक बड़ा फैसला लिया है। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने बिहार में जातीय आधारित जनगणना कराकर जो पहल की है उसे मोदी सरकार राष्ट्रीय स्तर पर लागू कर सीएम नीतीश कुमार के विजन पर कार्य कर रही है। भारत में 74 साल बाद जातीय जनगणना की पहल किसी सरकार ने की है। जातीय जनगणना पर इंडिया गठबंधन के द्वारा क्रेडिट लिए जाने पर बिफरते हुए जदयू प्रखंड अध्यक्ष मुनीलाल मंडल ने कहा कि जातीय जनगणना पर कांग्रेस और राजद की ना सिर्फ श्रेय लेने की कोशिश है बल्कि यह पूरी तरह से हास्यास्पद है। उनका यह रवैया उनकी दोहरी नीति को भी उजागर करती है। क्योंकि जब मौका था, तब इन्होंने ही इस मुद्दे को सिरे से खारिज कर दिया था। 2014 के पहले देश में कांग्रेस की अगुवाई वाली यूपीए की सरकार थी। आज जातीय जनगणना को लेकर पीएम मोदी जी के फैसले को कांग्रेस की जीत बताने वाले लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी चाहते तो इससे पहले ही देश भर में जातीय जनगणना कर सकते थे। लेकिन उन्होंने इस दिशा में कोई पहल नहीं की थी। देश में वर्ष 1931 के बाद पहली बार केंद्र की एनडीए सरकार ने जातीय जनगणना कराने का ऐतिहासिक निर्णय लिया है। यह निर्णय लंबे समय से

सामाजिक न्याय, समान अवसर और समावेशी विकास की मांग कर रहे करोड़ों लोगों की उम्मीदों को नया आधार देगा। जातीय जनगणना से देश को सही सामाजिक-सांख्यिकीय आंकड़े प्राप्त होंगे। जिनके आधार पर नीति निर्माण, योजनाओं का लक्ष्य निर्धारण और संसाधनों का न्यायसंगत वितरण सुनिश्चित किया जा सकेगा। यह कदम न केवल वंचित और कमजोर वर्गों की पहचान को सशक्त करेगा बल्कि 'न्याय के साथ विकास' व 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास' की भावना को भी मजबूती प्रदान करेगा। नीतीश कुमार की वर्षों पुरानी मांग को आखिरकार सम्मान मिला है। जातीय जनगणना को लेकर बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने अगुवाई की, जिसे आज केंद्र सरकार राष्ट्रीय स्तर पर साकार करने में जुटे हैं। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का जल-नल योजना पूरी तरह से सफल है और बिहार विकास के पथ पर आगे बढ़ रहा है। उन्होंने आगे कहा कि जन सुराज पार्टी के नेता प्रशांत किशोर के द्वारा सीएम नीतीश कुमार की योजनाओं को लेकर जो खामियां बताई जा रही है, वह पूरी तरह से राजनीति से प्रेरित है। 2025 में बिहार में एक बार फिर एनडीए सरकार की जीत होगी और नीतीश कुमार बिहार के मुख्यमंत्री बने रहेंगे।

संक्षिप्त समाचार

विजिलेंस टीम की जांच से बरौनी रेल प्रक्षेत्र में मचा हड़कंप

दर्जनों रजिस्टर को जप्त कर ले गई विजिलेंस का टीम

नन्दकिशोर दास

बेगूसराय ब्यूरो। गुप्त सूचना पर सोनपुर मंडल के गढ़हरा-बरौनी में सीबीआई एवं विजिलेंस टीम की संयुक्त छापेमारी हुई। टीम के डीएसपी सीबीआई के नेतृत्व में छापेमारी हुई। हालांकि जांच छापेमारी से सम्बंधित बातें बताने में सभी लोग परहेज कर रहे हैं।जांच के बाद गढ़हरा-बरौनी क्षेत्र के विभिन्न कार्यालय में हड़कम्प मच गया। सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार सीनियर सेक्शन इंजीनियर समाडि गढ़हरा के कार्यालय में विजलेंस की टीम पहुंची। यहां पर टैंक वैगन मरम्मती व पार्ट्स सप्लाई कांट्रैक्ट बेसिस पर किया जाता है। मिली जानकारी के अनुसार जितना काम होता है, उतना ठेकेदार को राशि भुगतान की जाती है। बताया जाता है गढ़हरा और नारायणपुर अनंत कार्यालय का पूरा बिल कार्य मुजफ्फरपुर से होता है। इस दौरान पहुंचे जांच टीम के सदस्यों ने दर्जनों रेल कर्मचारियों का मोबाइल जप्त कर लिया। मोबाइल की पूरी जांच की गयी। जांच के बाद उन सभी को मोबाइल लौटा दिया गया। वहीं करीब एक दर्जन संबंधित रजिस्टर को जांच टीम अपने साथ ले गयी। बताया जाता है कि जांच टीम या तो भ्रष्टाचार या अनियमितता की जांच करती है। कार्यालय में ऑनलाइन नेट के माध्यम से सारा कार्य होता है। इसमें कार्य के अनुरूप मरम्मती व मशीन का पार्ट्स संबंधित जो कार्य होते हैं उनकी भुगतान ठेकेदार को होती है। संविदा पर विभिन्न कार्यालय में कार्य होती है। जिसकी जांच अधिकारियों ने की। उनको पता चला कि कई जगहों पर रेल अधिकारियों व ठेकेदारों के बीच बड़े पैमाने पर गोरखधंधा भी होता है। जिससे रेलवे के राजस्व की क्षति ना हो, इसको लेकर जांच की गई। अब जप्त रजिस्टरों से ही चौकाने वाली राज सामने आ सकती है। जांच में कुछ खामियां निकल सकती है या फिर कुछ अलग हो सकता है। इस मामले पर लोगों की नजरें टिकी हुई है।

भूखे-प्यासे रखकर कराते थे काम, खाना मांगने पर दांत तोड़े, होंठ काटे और प्राइवेट पार्ट को जला....' बिहार के मासूम के साथ जयपुर में बर्बरता

बिहार : बिहार के मासूम के साथ बर्बरता का शर्मनाक मामला सामने आया है। दरअसल, पढ़ाई का झांसा देकर जयपुर ले जाए गए नाबालिग लड़के को खाना मांगने पर बेहरमी से पीटा गया। उसके दांत तोड़ दिए गए और होंठ काट दिया गया। इतना ही नहीं, बच्चे के प्राइवेट पार्ट को भी जलाने की कोशिश की गई। पुलिस ने इस मामले में पीड़ित का बयान दर्ज कर लिया है।

भूखे-प्यासे रखकर करवाया जाता था काम

बताया जा रहा है कि मधुबनी जिले के बिस्फी थाना क्षेत्र के एक गांव के नाबालिग बच्चे को पढ़ाई का झांसा देकर आसमीन परवीन और उसका पति जयपुर में ले गए। लेकिन वहां बच्चे के साथ बर्बरता की गई। मासूम ने बताया उसे भूखे-प्यासे रखकर काम करवाया जाता था। वहीं खाना मांगने पर उसे डंडे और रॉड से बेरहमी से पीटा जाता था। उसके दांत तोड़ दिए गए और होंठ भी काट दिया गया।

बेहोश होने पर घर से बाहर फेंका

पति-पत्नी की बर्बरता यहीं खत्म नहीं हुई, इसके बाद उन्बोंने नाबालिग बच्चे का प्राइवेट पार्ट भी जलाने की कोशिश की। वहीं कुछ दिन पहले बेहोश होने पर उसे घर से बाहर फेंक दिया गया तो किसी व्यक्ति ने उसे घर पहुंचाया। 29 अप्रैल को घर पहुंचने के बाद परिजनों ने उसे सदर अस्पताल में भर्ती कराया। इसके बाद पुलिस को घटना की जानकारी दी गई। पुलिस ने पीड़ित के बयान के आधार पर एफआईआर दर्ज कर ली है। पुलिस का कहना है कि दोषियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी।

नमाज पढ़कर मस्जिद से बाहर आए युवक को मारी गोली, हत्या के बाद इलाके में बवाल; जांच में जुटी पुलिस

बिहारः बिहार के वैशाली में बेखौफ बदमाशों ने एक युवक को गोली मारकर मौत के घाट उतार दिया। वहीं घटना के बाद इलाके में तनाव का माहौल है। मिली जानकारी के अनुसार, घटना जिले के नगर थाना क्षेत्र की है। मृतक की पहचान मोहम्मद शब्बीर आलम के रूप में की गई है। घटना के संबंध में बताया जा रहा है कि मोहम्मद शब्बीर आलम मस्जिद से नमाज अदा कर बाहर निकला था तभी बदमाशों ने उसे अपना निशाना बना लिया। उस पर फायरिंग की। गोली उसकी पीठ में लगी। जिससे उसकी जान चली गई। हालांकि हत्या के कारणों का अभी खुलासा नहीं हो सका। इधर घटना के बाद पुलिस मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। घटना से आक्रोशित लोगों ने सड़क जाम कर दी। साथ ही तोड़फोड़ और आगजनी भी की। वहीं पुलिस ने तनावपूर्ण स्थिति को देखते हुए पूरे इलाके को छावनी में तब्दील कर दिया है। पुलिस अपराधियों की गिरफ्तारी के लिए लगातार ताबड़तोड़ छापेमारी कर रही है। मामले की गंभीरता से जांच की जा रही है।

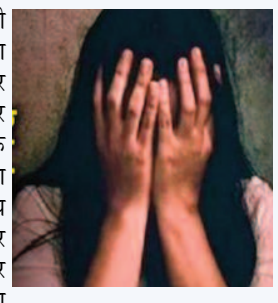

शादी की झांसा देकर लॉ की छात्रा से 2 वर्षो तक बनाए शारीरिक संबंध... पटना HC के एडवोकेट और टाइपिस्ट पर गंभीर आरोप, एक गिरफ्तार

बिहारः कानून की पढ़ाई करने वाली 24 वर्षीय छात्रा के साथ यौन शोषण मामले में पटना हाईकोर्ट के सीनियर एडवोकेट के टाइपिस्ट को गिरफ्तार किया गया है। बताया जाता है कि टाइपिस्ट ने शादी का झांसा देकर छात्रा के साथ दो साल तक शारीरिक संबंध बनाए और बाद में अपने वादे से मुकर गया। वहीं छात्रा ने सीनियर वकील पर भी छेड़खानी का गंभीर आरोप लगाया है।

अकेले पाकर छेड़खानी करता था सीनियर वकील

दरअसल, पीड़िता के बयान पर पुलिस ने फरवरी माह में एसके पुरी थाने में मुकदमा दर्ज किया था। वहीं 3 मई यानी शनिवार को पुलिस ने हाजीपुर से आरोपी टाइपिस्ट गिरफ्तार किया है। पीड़िता का आरोप है कि वह पिछले कुछ वर्षों से सीनियर वकील के अधीन इंटर्नशिप कर रही थी। सीनियर वकील उसे अकेले पाकर छेड़खानी करता था। पीड़िता के अनुसार, जब उसने इस बात को वकील के टाइपिस्ट जितेंद्र कुमार के साथ साझा किया तो उसने सहानुभूति दिखाते हुए मदद का वादा किया। जितेंद्र ने पीड़िता से दोस्ती बढ़ाई और शादी का वादा किया।

जिले में 12 स्थान पर 17वें दिन महिला जन संवाद कार्यक्रम आयोजित

महिलाओं ने किया जन संवाद में स्वरोजगार की मांग

दिव्य दिनकर प्रखंड संवाददाता

असरगंज। असरगंज प्रखंड के ममई पंचायत के चौरगांव में किरण जीविका महिला ग्राम संगठन में महिला संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें ग्राम संगठन क्षेत्र की लगभग 200 दीदियों ने भाग लिया। सामुदायिक समन्वयक रत्नाकर भारती ने बैठक का संचालन किया। कार्यक्रम में दीदियों को माननीय मुख्यमंत्री महोदय का संदेश पत्र पढ़ कर सुनाया गया। इसके बाद संवाद रथ के माध्यम से सरकार द्वारा संचालित योजना जिसमें महिलाओ एवं लड़कियों हेतु चलाए जा रहे महत्वाकांक्षी योजनाओं जैसे मुख्यमंत्री बालिका पोशाक एवं साइकिल योजना, मुख्यमंत्री महिला उद्यमी योजना, स्टूडेंट क्रेडिट कार्ड योजना, मुख्यमंत्री किशोरी स्वास्थ्य योजना, जीविका अंतर्गत सतत जीविकोपार्जन योजना, दीदी का अधिकार केंद्र, दीदी की रसोई, सिलाई सेंटर, कस्टम हायरिंग सेंटर आदि योजना के बारे में वीडियो आधारित डॉक्यूमेंट्री फिल्म दिखाया गया। इस दौरान सरकार की योजनाओं से लाभान्वित कुछ महिलाओं ने अपना अनुभव साझा किया। जिसमें सुलोचना देवी ने बीपीएससी से सहायक अध्यापक बनने, किरण देवी को साइकिल योजना का लाभ मिलने, मधु और प्रमिला देवी को सतत जीविकोपार्जन योजना का लाभ मिलने से कपड़े की दुकान खोलने, कल्पना देवी को शौचालय का लाभ मिलने मिलने से खुशी व्यक्त की गई। इसके बाद कुछ दीदियों के द्वारा अपनी आकांक्षाएं व्यक्त करते हुए रंभा देवी वार्ड में में स्थित आंगनवाड़ी में शौचालय बनवाने की मांग, सरिता देवी एवं अन्य सदस्य द्वारा वार्ड 8 में सामुदायिक भवन का निर्माण, सुप्रिया कुमारी द्वारा उच्च संस्थानों में पढ़ाई के लिए तैयारी हेतु निःशुल्क कोचिंग संस्थान में दाखिल की मांग, एवं सभी सदस्यों ने जीविका भवन निर्माण, अनाज गोदाम की मांग, दलहन के बीज में शत प्रतिशन सब्सिडी की मांग, फसल बीमा निःशुल्क करने आदि की मांग की गई। इसके बाद सभी ने सामाजिक कर्तव्यों एवं दायित्व को निभाने हेतु शपथ लिया। हवेली खड़गपुर प्रखंड अंतर्गत आंचल जीविका महिला ग्राम संगठन गोबड्डा और कमल जीविका महिला ग्राम संगठन बढौना में महिला संवाद कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें दोनों ग्राम संगठन के क्षेत्र से महिलाओं ने भाग लिया। इस कार्यक्रम में जिला परियोजना प्रबंधक गुरुदेव, प्रखंड परियोजना प्रबंधक अंजु कुमारी, प्रशिक्षण अधिकारी प्रशांत कुमार सिंह

शामिल हुए। जिला परियोजना प्रबंधक ने अपने संबोधन में कहा कि महिला संवाद कार्यक्रम महिला सशक्तिकरण के दिशा में मिल का पत्थर साबित हो रही है। इस संवाद के माध्यम से महिलाओं की सरकार से क्या अपेक्षएं है, उसको संकलित कर उसे राज्य स्तर पर भेजा जाएगा। जिस पर आगे काम करने की रणनीति बनेगी। जिससे आगे चलकर लोग उसका समुचित लाभ ले पाएंगे। इसके साथ ही विभिन्न योजनाओं से लाभान्वित महिलाएं अपना अनुभव भी साझा कर रही है कि किस योजना से किस प्रकार उनके जीवन में परिवर्तन आया है। गौरी देवी बताई कि जीविका परियोजना में जुड़ने से कैसे उनके जीवन में परिवर्तन आया है। सोनी देवी बताई कि सतत जीविकोपार्जन योजना में जुड़ने से उनकी जिंदगी बदल गई है। इसके अलावे महिलाओं ने अपनी आकांक्षाएं भी दर्ज करवाई है। प्रेमलता दीदी सिंचाई की आकांक्षा है कि व्यवस्था होनी चाहिए। अनुराधा देवी के द्वारा बताया गया कि धागा बनाने का कंपनी खोला जाए। संगीता देवी पर्सनल लोन बैंक के ब्याज में जो चक्रवृद्धि ब्याज लगता है उसको कम कर दिया जाए। अनीता देवी के द्वारा आकांक्षा किया गया की पेन पेंसिल बल्ब बनाने की फैक्ट्री इत्यादि अपने पंचायत में ही लगाया जाए जिसमें दीदी अधिकार केंद्र , पक्की नली, सिलाई केंद्र, जीविका भवन निर्माण , जीविका बैंक, वृद्धा और विधवा पेंशन में बढ़ोतरी, गोबड्डा में स्वास्थ्य उपकेंद्र तथा कोल्ड स्टोरेज, बच्चों के लिए पार्क, हर पंचायत में उच्च विद्यालय आदि की मांग की है। खुशी कुमारी और गुड़िया कुमारी के द्वारा इंटर पास लड़कियों के लिए एक स्कूटी और लैपटॉप सरकार से प्रोत्साहन और आगे की पढ़ाई के लिए आकांक्षा रखी गई। इसके अलावा सभी पंचायत में पुस्तकालय खुलवाने की मांग रखी गई ताकि आगे के पढ़ाई में सहयोग मिल सके। तारापुर प्रखंड के परभारा पंचायत में लक्ष्मीबाई जीविका महिला ग्राम संगठन के क्षेत्र में महिला संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें इस कार्यक्षेत्र की आकांक्षा एवं मुद्दा को रखा जो निम्न है। पंचायत की स्तर पर बच्चों को पढ़ने के लिए पुस्तकालय होना चाहिए। पंचायत स्तर पर जीविका का अपना महिला बैंक होना चाहिए तारापुर बाजार में सार्वजनिक शौचालय होना चाहिए। पंचायत स्तर पर खेल मैदान होना चाहिए स्मार्ट मीटर बिल ज्यादा (दोगुना)आ रहा है इसका समस्या का समाधान हो बरियारपुर प्रखंड के नीरपुर पंचायत के आशा टोला दुर्गा स्थान के प्रांगण में दर्पण जीविका महिला ग्राम संगठन के कार्यक्षेत्र में महिला संवाद कार्यक्रम आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में संवाद रथ के माध्यम से सरकार द्वारा संचालित 36 प्रकार से भी ज्यादा योजनाओं से अवगत कराया गया जैसे कन्या उत्थान योजना, पोशाक योजना, पेंशन योजना, नल जल योजना इत्यादि। इसी के साथ दीदी क्षेत्र के लोगों ने अपनी कुछ आकांक्षा एवं मुद्दा को रखा जैसे कि सभी बेरोजगार महिलाओं को काम मिल सके। दीदी के द्वारा ये भी कहा गया कि अन्य प्रखंड में संचालित जीविका दीदी की रसोई की तरह ही हमारे यहां भी एक दीदी की रसोई खोली जाए ताकि कई महिलाओं को रोजगार मिल सके। दयमंती दीदी द्वारा कहा गया कि जीविका बैठक के लिए एक सामुदायिक भवन होना अति आवश्यक है बाढ़ के बाद जल निकासी में समस्या होती है जल निकास की समस्या का समाधान किया जाए ताकि बीमारी ना फैले साथ ही प्रखंड स्तर पर डिग्री कॉलेज की व्यवस्था की मांग की।इस महिला संवाद का कार्यक्रम के अंत में संवाद में उपस्थित सभी महिला के द्वारा घरेले हिंसा नहीं करने एवं पीड़ित महिला का साथ देने एवं बैंक या जीविका या अन्य स्त्रोत से प्राप्त राशि का सदुपयोग कर अपने परिवार को 10000रु मासिक आय के लक्ष्य के प्राप्ति में सहयोग देने की शपथ ली इसके विस्तृत जानकारी हेतु लीफलेट का भी वितरण किया गया।

बखरी में गुरु मिल्खा सिंह फिजिकल एकेडमी का हुआ उद्घाटन

सिपाही भर्ती की तैयारी में युवाओं को मिलेगा सुनहरा अवसर

प्रियंका कुमारी

बखरी, बेगूसराय। रविवार को सिपाही भर्ती की तैयारी कर रहे बखरी क्षेत्र के युवाओं के लिए एक बड़ी खुशखबरी सामने आई। बखरी प्रखंड के शकरपुरा में गुरु मिल्खा सिंह फिजिकल एकेडमी का भव्य उद्घाटन किया गया। जो क्षेत्रीय अभ्यर्थियों को फिजिकल ट्रेनिंग में उत्कृष्ट मार्गदर्शन प्रदान करेगा। इस एकेडमी की स्थापना युवाओं को सिपाही भर्ती जैसे शारीरक परीक्षण आधारित प्रतियोगिताओं में सफलता दिलाने के उद्देश्य से की गई है।इस एकेडमी का विधिवत उद्घाटन अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी कुंदन कुमार, आरएसएस के मनोरंजन वर्मा, बखरी थाना के सब इंस्पेक्टर हरेंद्र राम, अर्चना झा तथा विद्यार्थी परिषद के प्रिंस सिंह परमार ने संयुक्त रूप से फीता काटकर किया। उद्घाटन समारोह में अतिथियों ने अभ्यर्थियों को संबोधित करते हुए सिपाही भर्ती में फिजिकल टेस्ट की महत्ता पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि

शारीरिक दक्षता ही भर्ती प्रक्रिया का सबसे अहम पहलू है। इस एकेडमी के माध्यम से स्थानीय युवाओं को सशक्त तैयारी का अवसर मिलेगा।एकेडमी के मुख्य ट्रेनर के रूप में कृष्णमोहन कुमार, मणिरत्नम कुमार व उनकी विशेषज्ञ टीम की भूमिका प्रमुख होगी। इन प्रशिक्षकों के मार्गदर्शन में अभ्यर्थियों को आधुनिक व व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा। इस अवसर पर सैकड़ों की संख्या में अभ्यर्थी एकेडमी परिसर में उपस्थित थे। जिनमें जोश और उमंग का माहौल देखने को मिला। स्थानीय लोगों और विद्यार्थियों ने इस पहल की भूरी-भूरी प्रशंसा की और कहा कि इससे क्षेत्र के युवा अब बड़े स्तर पर प्रतिस्पर्धा के लिए तैयार हो सकेंगे। बताते चलें कि गुरु मिल्खा सिंह फिजिकल एकेडमी निश्चित ही बखरी क्षेत्र में खेल और शारीरिक प्रशिक्षण की दिशा में एक मजबूत कदम है, जो आने वाले समय में कई युवाओं को उनके सपनों की मंज़िल तक पहुंचाने में सहायक सिद्ध होगा।

महिलाओं में जागरूकता लाना और संस्थाओं से जोड़ना महिला संवाद का लक्ष्य

नावकोठी में महिला संवाद कार्यक्रम का आयोजन

शकील बेग

नावकोठी, बेगूसराय। नावकोठी पंचायत के महादलित मुहल्ले में पायल और रचना जीविका महिला ग्राम संगठन के बैनर तले महिलाओं के उत्थान के लिए महिला संवाद कार्यक्रम का आयोजन रविवार को किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रखंड परियोजना प्रबंधक मनोरंजन कुमार ने की तथा कार्यक्रम का उदघाटन मेंटर रंजू, रेणु, किरण ने दीप प्रज्जवलित कर किया। बीपीएम मनोरंजन कुमार ने कहा कि महिला संवाद का उद्देश्य महिलाओं में जागरूकता लाना और उन्हें उन संस्थाओं एवं अवसरों से जोड़ना है। जीविका से जुड़कर महिलाओं में जागृति आयी है।अपने हक के लिए महिलाएं आगे बढ़ रहीं हैं। राज्य सरकार द्वारा संचालित योजनाओं के बारे में जानकारी मिलने से उसका लाभ बढ़ चढ़कर ले रही हैं। सरकार भी महिलाओं को

सहायता मुहैया करवा रही है। आयोजित महिला संवाद के माध्यम से महिलाओं के लिए आरक्षण, नशा मुक्ति अभियान, बाल विवाह, दहेज प्रथा, जीविका से संबंधित योजनाओं की विस्तृत जानकारी दी गयी। इस आयोजन के दौरान मेंटर रंजू कुमारी ने अपना अनुभव साझा किया। उन्होंने कहा कि समाज की महिलाओं को जीविका ने रोशनी दी है। महिलाएं आर्थिक रुप से भी समृद्ध हो रही है। मौके पर रोहित, रुपम, जनिता, रेखा, पुष्प लता, किरण, पिंकी, अन्नु, पूनम, रुक्मिणी आदि मौजूद थे।

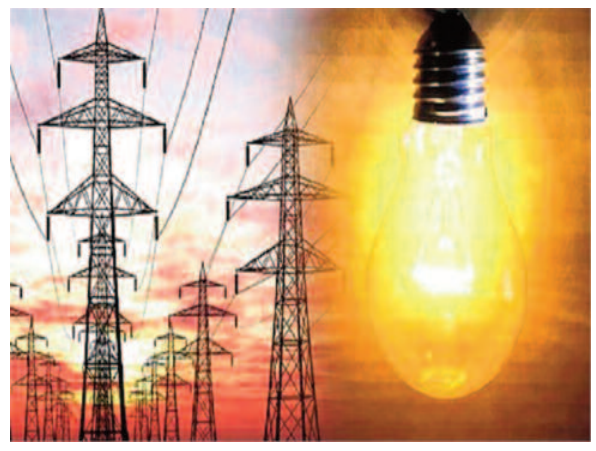

बिहार: अब बिजली कट से पहले मिलेगी जानकारी, सोशल मीडिया और एसएमएस से किया जाएगा अलर्ट

पटनाः ऊर्जा मंत्री बिजेंद्र प्रसाद यादव के निर्देश पर विद्युत भवन में ऊर्जा सचिव पंकज कुमार पाल की अध्यक्षता में एक महत्वपूर्ण समीक्षा बैठक आयोजित की गई। बैठक में पेसू क्षेत्र में निर्बाध और गुणवत्तापूर्ण बिजली आपूर्ति सुनिश्चित करने एवं शटडाउन की समीक्षा की गई। गर्मी के बढ़ते प्रभाव को देखते हुए ऊर्जा मंत्री ने पेसू टीम को निर्देश दिए कि उपभोक्ताओं को बेहतर सेवा देने के लिए तत्परता से कार्य करें। बैठक में सीएमडी पाल ने कहा कि आवश्यकतानुसार ही परियोजनाओं के कार्यान्वयन एवं दैनिक अनुरक्षण कार्य के लिए समीक्षा कर न्यूनतम समय के लिए ही शटडाउन किया जाए। उन्होंने यह भी निर्देश दिए कि परियोजना एवं

रखरखाव कार्य के लिए जो शटडाउन जरूरी हो, उसकी पहले से योजना बनाकर समाचार पत्रों और विभागीय सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स के माध्यम से प्रचार-प्रसार किया जाए। इसके साथ-साथ माइकिंग के जरिए भी उपभोक्ताओं को सूचित किया जाए ताकि लोग आवश्यक तैयारियां, जैसे पानी संग्रह, पहले से कर सकें। पाल ने कहा कि हर शटडाउन की निगरानी संबंधित अधीक्षण अभियंता करेंगे और स्थल पर सहायक या कनीय अभियंता की उपस्थिति अनिवार्य होगी। उन्होंने यह भी सुनिश्चित करने को कहा कि पॉवर कट की जानकारी सभी उपभोक्ताओं को एसएमएस के माध्यम से समय से दी जाए। निर्बाध एवं गुणवत्तापूर्ण विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए पेसू कंट्रोल रूम की कार्यप्रणाली की समीक्षा भी की गई। इस बैठक में साउथ बिहार पावर डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी लिमिटेड के मुख्यालय तथा पेसू के सभी वरीय अधिकारी उपस्थित थे।

क्या गोपालपुर में जीत का पंजा लगा पाएंगे गोपाल मंडल

गोपालपुरः गोपालपुर विधानसभा सीट भागलपुर लोकसभा के तहत आता है। 1957 में गोपालपुर सीट अस्तित्व में आया था। 1957 में गोपालपुर सीट (ऋड्ढस्त्रं'स्र४१ अर-शु'८ रीं३) से सीपीआई कैंडिडेट मनीराम सिंह ने जीत हासिल किया था। 1962 में कांग्रेसी कैंडिडेट माया देवी ने जनता का समर्थन हासिल कर लिया था। वहीं 1967 में सीपीआई की टिकट पर एम सिंह ने विरोधियों को मात देकर गोपालपुर सीट पर जीत हासिल की थी। वहीं 1969 और 1972 में कांग्रेस की टिकट पर दो बार लगातार मदन प्रसाद सिंह ने गोपालपुर में विरोधियों को करारी मात दे दिया था। 1977 के विधानसभा चुनाव में यहां से सीपीआई उम्मीदवार मनीराम सिंह ने जीत हासिल किया था। 1980 और 1985 के चुनाव में कांग्रेसी कैंडिडेट मदन प्रसाद सिंह ने गोपालपुर में सभी विरोधियों को मात देने में कामयाबी हासिल की थी। वहीं 1990 में बीजेपी कैंडिडेट ज्ञानेश्वर यादव ने जीत हासिल की थी। 1995 में गोपालपुर सीट से जेडीयू कैंडिडेट रविन्द्र कुमार राणा ने जनता का समर्थन हासिल कर लिया था। वहीं 2000 में आरजेडी उम्मीदवार के तौर पर रविन्द्र कुमार राणा ने विरोधियों को मात दे दिया था। हालांकि इसके बाद लगातार चार बार से जेडीयू ने यहां वर्चस्व बरकरार रखा है। 2005, 2010, 2015 और 2020 में हुए विधानसभा चुनाव में गोपालपुर से जेडीयू कैंडिडेट नरेंद्र कुमार नीरज उर्फ गोपाल मंडल ने जीत का परचम लहराया था। इस बार भी गोपाल मंडल यहां से चुनाव लड़ सकते हैं। GopÔlpur Assembly SeÔt Result 2020 ।। एक नजर 2020 विधानसभा चुनाव के नतीजों पर वहीं 2020 के चुनाव में गोपालपुर में जेडीयू उम्मीदवार नरेंद्र कुमार नीरज उर्फ गोपाल मंडल ने विरोधियों को फिर से शिकस्त दे दिया था। नरेंद्र कुमार नीरज को 75 हजार पांच सौ 33 वोट मिला था तो आरजेडी कैंडिडेट शैलेश कुमार को 51 हजार 72 वोट ही मिल पाया था। इस तरह से नरेंद्र कुमार नीरज ने शैलेश कुमार को 24 हजार चार सौ 61 वोट के अंतर से हरा दिया था। वहीं एलजेपी कैंडिडेट सुरेश भगत 23 हजार चार सौ छह वोट लाकर तीसरे स्थान पर रहे थे। GopÔlpur Assembly SeÔt Result 2015 ।। एक नजर 2015 विधानसभा चुनाव के नतीजों पर 2015 के विधानसभा चुनाव में गोपालपुर सीट (Gopalpur Assembly Seat) से जेडीयू उम्मीदवार नरेंद्र कुमार नीरज उर्फ गोपाल मंडल ने जीत हासिल की थी। नरेंद्र कुमार नीरज को 57 हजार चार सौ तीन वोट मिला था तो बीजेपी कैंडिडेट अनिल कुमार यादव को 52 हजार दो सौ 34 वोट ही मिल पाया था। इस तरह से नरेंद्र कुमार नीरज ने अनिल कुमार यादव को 5 हजार एक सौ 69 वोट के अंतर से हरा दिया था। वहीं निर्दलीय कैंडिडेट सुरेश भगत, 6 हजार चार सौ 10 वोट लेकर तीसरे स्थान पर रहे थे। : 1980 और 1985 के चुनाव में कांग्रेसी कैंडिडेट मदन प्रसाद सिंह ने गोपालपुर में सभी विरोधियों को मात देने में कामयाबी हासिल की थी। वहीं 1990 में बीजेपी कैंडिडेट ज्ञानेश्वर यादव ने जीत हासिल की थी। 1995 में गोपालपुर सीट से जेडीयू... Gopalpur Assembly Seat गोपालपुर विधानसभा सीट भागलपुर लोकसभा के तहत आता है।

उड़े परखच्चे,घिसटते हुए खाई में जा गिरी कार...भयानक सड़क हादसे में 2 की मौत; तीन महिलाएं घायल

बिहारः बिहार के गोपालगंज में आज यानी रविवार एक दर्दनाक हादसा हो गया। दरअसल यहां एक ट्रक ने कार को सामने से जोरदार टक्कर मार दी। वहीं इस घटना में दो लोगों की मौत हो गई जबकि तीन महिलाएं गंभीर रूप से घायल हो गई।

तेज रफ्तार से आ रहे ट्रक ने कार में मारी जोरदार टक्कर

मिली जानकारी के अनुसार, घटना बैकुंठपुर थाना क्षेत्र के दिघवा गांव के पास स्टेट हाइवे की है। मृतकों की पहचान सोनू शर्मा और छोटू कुमार के रूप में हुई है। घटना के संबंध में बताया जा रहा है कि हाईवे पर तेज रफ्तार से आ रहे ट्रक ने ऑल्टो कार में जोरदार टक्कर मार दी। टक्कर इतनी भयानक थी कि कार के परखच्चे उड़ गए और गाड़ी कुछ दूरी तक घिसटते हुए खाई में जा गिरी। वहीं इस हादसे में कार सवार दो लोगों की घटनास्थल पर ही मौत हो गई। जबकि तीन महिलाएं गंभीर रूप से घायल हो गई, जिन्हें आनन-फानन में अस्पताल में भर्ती करवाया गया। बताया जा रहा है कि कार में सवार होकर सभी लोग यूपी से गया जा रहे थे। इधर घटना के बाद मौके पर पहुंची पुलिस ने दोनों शवों को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल में भेजा। पुलिस द्वारा मामले की छानबीन की जा रही है।

पहले गला दबाया, फिर बोरे में शव ठूंस 2 फीट जमीन के नीचे गाड़ा...हैरान कर देगी वारदात; पुलिस ने ऐसे किया खुलासा

Bettiah: बिहार के बेतिया से एक सनसनीखेज वारदात की खबर निकल कर सामने आ रही है जहां ससुराल वालों ने एक महिला का गला दबाकर उसे दर्दनाक मौत दी। उसके बाद अपराध छुपाने के लिए शव को जमीन में दबा दिया। वहीं इस दर्दनाक घटना ने पूरे इलाके में दहशत फैला दी है।

जानें कैसे पुलिस ने किया खुलासा

मिली जानकारी के अनुसार, मझौलिया थाना क्षेत्र के मझरिया शेख गांव की है। मृतक महिला की पहचान सनोज पासवान की पत्नी 26 वर्षीय प्रमिला देवी के रूप में हुई है। दोनों का एक 5 वर्षीय बेटा भी है। घटना के संबंध में मायके वालों ने बताया कि प्रमिला देवी को प्रताड़ित किया जाता था। उन्हें सूचना मिली कि उनकी लड़की दो दिन से लापता है। फिर सूचना मिलने पर मायके वाले लड़की के ससुराल पहुंचे। मायके वालों ने पुलिस प्रमिला देवी के लापता होने की शिकायत दर्ज करवाई। जिसके बाद पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए प्रमिला देवी के जेठ को हिरासत में ले पूछताछ की। पूछताछ में हत्या का भेद खुला। बताया कि प्रमिला देवी की गला दबाकर हत्या कर दी गई और उसके बाद गुनाह को छुपाने के लिए शव को बोरी में भरकर 2 फीट जमीन में दबा दिया। ताकि किसी को अपराध की जानकारी न हो। वहीं पुलिस ने शव को जमीन से बाहर निकाल पोस्टमार्टम के लिए भेजा। फिलहाल पुलिस मामले की जांच में जुटी हुई है।

वित्तीय अनियमितता को रोकने में सेबी की मदद के लिए शोध पत्र तैयार करेगा: आईसीएआई

एजेंसी

नई दिल्ली। चार्टर्ड अकाउंटेंट की शीर्ष इकाई भारतीय सनदी लेखाकार संस्थान (आईसीएआई) के अध्यक्ष चरणजोत सिंह नंदा ने कहा कि आईसीएआई वित्तीय धोखाधड़ी से निपटने में बाजार नियामक सेबी की मदद के लिए एक शोध पत्र तैयार करेगा। श्री नंदा ने आज यहां संवाददाताओं को संबोधित करते हुए कहा कि आईसीएआई ने वित्तीय धोखाधड़ी के बढ़ते मामलों को देखते हुए एक अहम निर्णय लिया है। आईसीएआई एक विशेष कार्य समूह (वर्किंग ग्रुप) बनाएगा, जो इन धोखाधड़ी मामलों से निपटने की रणनीति तैयार करेगा। यह समूह धोखाधड़ी को रोकने को लेकर भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेबी) के साथ चर्चा करेगा। उन्होंने बताया कि इस मुद्दे पर उनकी हाल ही में सेबी के तुहिन कांत पांडे के साथ बैठक हुयी है। उन्होंने बताया कि हाल के वर्षों में भारतीय शेयर बाजारों में खुदरा निवेशकों की भागीदारी काफी बढ़ी है, लेकिन इसके साथ ही वित्तीय हेराफेरी, शेयरों की कीमतों में हेरफेर जैसे मामलों में भी इजाफा भी हुआ है। ऐसे में जरूरी हो गया है कि आम निवेशकों की सुरक्षा और जागरूकता के लिए ठोस कदम उठाए जाएं। उन्होंने बताया कि आईसीएआई और सेबी मिलकर इस दिशा में काम करेंगे, ताकि निवेशकों का भरोसा बाजार में बना रहे और किसी भी प्रकार की गड़बड़ी को समय रहते रोका जा सके।

एसबीआई का चौथी तिमाही में मुनाफा 10 प्रतिशत घटा

मुंबई। देश के सबसे बड़े वाणिज्यिक बैंक भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) ने मार्च 2025 को समाप्त चौथी तिमाही में 18643 करोड़ रुपये का शुद्ध लाभ कमाया है जो इससे पिछले वित्त वर्ष की समान अवधि के 20698 करोड़ रुपये के लाभ की तुलना में 9.93 प्रतिशत कम है। बैंक ने निदेशक मंडल की बैठक के बाद यहां जारी वित्तीय लेखाजोखा में कहा कि वित्त वर्ष 2024-25 में उसने 70901 करोड़ रुपये का शुद्ध लाभ कमाया है जो इससे पिछले वित्त वर्ष के 61077 करोड़ रुपये के लाभ की तुलना में 16.08 प्रतिशत अधिक है। उसने कहा कि मार्च 2025 में समाप्त तिमाही में उसकी शुद्ध ब्याज आय 42775 करोड़ रुपये रही है जो मार्च 2024 को समाप्त तिमाही की 41655 करोड़ रुपये की आय की तुलना में 2.69 प्रतिशत अधिक है। मार्च 2025 में समाप्त वित्त वर्ष में उसकी शुद्ध ब्याज आय 166965 करोड़ रुपये रही जो इससे पिछले वित्त वर्ष की 159876 करोड़ रुपये की आय की तुलना में 4.43 प्रतिशत अधिक है। बैंक ने कहा कि चौथी तिमाही में नुकसान की भरपाई के लिए 3964 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है जो मार्च 2024 को समाप्त तिमाही में किये गये 3294 करोड़ रुपये के प्रावधान की तुलना में 20.35 प्रतिशत अधिक है। इसी तरह से मार्च 2025 में समाप्त वित्त वर्ष में बैंक ने इस मद में 14418 करोड़ रुपये का प्रावधान किया जो पिछले वित्त वर्ष में किये गये 9518 करोड़ रुपये के प्रावधान की तुलना में 51.49 प्रतिशत अधिक है।

आईसीआईसीआई बैंक और एक्सिस बैंक सहित चार बैंकों पर 1.91 करोड़ रुपये का जुर्माना

मुंबई। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने आईसीआईसीआई बैंक लिमिटेड, एक्सिस बैंक , बैंक ऑफ महाराष्ट्र और आईडीबीआई बैंक पर अलग अलग मामलों में कुल मिलाकर 1.91 करोड़ रुपये का जुर्माना लगाया है। आरबीआई ने कल देर शाम जारी बयान में कहा कि आईसीआईसीआई बैंक पर 'बैंकों में साइबर सुरक्षा ढांचे', 'अपने ग्राहक को जानें (केवाईसी)', और 'क्रेडिट कार्ड और डेबिट कार्ड - जारी करना और आचरण' पर आरबीआई द्वारा जारी कुछ निर्देशों का पालन न करने के लिए 97.80 लाख रुपये का मौद्रिक जुर्माना लगाया है। यह जुर्माना बैंकिंग विनियमन अधिनियम, 1949 की धारा 46(4)(आई) के साथ धारा 47ए(1)(सी) के प्रावधानों के तहत आरबीआई को प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए लगाया गया है। इसी तरह से केन्द्रीय बैंक ने एक्सिस बैंक लिमिटेड पर 'आंतरिक/कार्यालय खातों के अनधिकृत संचालन' पर आरबीआई द्वारा जारी कुछ निर्देशों का पालन न करने के लिए 29.60 लाख रुपये का मौद्रिक जुर्माना लगाया है। यह जुर्माना बैंकिंग विनियमन अधिनियम, 1949 की धारा 46(4)(आई) के साथ धारा 47ए(1)(सी) के प्रावधानों के तहत आरबीआई को प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए लगाया गया है।

पाकिस्तान से वस्तुओं के आयात/ट्रांजिट पर रोक के निर्णय का कैट ने किया स्वागत

नयी दिल्ली। खुदरा व्यापारियों के शीर्ष संगठन कॉन्फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (कैट) ने भारत सरकार की ओर से पाकिस्तान से निर्यातित या पाकिस्तान में उत्पन्न किसी भी वस्तु के प्रत्यक्ष या परोक्ष आयात और परिवहन पर तत्काल प्रभाव से रोक लगाने के साहसी और निर्णायक कदम का हार्दिक स्वागत किया है। संगठन ने कहा, यह निर्णय एक सशक्त और स्पष्ट संदेश देता है कि पाकिस्तान की ओर से निरंतर शत्रुतापूर्ण गतिविधियों और भारत विरोधी रुख के बीच व्यापारिक एवं आर्थिक संबंध नहीं बनाए जा सकते। कैट के राष्ट्रीय महामंत्री एवं दिल्ली के चांदनी चौक से सांसद प्रवीण खंडेलवाल ने एक बयान में कहा कि यह कदम न केवल राष्ट्रीय सुरक्षा हितों के अनुरूप है, बल्कि देश के व्यापारिक समुदाय और आम नागरिकों की भावना का भी सम्मान करता है।

भारत अंगोला को देगा 20 करोड़ डॉलर का रक्षा ऋण

एजेंसी

नई दिल्ली। भारत अंगोला के सशस्त्र बलों के आधुनिकीकरण के लिए 20 करोड़ अमेरिकी डॉलर का रक्षा ऋण देगा। दोनों देशों के नेताओं के बीच आज हुई द्विपक्षीय वार्ता के बाद इसकी घोषणा की गई। दोनों देशों ने आतंकवादियों और उनके समर्थकों के खिलाफ दृढ़ और निर्णायक कार्रवाई की प्रतिबद्धता जताई है। साथ ही स्वास्थ्य सेवा, हीरा प्रसंस्करण, उर्वरक और महत्वपूर्ण खनिजों के क्षेत्रों में आपसी सहयोग को मजबूत करने का निर्णय लिया है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने हैदराबाद हाउस में अंगोला के राष्ट्रपति जोआओ मैनुअल गोंसाल्वेस लौरेंको के साथ द्विपक्षीय वार्ता की। इसके बाद प्रधानमंत्री मोदी ने संयुक्त प्रेस वक्तव्य में कहा 38 वर्षों के बाद अंगोला के राष्ट्रपति की भारत यात्रा से दोनों देशों के संबंधों को नई दिशा मिल रही है। उन्होंने कहा कि इस वर्ष, भारत और अंगोला अपने राजनयिक संबंधों की 40वीं वर्षगांठ मना रहे हैं। प्रधानमंत्री ने कहा, मुझे यह घोषणा करते हुए खुशी है कि अंगोला की सेनाओं के

आधुनिकीकरण के लिए 200 मिलियन डॉलर की डिफेन्स क्रेडिट लाइन को स्वीकृति दी गई है। रक्षा प्लेटफॉर्म्स के सुधार, बदलाव और सप्लाई पर भी बात हुई है। अंगोला की सशस्त्र सेनाओं की ट्रेनिंग में सहयोग करने में हमें खुशी होगी। उन्होंने कहा कि हम एकमत हैं कि आतंकवाद मानवता के लिए सबसे बड़ा खतरा है। पहलगाम में हुए आतंकी हमले में मारे गए लोगों के प्रति राष्ट्रपति लोरेंसू और अंगोला की संवेदनाओं के लिए मैं उनका आभार व्यक्त करता हूं। हम आतंकवादियों और उनका समर्थन करने वालों के खिलाफ़ दृढ़ और निर्णायक कार्रवाई करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। हम सीमा पार आतंकवाद के खिलाफ हमारी लड़ाई में अंगोला के समर्थन के लिए आभार व्यक्त करते हैं। प्रधानमंत्री ने कहा कि हम विभिन्न क्षेत्रों में साझेदारी कर रहे हैं। भारत अंगोला से तेल और गैस के सबसे बड़े खरीदारों में से एक है। हमने अपनी ऊर्जा साझेदारी को बढ़ाने का फैसला किया है। हम अंगोला के साथ डिजिटल पब्लिक इन्फ्रा, स्पेस टेक और क्षमता निर्माण में अपने अनुभव साझा करेंगे। हमने स्वास्थ्य सेवा, हीरा प्रसंस्करण, उर्वरक और महत्वपूर्ण खनिजों के क्षेत्रों में अपने संबंधों को मजबूत करने का भी निर्णय लिया है। उन्होंने कहा कि हम भारत और अंगोला के बीच युवा आदान-प्रदान कार्यक्रम शुरू करने जा रहे हैं ताकि लोगों के बीच आपसी संबंध बेहतर हो सकें। हम अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन में शामिल होने के अंगोला के फैसले की सराहना करते हैं। 140 करोड़ भारतीयों की ओर से, मैं अंगोला को 'अफ्रीकन यूनियन' की अध्यक्षता के लिए शुभकामनाएं देता हूं। हमारे लिए यह गौरव की बात है कि भारत की जी-20 अध्यक्षता के दौरान 'अफ्रीकन यूनियन' को जी-20 की स्थायी सदस्यता मिली।

विदेशी मुद्रा भंडार 1.98 अरब डॉलर बढ़कर 688.11 अरब डॉलर पर

एजेंसी

मुंबई। विदेशी मुद्रा परिसंपत्ति, विशेष आहरण अधिकार (एसडीआर) और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) के पास आरक्षित निधि में बढ़ोतरी होने से 25 अप्रैल को समाप्त सप्ताह में देश का विदेशी मुद्रा भंडार 1.98 अरब डॉलर के इजाफे के साथ 688.12 अरब डॉलर पर पहुंच गया।इसी तरह इसके पिछले सप्ताह देश का विदेशी मुद्रा भंडार 8.3 अरब डॉलर की बढ़ोतरी लेकर 686.1 अरब डॉलर पर रहा था। रिजर्व बैंक द्वारा जारी साप्ताहिक आंकड़े के अनुसार, 25 अप्रैल को समाप्त सप्ताह में विदेशी मुद्रा भंडार के सबसे बड़े घटक विदेशी मुद्रा परिसंपत्ति 2.16 अरब डॉलर की मजबूती के साथ 580.66 अरब डॉलर पर पहुंच गई। आलोच्य सप्ताह एसडीआर 2.1 करोड़ डॉलर की तेजी लेकर 18.58 अरब डॉलर हो गया। इस अवधि में आईएमएफ के

पास आरक्षित निधि में 20 लाख डॉलर की बढ़ोतरी हुई और यह पिछले सप्ताह के मुकाबले बढ़कर 4.51 अरब डॉलर पर पहुंच गई। हालांकि इस दौरान स्वर्ण भंडार में 20.7 करोड़ डॉलर की कमी आयी और यह घटकर 84.36 अरब डॉलर पर आ गया।

पिछले 10 साल के प्रदर्शन के आधार पर मई में शेयर बाजार में मजबूती की उम्मीद

एजेंसी

नई दिल्ली। घरेलू शेयर बाजार में पिछले कुछ समय से लगातार उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी हुई है। वैश्विक अर्थव्यवस्था में बनी अनिश्चितता की स्थिति, अमेरिका में मंदी की आशंका और दुनिया के कई हिस्सों में जारी जियो-पॉलिटिकल टेंशन के कारण दुनिया के ज्यादातर स्टॉक मार्केट प्रभावित हुए हैं। इसी क्रम में भारतीय शेयर बाजार भी जबरदस्त उतार-चढ़ाव का शिकार हुआ है। इसके बावजूद पिछले 10 साल के प्रदर्शन के आधार पर माना जा रहा है कि मई का महीना घरेलू शेयर बाजार के लिए बेहतर साबित हो सकता है। पिछले 10 साल के परफॉर्मेंस को देखा जाए तो नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी मई के महीने में छह बार मासिक आधार पर मजबूत के साथ हरे निशान में बंद हुआ है। इस दौरान निफ्टी का एवरेज रिटर्न 1.5 प्रतिशत रहा है, जबकि मीडियम रिटर्न 1.9 प्रतिशत के करीब रहा है। जेएम फाइनेंशियल की एक रिपोर्ट के अनुसार पिछले 10 साल की अवधि में निफ्टी के मिडकैप इंडेक्स ने भी मई महीने के

दौरान छह बार मजबूती के साथ हरे निशान में कारोबार का अंत किया। हालांकि मिडकैप इंडेक्स के शेयरों का एवरेज रिटर्न 0.4 प्रतिशत रहा, जबकि मेडियन रिटर्न 1.2 प्रतिशत रहा। सेक्टोरल परफॉर्मेंस की बात करें, तो मई के महीने में एफएमसीजी और ऑटोमोबाइल सेक्टर ने पिछले 10 साल के दौरान सबसे बेहतर प्रदर्शन किया। निफ्टी के ऑटोमोबाइल इंडेक्स ने 10 साल में से 8 बार मजबूती के साथ हरे निशान में कारोबार का अंत किया। इस दौरान ऑटोमोबाइल इंडेक्स में शामिल शेयरों ने 3.9 प्रतिशत का एवरेज रिटर्न दिया, जबकि मीडियम रिटर्न 4.9 प्रतिशत का रहा। इसी तरह एफएमसीजी इंडेक्स ने भी 10 साल में से 8 बार मजबूती के साथ हरे निशान में कारोबार का अंत किया। इस दौरान एफएमसीजी इंडेक्स में शामिल शेयरों ने 3 प्रतिशत का एवरेज रिटर्न दिया, जबकि मीडियम रिटर्न 2.6 प्रतिशत का रहा। इन दोनों सेक्टर्स के अलावा बैंक और फाइनेंशियल सेक्टर 10 साल में से सात बार मजबूती के साथ में बंद हुए। इस दौरान इन दोनों सेक्टर्स में शामिल शेयरों ने 2.5 प्रतिशत का एवरेज रिटर्न दिया।

आईजीएल ने ग्राहकों को दिया झटका, सीएनजी की कीमत में बढ़ोतरी

एजेंसी

नई दिल्ली। इंद्रप्रस्थ गैस लिमिटेड (आईजीएल) ने कंप्रेस्ड नेचुरल गैस (सीएनजी) को एक बार फिर महंगा कर दिया है। कंपनी ने आज सीएनजी की कीमत में प्रति किलोग्राम एक रुपये की बढ़ोतरी कर दी। कीमत में हुई बढ़ोतरी के बाद अब राजधानी दिल्ली में 1 किलोग्राम सीएनजी की कीमत 77.09 रुपये हो गई है, जबकि पहले इसकी कीमत 76.09 रुपये प्रति किलोग्राम थी। आईजीएल की ओर से उपलब्ध कराई गई जानकारी के अनुसार कीमत में बढ़ोतरी होने के बाद दिल्ली के अलावा नोएडा में सीएनजी 85.70 रुपये प्रति किलोग्राम के भाव पर मिल रहा है?। इसी तरह गाजियाबाद में भी सीएनजी की कीमत 85.70 रुपये प्रति किलोग्राम है। इसके अलावा गुरुग्राम में सीएनजी 83.12 रुपये प्रति किलोग्राम, कानपुर में 89.92 रुपये प्रति किलोग्राम और मेरठ में 87.08 रुपये प्रति किलोग्राम के भाव पर मिल रहा है। उल्लेखनीय की दिल्ली

के अलावा हरियाणा और उत्तर प्रदेश के कई हिस्सों में सीएनजी की मार्केटिंग का काम इंद्रप्रस्थ गैस लिमिटेड (आईजीएल) के पास है। आईजीएल द्वारा की जाने वाली सीएनजी की बिक्री में दिल्ली की हिस्सेदारी सबसे अधिक है। आईजीएल की कुल बिक्री में 70 प्रतिशत सीएनजी दिल्ली में बिकती है, जबकि शेष 30 प्रतिशत सीएनजी यूपी या हरियाणा के अलग-अलग शहरों में बिकती है।

मेट्रो ट्रेनों में कार्गो कम्पार्टमेंट जोड़ने से शहरों में व्यापार दक्षता बढ़ेती : केंद्रीय मंत्री

एजेंसी

नई दिल्ली। केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल ने कहा कि मेट्रो ट्रेन में कार्गो कम्पार्टमेंट जोड़ने से शहरों में व्यापार दक्षता बढ़ेगी। राष्ट्रीय राजधानी में भारत मंडपम में दिल्ली मेट्रो रेल कॉरपोरेशन के 31वें स्थापना दिवस पर बोलते हुए मंत्री ने कहा कि आम नागरिक के दैनिक जीवन में दिल्ली मेट्रो की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। उन्होंने आगे कहा कि आसान, विश्वसनीय और सुरक्षित आवागमन प्रत्येक नागरिक का मौलिक अधिकार है और दिल्ली मेट्रो जैसी शहरी परिवहन प्रणालियां शहरी जीवन का अनिवार्य हिस्सा बन गई हैं।

केंद्रीय मंत्री ने कहा कि 2047 तक भारत की लगभग 50 प्रतिशत आबादी शहरी क्षेत्रों में निवास करेगी, जिससे आज शहरी मोबिलिटी इन्फ्रास्ट्रक्चर की योजना बनाना और उसे मजबूत करना अनिवार्य हो गया है। उन्होंने मेट्रो ट्रेनों में माल कार्गो कम्पार्टमेंट को जोड़ने का दूरदर्शी विचार शेयर करते हुए कहा कि इससे छोटे व्यवसायी, विक्रेता और फेरीवाले शहर भर में अपने सामान को आसानी से यात्रा कर सकेंगे। यह एक ऐसा कदम

है जिससे समय की बचत होगी,ऊर्जा की खपत कम होगी और शहरी श्रमिक वर्ग के लिए व्यावसायिक दक्षता बढ़ेगी। केंद्रीय मंत्री के मुताबिक देश के सतत विकास लक्ष्यों के अनुरूप मेट्रो परिचालन में हरित और नवीकरणीय ऊर्जा समाधानों को एकीकृत करना आवश्यक है।

उन्होंने दोहराया कि मेट्रो प्रणाली भारत के हर शहर की जीवन रेखा होगी और उनका निरंतर विस्तार और आधुनिकीकरण स्मार्ट, समावेशी और भविष्य के लिए तैयार शहरी केंद्रों के निर्माण की कुंजी है। कार्यक्रम के दौरान, संगठन में उनके योगदान के लिए व्यक्तियों और टीमों को डीएमआरसी के वार्षिक पुरस्कार प्रदान किए गए। दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने भी इस अवसर पर दिल्ली मेट्रो को बधाई दी। उन्होंने अपने संबोधन के दौरान कहा, दिल्ली मेट्रो ने लोगों के दिलों में जो जगह बनाई है, वह वास्तव में जीवन रेखा से कम नहीं है। जब कोई यात्री दिल्ली मेट्रो में प्रवेश करता है तो उसे 'अच्छा महसूस' होता है। वे इसे साफ रखते हैं और नियमों का पालन भी करते हैं। इससे व्यवहार में भी बदलाव आया है।

खाद्य तेलों और दाल दलहन में मिश्रित रूख

एजेंसी

नयी दिल्ली। विदेशी बाजारों के मिलेजुले रूख के बीच स्थानीय स्तर पर चुनिंदा जिंसों में मांग निकलने से बीते सप्ताह दिल्ली थोक जिंस बाजार में खाद्य तेलों और दाल दलहन में मिश्रित रूख देखा गया जबकि अनाज और मीठे के बाजार में टिकाव रहा। तेल-तिलहन : वैश्विक स्तर पर मलेशिया के बुरसा मलेशिया डेरिवेटिव एक्सचेंज में पाम ऑयल का मई वायदा सप्ताहांत पर 13 रिंगिट बढ़कर 4145 रिंगिट प्रति टन पर पहुंच गया। इसी तरह मई का अमेरिकी सोया तेल वायदा 3.57 सेंट की तेजी के साथ 51.03 सेंट प्रति पौंड बोला गया। इस दौरान सरसों तेल 366 रुपये और पाम ऑयल में 366 रुपये प्रति क्विंटल की तेजी को छोड़कर अन्य खाद्य तेलों में नरमी देखी गयी। मूंगफली तेल 733 रुपये, सूरजमुखी तेल 219 रुपये, सोया रिफाइंड 110

रुपये और वनस्पति तेल 368 रुपये प्रति क्विंटल टूट गया। सप्ताहांत पर सरसों तेल 15751 रुपये प्रति क्विंटल, मूंगफली तेल 18314 रुपये प्रति क्विंटल, सूरजमुखी तेल 16484 रुपये प्रति क्विंटल, सोया रिफाइंड 14725 रुपये प्रति क्विंटल, पाम ऑयल 13919 रुपये प्रति क्विंटल और वनस्पति तेल 16116 रुपये प्रति क्विंटल पर रहा।

मई की शुरुआत में एफआईआई ने खरीदारी का जोर दिखाया, डीआईआई ने भी जमकर की लिवाली

एजेंसी

नई दिल्ली। घरेलू शेयर बाजार में विदेशी निवेशकों ने मई के महीने की शुरुआत जोरदार खरीदारी करके की है। इस महीने के पहले कारोबारी दिन विदेशी निवेशकों ने स्टॉक मार्केट में 2,770 करोड़ रुपये की खरीदारी की। इस तरह घरेलू शेयर बाजार में विदेशी निवेशकों की खरीदारी लगातार 12वें सत्र में भी जारी रही। पहले कारोबारी दिन घरेलू संस्थागत निवेशकों (डीआईआई) ने जमकर खरीदारी की। स्टॉक मार्केट के प्रोविजनल आंकड़ों के मुताबिक 2 मई को डीआईआई ने घरेलू शेयर बाजार में 3,291 करोड़ रुपये की शुद्ध खरीदारी की। साल 2025 की पहली तिमाही यानी जनवरी से मार्च के बीच विदेशी संस्थागत निवेशकों ने घरेलू शेयर बाजार में 1.29 लाख करोड़ रुपये की शुद्ध बिकवाली की थी। इस बिकवाली के कारण शेयर बाजार को जबरदस्त गिरावट का सामना करना पड़ा था। हालांकि अप्रैल में इस स्थिति में परिवर्तन हुआ। अमेरिका द्वारा टैरिफ वॉर में नरमी का संकेत देने के कारण ग्लोबल मार्केट के साथ-साथ भारतीय शेयर बाजार के सेंटिमेंट्स में भी बदलाव हुआ, जिसकी वजह से विदेशी निवेशकों ने बिकवाली का रास्ता छोड़ कर खरीदारी शुरू कर दी। अब मई के महीने में भी घरेलू शेयर बाजार में एफआईआई की खरीदारी जारी रहने की उम्मीद जताई जा र ही है। जेडिपॉजिटरी के प्रोविजनल आंकड़ों के अनुसार 2मई के कारोबारी सत्र में विदेशी संस्थागत निवेशकों ने 18,130 करोड़ रुपये के शेयर खरीदे। वहीं, पूरे दिन के कारोबार में उन्होंने 15,360 करोड़ रुपये के शेयरों की बिक्री भी की। इस तरह विदेशी निवेशकों ने शुद्ध रूप से 2,770 करोड़ रुपये की खरीदारी की। इसी तरह घरेलू संस्थागत निवेशकों (डीआईआई) ने 2 मई के कारोबारी सत्र के दौरान 13,906 करोड़ रुपये के शेयरों की खरीदारी की। वहीं, 10,615 करोड़ रुपये के शेयरों की बिकवाली की। इस तरह डीआईआई की शुद्ध खरीदारी 3,291 करोड़ रुपये की रही। इस साल विदेशी संस्थागत निवेशक ओवरऑल बिकवाल की भूमिका निभाते रहे हैं। इस अवधि में उन्होंने 1.34 लाख करोड़ रुपये के शेयरों की शुद्ध बिक्री की है।

दूसरी ओर, घरेलू संस्थागत निवेशकों ने इस साल की शुरुआत से लेकर अभी तक 2.10 लाख करोड़ रुपये के शेयरों की शुद्ध खरीदारी की है। जहां तक स्टॉक मार्केट के कारोबारी प्रदर्शन की बात है तो शुक्रवार को खत्म हुए कारोबारी सप्ताह के बाद भारतीय शेयर बाजार ने लगातार तीसरे सप्ताह भी अपनी बढ़त का सिलसिला जारी रखा। दिसंबर 2024 के बाद पहली बार घरेलू शेयर बाजार लगातार 3 सप्ताह तक बढ़त का सिलसिला बनाए रखने में सफल हुआ। इस दौरान सेंसेक्स और निफ्टी दोनों सूचकांक हर सप्ताह औसतन एक प्रतिशत की रफ्तार से मजबूत हुए हैं।

डॉ. पूनम गुप्ता बनी आरबीआई की डिप्टी गवर्नर

एजेंसी

मुंबई। डॉ. पूनम गुप्ता ने भारतीय रिजर्व बैंक के डिप्टी गवर्नर का पदभार संभाल लिया है।भारत सरकार ने 02 अप्रैल, 2025 को उन्हें पदभार ग्रहण करने की तिथि से तीन वर्ष की अवधि या अगले आदेश तक, जो भी पहले हो, के लिए डिप्टी गवर्नर के पद पर नियुक्त किया था। डिप्टी गवर्नर के रूप में, डॉ. गुप्ता मौद्रिक नीति विभाग, वित्तीय बाजार परिचालन विभाग, आर्थिक और नीति अनुसंधान विभाग, वित्तीय स्थिरता विभाग, अंतर्राष्ट्रीय विभाग, सांख्यिकी और सूचना प्रबंधन विभाग, कॉर्पोरेट रणनीति और बजट विभाग और संचार विभाग का कार्यभार संभालेंगी। इस नियुक्ति से ठीक पहले, डॉ. गुप्ता नेशनल काउंसिल ऑफ एप्लाइड इकोनॉमिक रिसर्च (एनसीएईआर) की महानिदेशक थीं, जो आर्थिक विकास, अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय वास्तुकला, केंद्रीय बैंकिंग, मैक्रो आर्थिक स्थिरता, सार्वजनिक ऋण और राज्य वित्त से संबंधित मुद्दों पर काम करती थीं। उन्होंने प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद के सदस्य

और 16वें वित्त आयोग की सलाहकार परिषद के संयोजक के रूप में भी काम किया। एनसीएईआर में शामिल होने से पहले डॉ. गुप्ता ने अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) और विश्व बैंक में करीब दो दशकों तक वरिष्ठ पदों पर काम किया था। डॉ. गुप्ता ने दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स, यूनिवर्सिटी ऑफ मैरीलैंड (यूएसए) में भी पढ़ाया और भारतीय सांख्यिकी संस्थान (आईएसआई), दिल्ली में विजिटिंग फैकल्टी के रूप में भी काम किया। वह नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ पब्लिक फाइनेंस एंड पॉलिसी (एनआईपीएफपी) में आरबीआई चेयर प्रोफेसर और इंडियन काउंसिल फॉर रिसर्च ऑन इंटरनेशनल इकोनॉमिक रिलेशंस (आईसीआरआईईआर) में प्रोफेसर रही हैं। डॉ. गुप्ता ने कई शोध पत्र प्रकाशित किए हैं और एक संपादित पुस्तक इमर्जिंग जायंट्सः चाइना एंड इंडिया इन द वर्ल्ड इकोनॉमी लिखी है। डॉ. गुप्ता ने यूनिवर्सिटी ऑफ मैरीलैंड, अमेरिका से अर्थशास्त्र में मास्टर डिग्री और पीएचडी की है, और दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स, दिल्ली विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में मास्टर डिग्री की है।

पेट्रोल और डीजल की कीमतें यथावत

एजेंसी

नई दिल्ली। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कच्चे तेल की कीमतों में उतार चढ़ाव के बीच घरेलू स्तर पर पेट्रोल और डीजल के दाम आज अपरिवर्तित रहे, जिससे दिल्ली में पेट्रोल 94.72

रुपये प्रति लीटर तथा डीजल 87.62 रुपये प्रति लीटर पर पड़े रहे। तेल विपणन करने वाली प्रमुख कंपनी हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कार्पोरेशन की वेबसाइट पर जारी दरों के अनुसार, देश में आज पेट्रोल और डीजल की कीमतों में कोई बदलाव नहीं हुआ है। दिल्ली में इनकी कीमतों के यथावत रहने के साथ ही मुंबई में पेट्रोल 104.21 रुपये प्रति लीटर पर और डीजल 92.15 रुपये प्रति लीटर पर रहा। वैश्विक स्तर पर सप्ताहांत पर अमेरिकी क्रूड 1.45 प्रतिशत उतरकर 58.38 डॉलर प्रति बैरल पर रहा जबकि लंदन ब्रेंट क्रूड 0.26 प्रतिशत की तेजी के साथ 61.45 डॉलर प्रति बैरल पर रहा।

अगले सप्ताह दो नए आईपीओ की लॉन्चिंग, पांच शेयरों की होगी लिस्टिंग

एजेंसी

नई दिल्ली। मई से शुरू होने वाले कारोबारी सप्ताह के दौरान प्राइमरी मार्केट में दो नए आईपीओ लॉन्च होने वाले हैं। ये दोनों आईपीओ एसएमई सेगमेंट के हैं। इसके अलावा पिछले सप्ताह लॉन्च हुए दो आईपीओ में भी इस सप्ताह छह मई यानी मंगलवार तक बोली लगाई जा सकेगी। जहां तक लिस्टिंग की बात है तो इस सप्ताह एथर एनर्जी समेत पांच कंपनियों के शेयर लिस्ट होकर स्टॉक मार्केट में कारोबार की शुरुआत करेंगे। श्रीगी डीएलएम लिमिटेड का आईपीओ सब्सक्रिप्शन के लिए खुलेगा। इस आईपीओ में सात मई तक बोली लगाई जा सकेगी। आईपीओ के तहत बोली लगाने के लिए 94 से 99 रुपये प्रति शेयर का प्राइस बैंड तय किया गया है, जबकि लॉट साइज 1,200 शेयर का है।

कंपनी के शेयरों का अलॉटमेंट आठ मई को किया जाएगा, वहीं इनकी लिस्टिंग बीएसई के एसएमई प्लेटफॉर्म पर 12 मई को होगी।पांच मई को ही मनोज ज्वेलर्स का 16.20 करोड़ रुपये का आईपीओ सब्सक्रिप्शन के लिए खुलेगा। इस आईपीओ में भी सात मई तक बोली लगाई जा सकेगी। आईपीओ के तहत बोली लगाने के लिए 54 रुपये प्रति शेयर का मूल्य तय किया गया है, जबकि लॉट साइज 2,000 शेयर का है। कंपनी के शेयरों का अलॉटमेंट आठ मई को किया जाएगा, जबकि इनकी लिस्टिंग बीएसई के एसएमई प्लेटफॉर्म पर 12 मई को होगी।इनके अलावा पिछले सप्ताह 29 अप्रैल को खुले केनरिक इंडस्ट्रीज के 8.75 करोड़ रुपये के आईपीओ में छह मई तक आवेदन किया जा सकता है। आईपीओ के तहत बोली लगाने के लिए 25 रुपये प्रति शेयर का मूल्य तय किया गया है, जबकि लॉट साइज 6,000 शेयर का है। कंपनी के शेयरों का अलॉटमेंट सात मई को होगा,

जबकि इनकी लिस्टिंग नौ मई को बीएसई के एसएमई प्लेटफॉर्म पर होगी। इसी तरह दो मई को खुले वैगन्स लर्निंग के 38.38 करोड़ रुपये के आईपीओ में भी छह मई तक आवेदन किया जा सकता है। आईपीओ के तहत बोली लगाने के लिए 78 से 82 रुपये प्रति शेयर का प्राइस बैंड तय किया गया है, जबकि लॉट साइज 1,600 शेयर का है। कंपनी के शेयरों का अलॉटमेंट सात मई को होगा, वहीं इनकी लिस्टिंग नौ मई को बीएसई के एसएमई प्लेटफॉर्म पर होगी। पांच मई से शुरू होने वाले कारोबारी सप्ताह के दौरान पांच कंपनियां के शेयर स्टॉक मार्केट में लिस्टिंग के जरिए कारोबार की शुरुआत करेंगे। सबसे पहले मंगलवार छह मई को आईवरे सप्लाई चेन सर्विसेज के शेयर एनएसई के एसएमई प्लेटफॉर्म पर लिस्ट होंगे। इसी दिन एथर एनर्जी के शेयरों की लिस्टिंग बीएसई और एनएसई पर होगी। इसके अगले दिन सात मई को अरुणाया ऑर्गेनिक्स के शेयर और एनएसई के एसएमई प्लेटफॉर्म पर लिस्ट होंगे। इनके अलावा नौ मई को बीएसई के एसएमई प्लेटफॉर्म पर केनरिक इंडस्ट्रीज और वैगन्स लर्निंग के शेयर लिस्ट होंगे।

जानिए कितने का

अनुष्का शर्मा

का ये पिंक पायजामा-शर्ट, सफेद टॉप की कीमत कर देगी हैरान

बॉलीवुड एक्ट्रेस अनुष्का शर्मा ने हाल में अपना 37 वां जन्मदिन सेलिब्रेट किया है। एक्ट्रेस ने अपनी एक खूबसूरत तस्वीर शेयर कर फैंस को जन्मदिन की बधाई के लिए शुक्रिया भी किया था। शेयर की गई तस्वीर में एक्ट्रेस को फूलों के बीच नाइट आउटफिट में देखा जा सकता है। तस्वीर देखकर ऐसा लग रहा है जैसे विराट कोहली ने उन्हें रात को ही फूलों से बर्थडे विश किया था। लेकिन क्या आप जानते हैं इस तस्वीर में अनुष्का ने जो गुलाबी रंग की नाइट आउटफिट पहना है इसकी कीमत कितनी है?

गुलाबी नाइट आउटफिट की कीमत

अनुष्का शर्मा ने अपने बर्थडे के अगले दिन सभी का शुक्रियादा करते हुए एक तस्वीर शेयर की थी। इस तस्वीर में एक्ट्रेस ने एक गुलाबी रंग का पायजामा और शर्ट पहनी हुई थी। एक्ट्रेस के ये नाइट वियर नोर्वे के arket नाम के ब्रांड का है। इस पायजामा की कीमत 5,598 रुपए और शर्ट की कीमत भी 5,598 रुपए है। एक्ट्रेस का ये नाइट वियर करीब 12,000 का है।

कॉटन का वाइट टॉप है हजारों का

इसके अलावा विराट कोहली ने पत्नी अनुष्का को उनके जन्मदिन की बधाई देते हुए एक खूबसूरत तस्वीर शेयर की थी। इस तस्वीर में अनुष्का ने कट स्लीव का कॉटन टॉप और शॉर्ट पैंट पहना हुआ था। एक्ट्रेस ने ये आउटफिट seed heritage नाम के ऑस्ट्रियन ब्रांड से खरीदा है। वेबसाइट के मुताबिक इस टॉप की कीमत 5,431 रुपए और 7,080 रुपए है। अनुष्का का ये सफेद आउटफिट करीब साढ़े 12 हजार का है।

फिल्मों से दूरी

वर्क फ्रंट की बात करें तो अनुष्का शर्मा को आखिरी बार साल 2018 में आई फिल्म जीरो में शाहरुख खान और कैटरीना कैफ के साथ देखा गया था। इसके बाद एक्ट्रेस, महिला क्रिकेटर झूलन गोस्वामी की बायोपिक पर भी काम कर रही थीं। लेकिन फिल्म अभी तक रिलीज नहीं हुई। अनुष्का अब फिल्मों से दूरी बनाकर अपने दोनों बच्चों की परवरिश में बिजी हैं।

20 करोड़ भी नहीं कमा पाई थी सैफ अली खान और गोविंदा की ये फिल्म, बजट का आधा हिस्सा निकालने में छूट गए थे पसीने

गोविंदा ने अपने फिल्मी करियर का आगाज 80 के दशक के बीच में किया था. वहीं 90 के दशक तक गोविंदा सुपरस्टार बन चुके थे. एक से बढ़कर एक फिल्में, शानदार डांस और अपनी दमदार कॉमेडी के चलते गोविंदा ने बड़े पर्दे पर अपनी अमिट छाप छोड़ी. उनके खाते में एक के बाद एक कई शानदार फिल्में आईं. हालांकि उनकी झोली में ढेरों फ्लॉप फिल्में भी गिरी हैं.गोविंदा ने अपने करियर में सफलता का जो शिखर देखा है उसी तरह से उनका करियर ढलान पर भी आया है. उनकी कई फिल्मों के लिए बजट तक निकालना मुश्किल हो गया था. वहीं गोविंदा की फिल्म 'हैप्पी एंडिंग' तो ऐसी रही जो अपने बजट का आधा भी नहीं निकाल पाई थी. इसमें गोविंदा के साथ सैफ अली खान ने भी काम किया था. लेकिन दोनों की पिक्चर बॉक्स ऑफिस पर बुरी तरह पिट गई थी.

57 करोड़ था 'हैप्पी एंडिंग' का बजट

गोविंदा और सैफ अली खान की फिल्म 'हैप्पी एंडिंग' साल 2014 में आई थी. एक दशक पहले आई इस फिल्म से दर्शकों और मेकर्स को काफी उम्मीदें थीं, लेकिन ये फिल्म उम्मीदों पर खरी नहीं उतर पाई. गोविंदा और सैफ के साथ फिल्म का हिस्सा इलियाना डिक्रूज, रणवीर शौरी और कल्कि कोचलिन जैसे सितारें भी थे. मेकर्स ने इस मल्टीस्टारर फिल्म पर 57 करोड़ रुपये खर्च किए थे.

20 करोड़ भी नहीं हुई कमाई

गोविंदा और सैफ की इस फिल्म का बॉक्स ऑफिस पर बहुत बुरा हाल हुआ था. अपने नाम के मुताबिक फिल्म की एंडिंग हैप्पी नहीं हो पाई थी और न ही इसकी ओपनिंग हैप्पी रही. 11 साल पुरानी इस फिल्म ने भारत में 20 करोड़ रुपये से भी कम का कलेक्शन किया था. इसका लाइफटाइम कलेक्शन सिर्फ 19.44 करोड़ रुपये दर्ज किया गया था और ये पिक्चर बॉक्स ऑफिस पर डिजास्टर साबित हो गई.

सैफ का वर्कफ्रंट

गोविंदा लंबे समय से फिल्मी दुनिया से दूर है. वहीं सैफ अली खान के वर्कफ्रंट की बात करें तो उनकी फिल्म 'ज्वेल थीफ- द हीस्ट बिगिन्स' हाल ही में नेटफ्लिक्स पर रिलीज हुई है. इसी बीच सैफ की नई फिल्म को लेकर खबर आ गई है. अभिनेता अब 2016 की मलयालम हिट 'ओप्पम' के हिंदी रीमेक में नजर आएंगे. फिल्म इस साल के आखिरी तक फ्लोर पर आएगी.

जब 400 लड़कियों के बीच में से सिर्फ आलिया भट्ट को चुना गया, कम उम्र में ही कर दिया था ये कमाल

आलिया भट्ट ने कम वक्त में बड़ा और खास नाम कमा लिया है. दिग्गज डायरेक्टर महेश भट्ट के घर में जन्मीं आलिया भट्ट को शुरू से ही घर में फिल्मी माहौल मिला था. बड़ी होने पर उन्होंने फिल्मी दुनिया की राह चुनी और आज वो हिंदी सिनेमा की सबसे चर्चित और कामयाब एक्ट्रेसेस में एक हैं.वैसे आपको बता दें कि आलिया भट्ट बॉलीवुड में बतौर चाइल्ड आर्टिस्ट भी काम कर चुकीं हैं. उन्हें बचपन में अक्षय कुमार और प्रीति जिंटा की एक फिल्म में देखा गया था. वहीं आपको ये जानकर भी हैरानी होगी कि अपनी डेब्यू फिल्म के लिए एक्ट्रेस का सेलेक्शन 400 लड़कियों में से हुआ था.

अक्षय-प्रीति की इस फिल्म में चाइल्ड आर्टिस्ट थीं आलिया

आलिया का जन्म महेश भट्ट और एक्ट्रेस सोनी राजदान के घर 15 मार्च 1993 को मुंबई में हुआ था. पिता के जाने-माने डायरेक्टर होने के चलते आलिया को अक्षय कुमार और प्रीति जिंटा की साल 1999 में आई फिल्म 'संघर्ष' काम करने का मौका मिला था. इसमें उन्होंने प्रीति के बचपन का किरदार निभाया था, तब वो महज 6 साल की थीं.

डेब्यू फिल्म के लिए 400 लड़कियों में से हुआ सेलेक्शन

आलिया भट्ट ने हिंदी सिनेमा में बतौर लीड एक्ट्रेस अपने कदम 'स्टूडेंट ऑफ द ईयर' से रखे थे. साल 2012 में आई इस फिल्म में आलिया ने शनाया सिंघानिया का किरदार निभाया था. लेकिन इस रोल के लिए एक्ट्रेस का चयन 400 लड़कियों में से हुआ था. करण जौहर की इस पिक्चर के लिए 400 लड़कियों ने ऑडिशन दिया था. एक इंटरव्यू में खुद करण ने खुलासा किया था कि उन्होंने मुंबई और बाहर के शहरों की करीब 400 लड़कियों का स्क्रीन टेस्ट लिया था.

आलिया भट्ट की बेहतरीन फिल्में

आलिया भट्ट अपने करीब 13 साल के करियर में खूब शोहरत हासिल कर चुकी हैं. उन्हें इस जनरेशन की सबसे बड़ी स्टार में से एक माना जाता है. उनकी डेब्यू फिल्म 'स्टूडेंट ऑफ द ईयर' हिट साबित हुई थी. एक दशक से ज्यादा के करियर में वो 'राजी', 'गंगूबाई काठियावाड़ी', 'ब्रह्मास्त्र- पार्ट वन', 'गली बॉय, 'रॉकी और रानी की प्रेम कहानी', 'आरआरआर', 'बद्रीनाथ की दुल्हनिया', 'डियर जिंदगी', '2 स्टेट्स' और 'हम्प्टी शर्मा की दुल्हनिया' जैसी शानदार फिल्में

एकता कपूर

की फिल्म के लिए श्रद्धा कपूर ने डबल की अपनी फीस? जानें कितने करोड़ लेंगी अब

श्रद्धा कपूर बॉलीवुड की टॉप एक्ट्रेसेस में से एक हैं। अब तक वह कई हिट फिल्में दे चुकी हैं। सोशल मीडिया पर भी श्रद्धा की तगड़ी फैन फॉलोइंग है। उनकी पिछली फिल्म स्त्री-2 बड़ी हिट गई थी, जिसके बाद अब उन्होंने अपनी फीस डबल कर ली है। श्रद्धा से पहले फिल्म के एक्टर रहे राजकुमार राव ने भी अपनी फीस बढ़ाकर पांच करोड़ कर दी थी।

कितनी बताई जा रही फीस

बॉलीवुड हंगामा के सूत्रों के अनुसार, अब श्रद्धा कपूर फीस को डबल करते हुए एकता कपूर के साथ अगले प्रोजेक्ट के लिए 17 करोड़ रुपये चार्ज कर रही हैं। श्रद्धा और एकता कपूर के बीच में काफी समय से हाई कॉन्सेप्ट थ्रिलर फिल्म को लेकर बातचीत चल रही थी। इसे अनिल बर्वे डायरेक्ट करने वाले हैं और यह फिल्म 2025 के दूसरे क्वार्टर में फ्लोर पर आ सकती है। इसके लिए एक्ट्रेस को 17 करोड़ रुपये दिए जा रहे हैं।

सबसे ज्यादा फीस

सोर्स ने बताया, यह श्रद्धा कपूर को मिली अब तक की सबसे ज्यादा फीस होगी। इतना ही नहीं, आज के समय इंडस्ट्री में किसी भी एक्ट्रेस को मिलने वाली ज्यादा अधिक फीस में से यह एक है। सिर्फ फीस ही नहीं, बल्कि एक्ट्रेस ने कॉन्ट्रैक्ट में प्रॉफिट शेयरिंग क्लॉज पर भी साइन किया है। अगर फिल्म अच्छी चलती है तो उन्हें प्रॉफिट का एक तय हिस्सा भी दिया जाएगा।

पिछले साल आई श्रद्धा की स्त्री-2 ने बड़े पर्दे पर अच्छी कमाई की थी। वर्ल्डवाइड फिल्म ने 874 करोड़ से अधिक कमाए थे। इसमें श्रद्धा के अलावा तमन्ना भाटिया, राजकुमार राव, वरुण धवन, पंकज त्रिपाठी जैसे एक्टर्स शामिल थे। यह एक कॉमेडी हॉरर फिल्म थी, जिसे अमर कौशिक ने डायरेक्ट किया था।